54वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार

54th National Film Awards

2006

संपादन
भूपेन्द्र कैन्थोला
Editor
Bhupendra Kainthola

समन्वय
मन्जु खन्ना
Coordination
Manju Khanna

सहयोग
कौशल्या मेहरा
Assistance
Kaushalya Mehra

प्रोडकशन
एस. राय
वी. के. मीणा
ए. के. गुलाटी
विलास पगारे

Production
S. Roy
V. K. Meena
A.K. Gulati
Vilas Pagare

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित तथा अरावली प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
Produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals. Printed at Aravali Printers & Publishers (P) Ltd, New Delhi-110020

No. : 2/5/2008 PP-III

1600 Copies

September 2008

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मंडल		JURY MEMBERS
दादासाहेब फाल्के पुरस्कार	3	**ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD**
दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता–2006	4	Dadasaheb Phalke Award Winner - 2006
पिछले वर्षों के दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता	6	Dadasaheb Phalke Award - Past Recipients
कथाचित्र पुरस्कार		**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	8	Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	10	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
स्वस्थ् मनोरजंन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म	12	Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	14	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	16	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुददों पर सर्वोत्तम फिल्म	18	Best Film on other Social Issues
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	20	Best Animation Film
सर्वोत्तम बाल फिल्म	22	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	24	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	26	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	28	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	30	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	32	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	34	Best Child Artist
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	36	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	38	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	40	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	42	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	44	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	46	Best Editing

सर्वोत्तम कला निर्देशन	48	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेषभूषा	50	Best Costume Designer
सर्वोत्तम मेकअप कलाकार	52	Best Make-up Artist
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	54	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	56	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	58	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	60	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	62	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म	64	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म	66	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म	68	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म	70	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म	72	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म	74	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म	76	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म	78	Best Feature Film in Punjabi
सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म	80	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु फीचर फिल्म	82	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म	84	Best Feature Film in English
सर्वोत्तम कोंकणी फीचर फिल्म	86	Best Feature Film in Konkani
सर्वोत्तम तुलु फीचर फिल्म	88	Best Feature Film in Tulu
विशेष उल्लेख	90	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	92	Awards Not Given

गैर कथाचित्र पुरस्कार

AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र	94	Best Non-Feature film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र	96	Best First Non-feature Film of a Director
सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण संकलन फिल्म	98	Best Biographical/Historical Recons./Compilation Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	100	Best Arts/Cultural Film

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म / पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण फिल्म	102	Best Scientific Film/Environment Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म	104	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि फिल्म	106	Best Agricultural Film
सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म	108	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म	110	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	112	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	114	Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	116	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	118	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम निर्देशन	120	Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	122	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	124	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	126	Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	128	Best Music Direction
सर्वोत्तम प्रकथन / वॉएस ओवर	130	Best Narration/Voice Over
विशेष उल्लेख	132	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	134	Awards Not Given

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार — AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	136	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	138	Best Film Critic
विशेष उल्लेख	140	Special Mention

सारांश : कथाचित्र — SYNOPSES-FEATURE FILMS

एडयू	144	Aideu
अंतर्नाद	145	Antarnad
अनुरनन	146	Anuranan
केअर आफ फुटपाथ	147	C/o Footpath

दोसर	148	Dosar
दृ-टांतम	149	Drishtantham
एकांतम	150	Eakantham
फालतू	151	Faltu
होप	152	Hope
काडा बेलाडिन्गालू	153	Kaada Beladingalu
काबुल एक्सप्रेस	154	Kabul Express
कल्लार्ली हुवागी	155	Kallarali Huvagi
कमली	156	Kamli
करुत्त पक्षिकल	157	Karutha Pakshikal
खोसला का घोंसला	158	Khosla Ka Ghosla
किट्टू	159	Kittu
कोट्टि चेन्नैया	160	Kotti Chennaya
कृश	161	Krrish
लगे रहो मुन्ना भाई	162	Lage Raho Munnabhai
ओंकारा	163	Omkara
पारुत्ती वीरन	164	Paruthi Veeran
पोदोक्खेप	165	Podokkhep
पूजा पाईं फुलतिए	166	Pooja Paeen Phooltie
पुलिजन्मम	167	Pulijanmam
क्वेस्ट	168	Quest
रात्रि मड़ा	169	Ratri Mazha
शेवरी	170	Shevri
ट्रैफिक सिग्नल	171	Traffic Signal
वैयिल	172	Veyil
वारिस शाह - इश्क दा वारिस	173	Waris Shah Ishq da Waris
यात्रा	174	Yatra

सारांश गैर कथाचित्र

SYNOPSES—NON-FEATURE FILMS

अन्धियुम	176	Andhiyum
बिशर ब्लूज	177	Bishar Blues
चिल्ड्रेन ऑफ नोमैड्स	178	Children of Nomads
एक आदेश - ए कमांड फॉर छोटी	179	Ek Adesh – a Command for Chhoti
फिलेरियासिस	180	Filariasis
गुरुमायुम लामायुम थांबालगौबी देवी	181	Gurumayum Lamayum Thambalgoubi Devi
जात्रा जीवन- जीवन यात्रा	182	Jatra Jeevan Jeevan Yatra
जैविक खेती	183	Javik Kheti
कल्पवृक्ष	184	Kalpavriksha
लामा डांसेस ऑफ सिक्किम	185	Lama Dances of Sikkim
मेरे देश की धरती	186	Mere Desh Ki Dharti
मिनुक्कू	187	Minukku
नोकपोकलीबा	188	Nokpokliba
राग ऑफ द रिवर नर्मदा	189	Raga of the River Narmada
रॉनदेवू विद टाइम	190	Rendezvous With Time
स्पेशल चिल्ड्रेन	191	Special Children

निर्णायक मंडल Jury Members

कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR FEATURE FILMS

बुद्धदेब दासगुप्ता (अध्यक्ष)
Buddhadeb Dasgupta (Chairman)

राहुल ढोलकिया
Rahul Dholakia

पी. शेषाद्रि
P. Sheshadri

रत्नोत्तम्मा सेनगुप्ता
Ms. Ratnottama Sengupta

शेखर दास
Shekhar Das

बिद्युत चक्रवर्ती
Bidyut Chakrabarty

शिव शंकरी
Siva Shankari

शारदा रामनाथन
Sharada Ramanathan

हरि कुमार
Hari Kumar

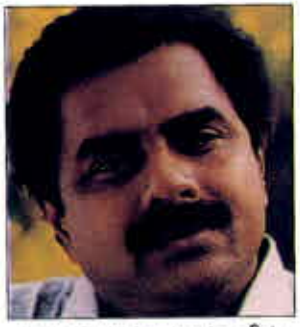

एन. कृष्ण कुमार (उन्नी)
N. Krishna Kumar (Unni)

हिमांशु खटुआ
Himanshu Khatua

मीनाक्षी शेड्डे
Meenakshi Shedde

शरद दत्त
Sharad Dutt

अशोक राणे
Ashok Rane

निर्णायक मंडल : सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन

JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

रश्मि दोराइस्वामी
Rashmi Doraiswamy

मधु जैन (अध्यक्ष)
Madhu Jain (Chairperson)

वसिराजु प्रकासम
Vasiraju Prakasam

गैर–कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

के. विक्रम सिंह (अध्यक्ष)
K. Bikram Singh (Chairman)

अरविंद सिन्हा
Arvind Sinha

अपूर्वा सरमा
Apurba Sarma

बियोत प्रज्ञा त्रिपाठी
Biyot Projna Tripathi

सतीश वेंगनूर
Satish Venganoor

इफ़्तिकार अहमद
Iftekhar Ahmed

दादासाहेब फाल्के पुरस्कार

Dadasaheb Phalke Award

ढुंढीराज गोविन्द फाल्के (बायें)
Dhundiraj Govind Phalke (Left)

ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD

The prestigious and top most award of Indian cinema is named after the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke. He is credited with making the first ever Indian feature film in 1913. Beginning with *Raja Harishchandra*, Dadasaheb Phalke, as he was popularly called, went on to make 95 movies and 26 short films in a span of 19 years until 1932.

To honour this enterprising film personality, the Dadasaheb Phalke award was introduced in 1969. The award recognizes the contribution of film personalities to the development of Indian cinema. The first award was presented to the renowned actress and pioneer of studio system in India, Devika Rani.

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

भारतीय सिनेमा का सर्वोत्तम पुरस्कार भारत में सिनेमा के जनक माने जाने वाले ढुंढीराज गोविन्द फाल्के के नाम से सुशोभित है।

'राजा हरीश्चन्द्र' से फिल्मी जीवन का प्रारंभ करने वाले दादा साहेब फाल्के ने 1932 तक, 19 वर्षों में 95 फिल्में तथा 26 लघु फिल्में बनाई।

दादा साहेब फाल्के के सम्मानार्थ यह नामित पुरस्कार सन् 1969 में पहली बार प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा स्टूडियो तंत्र की प्रतिपादक देविका रानी को प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारतीय सिनेमा के उत्पादन और विकास के लिए आजीवन काम करने वाले व्यक्ति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 2006

तपन सिन्हा

एक किशोर की उन्मुक्त भावनाएं उसे घर से दूर नौकायन के लिए प्रेरित करती हैं और फिर विवाह, प्यार.... *(अतिथि)* जेल से छूटने के बाद *काबुलीवाला* को इस बात का एहसास होता है कि दूरस्थ देश में रह रही उसकी छोटी बच्ची अब सयानी हो गयी होगी। एक बेचारा मजदूर चाय बागानों के मालिकों और राजनीतिक ग्रुपों के बीच किस तरह मोहरा बनकर रह जाता है *(सगीना महतो)*। एक अदालत बलात्कार की शिकार महिला को अपनी बेगुनाही का सबूत देने को कहती है *(अदालत ओ एकती मेये)*। एक दूसरे की देखभाल की जरुरत किस तरह कुछ आवारा लड़कों को एक विधवा के करीब ले आते हैं *(अपोनजन)* चिकित्सीय निदान के लिए एक डाक्टर की जी तोड़ कोशिश किस तरह ब्रेन ड्रेन पर आकर खत्म होती है *(एक डाक्टर की मौत)*.... और इस तरह तपन सिन्हा की पचास वर्षों की अवधि में बनायी गयी 30 से अधिक यादगार फिल्मों में एक के बाद एक आनंद लिया जा सकता है।

2 अक्टूबर 1924 को जन्में तपन सिन्हा बंगला मुख्यधारा सिनेमा के जाने माने फिल्म निर्देशक हैं। उन्होंने फिल्मी फार्मूलों से बराबर की दूरी बनाये रखी और उन्होंने ऐसी फिल्में बनायी जो युवा फिल्म निर्माताओं के लिए प्रेरक साबित हुईं। इतना ही नहीं उनकी फिल्मों से कई जाने माने अभिनेता उभर कर सामने आये। अभिनेताओं से काम कराने का उनका अपना एक तरीका है और उसी ने सौमित्र चटर्जी जैसे अभिनेता को एक स्टार कलाकार बना दिया और इसी के चलते दिलीप कुमार जैसे अभिनेता *सगीना महतो* एक मजदूर की भूमिका निभा सके। उन्होंने *हाटे बाजारे* में वैजंतीमाला से छिपली का अभिनय करवाया जिसमें वह अपनी दबी भावनाओं को संकेत मात्र से ही व्यक्त करती है, पर उसकी जीवंतता में कहीं कमी नहीं आती।

तपन सिन्हा साहित्य को सिनेमा में बदलने वाले सर्वोतम निर्देशक हैं। उन्होंने न केवल टैगोर अपितु दूसरे लेखकों के साहित्य का भी विशद अध्ययन किया है। जानफोर्ड और बिली वाइल्डर से काम शुरु करने वाले सिन्हा ने लंदन स्थित पाइनवुड स्टूडियो में चार्ल्स क्रिष्टन के अधीन कार्य किया और बाद में न्यू थियेटर में बतौर साउंड इंजीनियर कार्य करने लगे।

वर्ष 2006 का दादा साहेब फाल्के पुरस्कार एक ऐसे व्यक्ति को दिया जा रहा है जिसका साहित्यिक पुट वाला बंगला सिनेमा दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करता रहा है।

DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER, 2006

TAPAN SINHA

The free spirit of a teenaged boy leads him to a boat sailing away from his home, matrimony, love...*(Atithi)*. The *Kabuliwala* released from jail realises his little girl too has grown up in his distant land. A simple labourer comes alive to power play between teagarden owners and political groups *(Sagina Mahato)*. A court of justice calls upon a rape victim to prove her innocence *(Aadalat O Ekti Meye)*. The mutual need for care brings a bunch of wayward youths close to an abondoned widow *(Aponjan)*. A doctor's poignant fight for a medical breakthrough ends in the trauma of brain drain *(Ek Doctor Ki Maut)*. One could go on and on, for, Tapan Sinha's ouevre, made up of 30 classics spread over half a century and toasted in Venice, Berlin and Moscow is as remarkable for his signature treatment as for its diverse content.

Born on October 2, 1924, is the most uncompromising mainstream director of Bengal. Equidistant from officialdom and the market friendly formulas, he quietly went about creating films that have inspired generations of younger filmmakers and moulded iconic actors.

He has a way with actors, that turned Soumitra Chatterjee into a star, and the iconic Dilip Kumar into the labourer Sagina. The aplomb showed when he cast Vyajayanthimala as the folksy Chhipli in *Haatey Bazarey*, coaxing her to underplay subtle emotions but never curtailing her spontaneity. Among the nation's best directors for the acumen in translating literature onto celluloid, he read extensively, not just Tagore or classics, and spotted talents in writers when they were still young.

Raised on a staple of John Ford and Billy Wilder, Sinha had worked under Charles Cryton in Pinewood Sudios at London and joined New Theatres as a sound engineer. Hard hitting social comments, children's films, comedies, adventures - a range of flavours can be sampled through Sinha's ouevre. If *Aadmi Aur Aurat* took viewers on an austere journey to underscore communal amity, marital discord was seldom so agreeable as in *Jatugriha*, *Sabuj Dwiper Raja*, *Safed Haathi*, *Harmonium*, *Banchharamer Bagan* - environment, tribal reality, mystery, satire: through them all Sinha has celebrated an individual's relentless fight against adverse circumstances. Sometimes he wins, sometimes not. Still, the miracle worked through the protagonist's inner strength has always been a rewarding experience.

The **Dadasaheb Phalke Award** for **2006** celebrates the man whose archetypal Bengali drama, tinged with a literary flavour, entertain even as it leaves the screen aglow with human warmth.

Dadasaheb Phalke Award - Past Recipients

SR. NO.	YEAR	AWARDEE
1.	1969	Devika Rani Roerich
2.	1970	B.N. Sircar
3.	1971	Prithviraj Kapoor
4.	1972	Pankaj Mullick
5.	1973	Sulochana (Ruby Myers)
6.	1974	B. N. Reddy
7.	1975	Dhiren Ganguly
8.	1976	Kanan Devi
9.	1977	Nitin Bose
10.	1978	R. C. Boral
11.	1979	Sohrab Modi
12.	1980	P. Jairaj
13.	1981	Naushad Ali
14.	1982	L.V. Prasad
15.	1983	Durga Khote
16.	1984	Satyajit Ray
17.	1985	V. Shantaram
18.	1986	B. Nagi Reddy
19.	1987	Raj Kapoor
20.	1988	Ashok Kumar
21.	1989	Lata Mangeshkar
22.	1990	Akkineni Nageshwara Rao
23.	1991	Balachandra Govind Pendharakar
24.	1992	Dr. Bhupen Hazarika
25.	1993	Majrooh Sultanpuri
26.	1994	Dilip Kumar
27.	1995	Dr. Rajkumar
28.	1996	Shivaji Ganesan
29.	1997	Kavi Pradeep
30.	1998	B. R. Chopra
31.	1999	Hrushikesh Mukherjee
32.	2000	Asha Bhosle
33.	2001	Yash Chopra
34.	2002	Dev Anand
35.	2003	Mrinal Sen
36.	2004	Adoor Gopalakrishnan
37.	2005	Shyam Benegal

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम फीचर फिल्म

पुलिजन्मम् (मलयालम)

निर्माता **एम.जी. विजय** को स्वर्णकमल एवं रु. 2,50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **प्रियनंदनन** को स्वर्णकमल एवं रु. 2,50,000/- का नकद पुरस्कार।

पशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम फीचर फिल्म पुरस्कार पुलिजन्मम् (**मलयालम**) को दिया जाता है। यह एक ऐसी फिल्म है जिसमें मौजूदा समाज के वैश्विक और स्थानीय मुद्दों के समाधान के लिए रूपकालंकारों का प्रयोग किया गया है।

BEST FEATURE FILM

PULIJANMAM (Malayalam)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 2,50,000/- to PRODUCER **M.G. VIJAY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 2,50,000/- to DIRECTOR **PRIYANANDANAN**

CITATION

The Award for the Best Feature Film of 2006 is given to **Pulijanmam (Malayalam)**, a layered film that uses metaphors to address global and local issues of contemporary society.

एम.जी. विजय

एम.जी. विजय ने अपने जीवन की शुरुआत एक थियेटर कार्यकर्त्ता के रूप में की थी। 1982 में उन्होंने एक हिन्दी फिल्म *और हम मजबूर* से में अभिनय किया । वह इस फिल्म के सह निर्माता भी थे । अपने जीवन के शुरुआती दिनों में वह कई सामाजिक, सांस्कृतिक आंदोलनों से भी जुड़े रहे हैं । उनकी सऊदी अरब में **अल-मुल्ताख** नाम की एक कंपनी भी है ।

M.G. VIJAY

M.G. Vijay began his career as a theatre activist. In 1982 he acted and co-produced a Hindi film *Our Ham Majboor Se*. During his earlier days he participated in many socio-cultural movements. He also owned a company in Saudi Arabia, named Al-Muthlakh Engineering.

प्रियनंदनन

केरल के त्रिचूर जिला वल्लाचिरा गांव से आने वाले प्रियनंदनन बचपन से ही अभिनय करते रहे हैं और ग्रामीण थियेटर प्रोडक्शंस में शामिल रहे हैं । एक अभिनेता के रूप में उन्हें काफी सराहा गया है और उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । थियेटर के अलावा उन्होंने केरल के जाने-माने फिल्म निर्देशकों के साथ बतौर सह निर्देशक कार्य किया है ।

उनके द्वारा निर्देशित पहली फिल्म *नेयतुकरण* थी जिसे 12 पुरस्कार प्राप्त हुए थे । राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता *पुलिजन्मम्* उनकी दूसरी फिल्म है ।

PRIYANANDANAN

Hailing from Vallachira village of Kerala's Trichur district, Priyanandanan was fond of acting as a boy and was part of the rural theatre productions. As an actor he won awards and accolades. Along with theatre, he worked as an assistant director with distinguished directors of Kerala.

Neythukaran, the first feature film directed by him, won 12 awards including a National Award. *Pulijanmam* is his second film.

निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार

एकांतम् (मलयालम) और काबुल एक्सप्रेस (हिन्दी)

एकांतम् के लिए निर्माता **एंथनी जोसेफ** तथा **काबुल एक्सप्रेस** के लिए निर्माता **आदित्य चोपड़ा**, प्रत्येक को स्वर्ण कमल तथा रु. 62,500/- का नकद पुरस्कार।

एकांतम् के निर्देशक **मधु कैथाप्रम** तथा **काबुल एक्सप्रेस** के निर्देशक **कबीर खान**, प्रत्येक को स्वर्ण कमल तथा रु. 62,500/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार संयुक्त रूप से दो फिल्मों को दिया जाता है:

(क) **एकांतम्**- इसमें बुढ़ापे की ओर बढ़ रहे उन दो भाइयों के एकाकीपन को बड़े मार्मिक ढंग से दर्शाया गया है जिनका अपना कहने को कोई नहीं रहा; तथा

(ख) **काबुल एक्सप्रेस** - इसमें 11 सितम्बर की घटना के बाद अफगानिस्तान में तालिबानी शासन के अंत को, भ्रमण पर निकले दो भारतीय पत्रकारों के माध्यम से चित्रित किया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

EAKANTHAM (Malayalam) AND KABUL EXPRESS (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 62,500/- each to PRODUCERS **ANTHONY JOSEPH** for **EAKANTHAM** and **ADITYA CHOPRA** for **KABUL EXPRESS**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.62,500/- each to DIRECTORS **MADHU KAITHAPURAM** for **EAKANTHAM** and **KABIR KHAN** for **KABUL EXPRESS**

CITATION

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2006 is jointly given to

a) **Eakantham** which sensitively portrays the solitude of two ageing brothers who have lost everyone around them.

b) **Kabul Express** for capturing, through the journey of two Indian journalists, the collapse of Taliban in post 9/11 Afghanistan.

आदित्य चोपड़ा

यश चोपड़ा के सबसे बड़े बेटे आदित्य चोपड़ा भारत में युवा पीढ़ी के फिल्म निर्माताओं के अगुवा रहे हैं। मात्र 23 वर्ष की उम्र में *दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे* जैसी सुपरहिट फिल्म बनाई। चार साल पहले उन्होंने *हम-तुम* और *धूम* जैसी लोकप्रिय फिल्मों का निर्माण कर अपनी दक्षता का लोहा मनवाया है।

कबीर खान

कबीर खान फिल्मों के कारण अब तक 50 से भी अधिक देशों की यात्रा कर चुके हैं। उन्होंने डिस्कवरी चैनल के लिए 'डिस्कवर इंडिया' नामक एक सीरीज भी तैयार की है। भारत के सबसे बड़े स्टूडियो यशराज फिल्म्स के बैनर तले बनी उनकी हाल की फिल्म *काबुल एक्सप्रेस* को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

एंटनी जोसेफ पाइमपल्लिल

एंटनी जोसेफ पाइमपल्लिल किशोरावस्था से ही आर्ट और मीडिया में रुचि रखते थे। उनके परिवार ने उनकी इस अभिरुचि में उनका साथ दिया और उनकी प्रतिभा को और अधिक निखारा। उन्होंने मीडिया जगत में अपने जीवन की शुरुआत एक विज्ञापन कंपनी-रूबेन्स मीडिया इंटरनेशनल की स्थापना कर की। बाद में उन्होंने इसे एक प्रोडक्शन कंपनी में तब्दील कर दिया। *एकांतम* इनकी पहली फिल्म है और इसकी वितरक इन्हीं की कोझिकोड स्थित रूबेन्स रिलीज कंपनी है।

मधु कैथाप्रम

मधु कैथाप्रम एक मंजे हुए फिल्म निर्देशक हैं। इन्होंने अब तक कई मलयाली फिल्मों में बतौर सहायक और सह-निर्देशक काम किया है। इनमें से कुछ प्रमुख हैं - *कलियट्टम, थालोलम, गार्ड, कन्नागी, शांतम* और *सफलम*।

ADITYA CHOPRA

Yash Chopra's eldest son, Aditya Chopra, has been the torchbearer of the young generation of filmmakers of India. His redoubtable flair reflected in *Dilwale Dulhaniya Le Jayenge* that he made at just 23.The film was one of the biggest box office hits in the Indian film history. Four years ago, Chopra donned the mantle of producer and created *Hum Tum* and *Dhoom*, both of which achieved critical and commercial success.

KABIR KHAN

His film assignments have taken him to over 50 countries. Starting with what was largely thought to be a mad idea—filming in war-torn Afghanistan— to being backed by India's largest studio, Yashraj films, before finally getting the coveted National Award for *Kabul Express* has been a remarkable journey for this 38-year-old director.

ANTONY JOSEPH

Antony Joseph Paimpallil was intrested in art and media from the very beginning of his high school life. His family supported him in the development of his talents positively. He started his carrier in media world through his advertising company called Rubens Media International and gradually developed it into a producing company. *Eakantham* was his first film and this film is distributed by his own distributing company.

MADHU KAITHAPRAM

As assistant director, Madhu Kaithapram has the following to his credit. *Kaliyattom, Thalolam, Guard, Kannagi, As Associate Director Shantham* and *Saphalam*. Many of these films are directed by notable director Jayaraj.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म

लगे रहो मुन्नाभाई (हिन्दी)

निर्माता **विधु विनोद चोपड़ा** को स्वर्णकमल तथा रु. 2,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजकुमार हिरानी** को स्वर्णकमल तथा रु. 2,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार **लगे रहो मुन्नाभाई** (हिन्दी) को दिया जाता है। इस फिल्म में संघर्षों से जूझ रही दुनिया में अहिंसा के दर्शन को एक बार फिर से प्रासंगिकता प्रदान करते हुए आम आदमी में गांधी को पाने की कोशिश की गई है।

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

LAGE RAHO MUNNA BHAI (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 2,00,000/- to PRODUCER **VIDHU VINOD CHOPRA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 2,00,000/- to DIRECTOR **RAJ KUMAR HIRANI**

CITATION

The Award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 2006 is given to the film **Lage Raho Munna Bhai (Hindi)** for revalidating the philosophy of non-violence in a strife-torn world and helping rediscover the Gandhi within the common man.

विधु विनोद चोपड़ा

कोई तीन दशक पहले उनकी एक लघु फिल्म - *'ऐन एनकाउन्टर विद फेसेस'* आस्कर के लिए नामित की गयी थी । तब से अब तक उन्होंने कई लोकप्रिय और सराहनीय फिल्में जैसे - *परिंदा, 1942 ए लव स्टोरी* तथा *मुन्ना भाई* और इसके बाद *लगे रहो मुन्ना भाई* बनाई है । अपनी सुपरहिट फिल्मों के कारण आज यह युवा फिल्म निर्माता अंतराष्ट्रीय स्तर पर फिल्म उद्योग की एक हस्ती के रूप में जाना जाता है । विधु विनोद चोपड़ा विनोद चोपड़ा प्रोडक्शंस के प्रमुख हैं ।

VIDHU VINOD CHOPRA

His film, *An Encounter with Faces* was nominated for an Oscar in the short,non-fiction film category three decades ago. Since then, Chopra has been involved with a number of critically acclaimed films like *Parinda, 1942: A Love Story* and the Munna Bhai series. *Lage Raho Munna Bhai* has made this young filmmaker an international celebrity along with the rest of the film's team. He is also the head of Vinod Chopra Productions.

राजकुमार हिरानी

राजकुमार हिरानी को मुन्नाभाई सीरीज के सृजक के रूप में जाना जाता है। वह बालीवुड फिल्मों के लेखक, निर्देशक और निर्माता सबकुछ हैं । महाराष्ट्र के पुणे स्थित मशहूर भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के छात्र रहे हिरानी ने मुंबई में एक संपादक के रूप में अपने जीवन की शुरूआत की और धीरे-धीरे उन्होंने विज्ञापन फिल्मों के निर्देशक और निर्माता के रूप में अपनी पहचान बना ली । *लगे रहो मुन्नाभाई* का प्रदर्शन फिल्म की सफलता की कहानी अपने आप कहता है । श्री हिरानी आस्टिन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास से फाइन आर्ट में परास्नातक हैं ।

RAJ KUMAR HIRANI

He is best known as the creator of the Munna Bhai series. He is a writer, director and producer of Bollywood movies.An alumni of the prestigious Film and Television Institute of India in Pune, Maharashtra, Hirani began his career in Mumbai as an editor and gradually established himself as a director and producer of advertising films. *Lage Raho Munnabhai's* screenplay is central to the film's success.He received his Master's in Fine Arts from the University of Texas, Austin.

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार

कल्लार्ली हुवागी (कन्नड़)

निर्माता **एस. मधु बंगरप्पा** को रजत कमल तथा रु. 1,50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **टी.एस. नागभरण** को रजत कमल तथा रु. 1,50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम फीचर फिल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार **कल्लार्ली हुवागी** को दिया जाता है। इस फिल्म में हैदर अली के ज़माने की एक प्रेम कहानी के माध्यम से अपनी जमीन और दोस्ती के प्रति वफादारी का चित्रण किया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

KALLARLI HUVAGI (Kannada)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,50,000/- to PRODUCER **S. MADHU BANGARAPPA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,50,000/- to DIRECTOR **T.S. NAGABHARNA**

CITATION

The Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration of 2006 is given to the film **Kallarli Huvagi** for depicting the sanctity of loyalty to one's land and amity through a love story set in the times of Hyder Ali.

मधु बंगरप्पा

कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एस. बंगारप्पा के पुत्र मधु बंगारप्पा बंगलौर स्थित आकाश आडियो रिकॉर्डिंग स्टूडियो के मालिक हैं। इस स्टूडियों में अद्यतन डीटीएस आर्ट मिक्सिंग थियेटर की सुविधा उपलब्ध है। मधु बंगारप्पा ने उपन्यासकार बी.एल. वेणु के उपन्यास कल्लारली हूवागी पर आधारित इस इतिहास फिल्म का निर्माण किया है।

MADHU BANGARAPPA

He is the son of former chief minister of Karantaka, S.Bangarappa and proprietor of the Bangalore-based Akash Audio Recording, the studio that has state of the art DTS Mixing theatre.Madhu Bangarappa's award winning period Kannada film *Kallarali Hoovagi* is based on a novel written by B.L.Venu.

टी.एस. नागाभरण

अपने तीन दशक के फिल्मी जीवन में तीन बार राष्ट्रीय एकता पुरस्कार प्राप्त कर इस फिल्म निर्देशक ने इतिहास रच दिया है। पहला पुरस्कार उन्हें 29 वर्ष पूर्व मिला था। उसके बाद 1990 के दशक में उन्हें दूसरा राष्ट्रीय एकता पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें अब तक विभिन्न श्रेणियों में कुल आठ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इससे उनकी बहुमुखी प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है। पचास व-ीय श्री नागभरण का लगाव इस कला के प्रति अब भी वैसा ही है जैसा तीन दशक पहले था। वह अब भी ऐसी फिल्में बनाने की ख्वाहिश रखते हैं जो पूर्व में उनके द्वारा बनायी फिल्मों से कहीं अधिक विविधतापूर्ण, सार्थक और रुचिकर हों। उनकी फिल्मों में उनके राज्य कर्नाटक की सांस्कृतिक विशिष्टता स्पष्ट दिखाई देती है।

T S NAGABHARANA

The director has made history by winning the National Integration award for the third time in a three-decade-long career. The first was 29 years ago, the next came in 1990 and he has won a total of eight national awards in different categories, proving his versatility. At 50, Nagabharana is as animated about the arts as he perhaps was three decades ago, raring to make films whose depth, variety, and reach will far supersede the ones he has made so far.His work is steeped in the cultural ethos of his home province, Karnataka.

परिवार कल्याण पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म

करुत पक्षीकल (मलयालम) तथा फालतू (बंगला)

निर्माता **जी.वी. प्रोडक्शंस (करुत पक्षीकल)** तथा **अरिंदम चौधरी (फालतू)** दोनों में से प्रत्येक को रजत कमल तथा रु. 75,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **कमल (करुत पक्षीकल)** तथा **अंजन दास (फालतू)** प्रत्येक को रजत कमल तथा रु. 75,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का परिवार कल्याण पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार संयुक्त रूप से निम्नलिखित दो फिल्मों को दिया जाता है:-

(क) **करुत पक्षीकल** - इसमें शहर की मलिन बस्ती में रहने वाले एक ऐसे व्यक्ति के जीवन को आधार बनाकर पारिवारिक मूल्यों को परिभाषित किया गया है जो कपड़ों पर प्रेस करके अपनी रोजी-रोटी कमाता है।

(ख) **फालतू** - इसमें अवैध संतान के कारण पेश मुसीबतों की पृष्ठभूमि में परिवार की जरूरत को दर्शाया गया है।

BEST FILM ON FAMILY WELFARE

KARUTHA PAKSHIKAL (MALAYALAM) AND FALTU (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 75,000/- each to PRODUCERS **G.V. PRODUCTIONS (KARUTHA PAKSHIKAL - Malayalam)** and **ARINDAM CHAUDHURY (FALTU- Bengali)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 75,000/- each to DIRECTORS **KAMAL (KARUTHA PAKSHIKAL)** and **ANJAN DAS (FALTU)**

CITATION

The Award for the Best Film on Family Welfare of 2006 is jointly given to the films

a) **Karutha Pakshikal** for redefining family values in the slums of a city through the life of a man who irons clothes for a living.

b) **Faltu** for delineating the need for family through the predicament of an illegitimate child.

अरिंदम चौधरी

अरिंदम चौधरी एक जाने-माने मैनेजमेंट गुरू और उद्यमी हैं । उनका बिजनेस स्कूल देश का सबसे बड़ा बिजनेस स्कूल है । प्लानमैन मोशन पिक्चर्स ने कोई छह साल पहले *सांझबाथिर रूपकथारा* फिल्म बनायी थी और यह बाक्स ऑफिस पर पूरी तरह हिट रही थी । बाद में अरिंदम चौधरी ने एक और फिल्म *रोक सको तो रोक लो* का निर्देशन किया । प्लानमैन मोशन पिक्चर्स निकट भविष्य में दो और फिल्में बनाने वाला है ।

अंजन दास

अपनी जटिल कहानियों और फिल्मों में भी अपनी सुस्पष्ट सृजनशीलता के लिए विख्यात अंजन दास बंगाली सिनेमा के लिए किसी वरदान से कम नहीं है । *सांजबाथिर रूपकथारा, इतिश्रीकांतो* तथा *जरा बृष्टितिते भीजेछिलो* सहित उनकी कई फिल्में मांट्रियल, लंदन, रोम और एडिनबर्ग जैसे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित हुई हैं । उनकी फिल्मों में ग्रामीण परिवेशों का फिल्मांकन यह दर्शाता है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले इस फिल्म निर्माता को अपने उस परिवेश से अब भी कितना अधिक लगाव है ।

जी.वी. प्रोडक्शन्स
कमल

देश-विदेश में फैले मलयाली समाज के लिए निर्देशक कमल एक परिचित नाम है। प्रसिद्ध निर्देशकों पी.एन. मैनन, के.एस. सेतुमाधवन तथा भारतन के सहायक के रूप में काम पर चुके कमल ने निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म *मिज़ीनीर पूक्कल* (1986) से अपनी अलग पहचान बनाई। तब से कमल 32 सफल फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं।

ARINDAM CHOWDHURY

He is a leading management guru and entrepreneur. His business school is among the largest in the country. Planman Motion Pictures, launched six years ago, started off with a commercial hit, *Sanjhhbathir Roopkathara*. Later he directed a film, *Rok Sako To Rok Lo* and Planman Motion Pictures is producing two more films.

ANJAN DAS

Known for his sinuous story telling and the art of creating class with clarity in his movies, filmmaker Anjan Das is nothing short of a gift to Bengali cinema. His films including *Saanjbathir Roopkathara*, Iti *Srikanto* and *Jara Brishtitite Bhijechhilo* have traveled to international film festivals like Montreal, London, Rome and Edinburgh. The rustic locations of his films have a lot to do with his love for his rural background.

G.V. PRODUCTIONS
KAMAL

Kamal is a well known director among the Malyali community around the world. Working with his mentors P.N. Menon, K.S. Sethumadhavan and Bharathan as Assistant Director moulded him into a director and gave the finishing touches before he debuted as a director in the production of *Mizhineer Pookkal* (1986). Since than, he has directed 32 movies.

मद्यनिषेध, महिला एवं बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली हानियां, विकलांग कल्याण इत्यादि सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

होप (तेलुगु)

निर्माता **पोलिचेरला वेंकट सुबैया** को रजत कमल तथा रु. 1,50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के. सत्यनारायण** को रजत कमल तथा रु. 1,50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिला एवं बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों का सेवन से होने वाली हानियां, विकलांग कल्याण इत्यादि सामाजिक विषयों पर वर्ष 2006 का सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार **होप** को दिया जाता है। इस फिल्म में कुछ युवाओं को आत्महत्या की ओर धकेलने वाली मौजूदा शिक्षा प्रणाली को दुरुस्त किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.

HOPE (TELUGU)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,50,000/- to PRODUCER **POLICHERLA VENKATA SUBBIAH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,50,000/- to DIRECTOR **K. SATYANARAYANA**

CITATION

The Award for the Best Film on Other Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-dowry, Drug abuse, Welfare of the Handicapped etc. of 2006 is given to the film **Hope** for focusing on the need to re-examine the present-day education system that leads many young people to commit suicide.

पोलिचेर्ला वेंकट सुब्बैया

पचहत्तर वर्षीय फिल्म निर्माता पोलिचेर्ला वेंकट सुब्बैया इंजीनियरिंग में स्नातक हैं। **'होप'** इनकी पहली फिल्म है और इस पहली फिल्म ने ही सिनेमा जगत में इनकी उपस्थिति का एहसास दिला दिया है।

POLICHERA VENKATA SUBBIAH

With his very first film, *Hope*, as a producer this 75-year-old engineering graduate has made a big mark on cinema.

के. सत्यनारायण

'होप' के. सत्यनारायण द्वारा निर्देशित पहली फिल्म है। इसके पहले सत्यनारायण फैशन फोटोग्राफर, इवेंट मैनेजर और नृत्य निर्देशक के रूप में कार्य करते रहे हैं। इन्होंने इस फिल्म की कहानी, पटकथा लेखन और संवाद लेखन का कार्य भी किया है। *होप* ऐसी पहली तेलगु फिल्म है जो एक दशक बाद 2006 में भारतीय पैनोरमा में शामिल हुई है और जिसने इनका नाम रोशन किया।

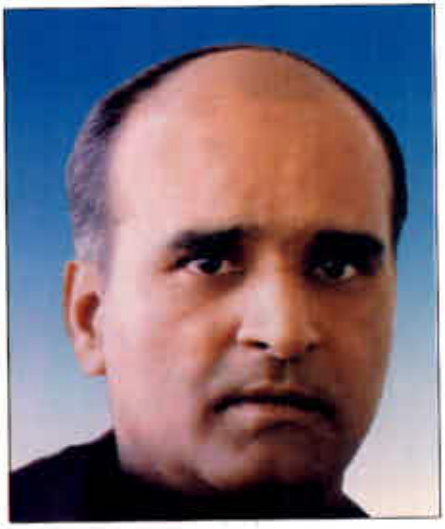

K SATHYANARAYANA

He has traveled many paths including that of fashion photographer, event manager and choreographer before making it big with his debut directorial venture, *Hope*. He has also written the story, screenplay and dialogues of the film and *Hope* is the only Telugu film to have made it to the Indian Panorama in 2006 after a decade, adding a feather to his cap.He describes himself as someone who grew up on a diet of movies and the flickering images on the screen in a dark hall proved irresistible.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

किट्टू (तेलुगु)

निर्माता **के. भार्गव** को स्वर्णकमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बी. सत्या** को स्वर्णकमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

एनिमेटर **कोदवंती भारवि** को स्वर्णकमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का पुरस्कार किट्टू (तेलुगु) को दिया जाता है। इस फिल्म में भारतीय मूल्यों को परिलक्षित करने वाले पात्रों और सरोकारों को बेहद खूबसूरती से पेश किया गया है।

BEST ANIMATION FILM

KITTU (TELUGU)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **K. BHARGAVA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **B. SATYA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to ANIMATOR **KODAVANTI BHARAVI**

CITATION

The Award for the Best Animation Film of 2006 is given to the film **Kittu (Telugu)** made with characters and concerns that reflect the Indian ethos in a format so far identified with the West.

के. भार्गव

भारत में कार्टून फिल्में अक्सर पौराणिक कथाओं पर आधारित होती हैं लेकिन भार्गव ने सामाजिक विषय पर कार्टून फिल्म (किट्टू) बनाकर एक नया प्रचलन शुरू किया है । टेलीविजन धारावाहिकों के लिए छोटी-छोटी कार्टून फिल्म बनाने वाली के. भार्गव इंजीनियरिंग में स्नातक हैं । उनके पास एक हजार कार्टूनिस्ट की मजबूत टीम है । वह अपनी कार्टून फिल्मों के माध्यम से भारतीय सभ्यता का पूरी दुनिया में प्रचार प्रसार करना चाहते हैं ।

बी. सत्या

हैदराबाद के केन्द्रीय विश्वविद्यालय से थियेटर आर्ट में परास्नातक बी. सत्या को उनके घर के बच्चों ने किट्टू कार्टून फिल्म बनाने के लिए प्रोत्साहित किया । उनको अक्सर इस बात का अचंभा होता कि आखिर बच्चे कार्टून चैनलों से इतना क्यों चिपके रहते हैं । बस, फिर क्या था उन्होंने इस फिल्म पर काम शुरु कर दिया । फिल्म का नाम किट्टू इस फिल्म के नायक एक बंदर के नाम पर है । किट्टू सामाजिक वि-ाय पर पहली कार्टून फिल्म है ।

कोदवंती भारवि

आंध्र प्रदेश से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक कोदवंती भारवि के लिए कंप्यूटर ग्राफिक्स और कार्टून शुरू मे एक शौक भर था लेकिन बाद में यही उनका पेशा बन गया । फिल्म **किट्टू** में भार्गव और सत्या के साथ काम करने के पहले उन्होंने एडवांस डिजिटल ग्राफिक्स में प्रशिक्षण प्राप्त किया है ।

K. BHARGAVA

Animation films in India have largely been based on mythological stories but Bhargava's *Kittu* is a trend-setter as it deals with a social theme. Bhargava, who makes short animation films and graphics for television serials, is an engineering graduate. Human resources, good script and finance are three vital inputs for animation films and Bhargava has a 1000-strong army of animators. He wants to take Indian culture to the world through animation films and to make Bharagava Pictures a brand entity like Walt Disney.

B. SATHYA

A post graduate in theatre arts from Central University in Hyderabad, children in Satya's family prompted him to make *Kittu*. He wondered what glued them to cartoon channels and that curiosity led him to make *Kittu*, named after the monkey protagonist of the film. Monkeys are part of the Indian social milieu and *Kittu* is the first animation film with a social theme.

KODAVANTI BHARAVI

For this civil engineering graduate from Andhra Pradesh, computer graphics and animation were a hobby before they became a profession. He took training in advanced digital graphics before he joined hands with Bhargava and Satya to work on *Kittu*.

सर्वोत्तम बाल फिल्म

केयर ऑफ फुटपाथ (कन्नड़)

निर्माता **शैलजा श्रीकांत** को स्वर्णकमल तथा रु. 1,50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **किशन एस.एस.** को स्वर्णकमल तथा रु. 1,50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम बाल फिल्म पुरस्कार केयर ऑफ फुटपाथ (कन्नड़) को दिया जाता है। इसमें मलिन बस्ती में रहने वाले एक बच्चे की पढ़ाई के प्रति उत्कट अभिलाषा को दर्शाया गया है। यह फिल्म इसलिए ज्यादा प्रासंगिक हो गई है क्योंकि इसका निर्देशन एक नौ वर्षीय बालक द्वारा किया गया है।

BEST CHILDREN'S FILM

C/O FOOTHPATH (KANNADA)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 1,50,000/- to PRODUCER **SHYLAJA SHRIKANTH**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 1,50,000/- to DIRECTOR **KISHAN S.S.**

CITATION

The Award for the Best Children's Film of 2006 is given to the film **C/o Footpath** (Kannada) for articulating the burning desire for education in a slum-dweller. The issue is particularly relevant as the film is directed by a nine year old boy.

शैलजा श्रीकांत

शैलजा श्रीकांत एस. जे. पॉलीटेक्नीक, बंगलौर से साउंड एवं टी.वी. में डिप्लोमा प्राप्त हैं। फिल्म जगत में इन्होंने अपनी शुरूआत संगीत निर्देशक के रूप में की तथा पांच फिल्मों का संगीत निदेर्शन किया। इन्होंने विज्ञापन फिल्मों, वृत्तचित्रों एवं टेलीविजन कार्यक्रमों का निमार्ण किया। इनकी पहली फिल्म *केयर आफ फुटपाथ* को छः अंतर्राष्ट्रीय, दो राज्य पुरस्कार पहले ही प्राप्त हो चुके हैं।

एस.एस. किशन

किशन ने चार वर्ष की उम्र से फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों में काम करना शुरू कर दिया था । उन्होंने मात्र नौ वर्ष की उम्र में अपने माता-पिता शैलजा और श्रीकांत रायलू द्वारा निर्मित फिल्म *केयर ऑफ फुटपाथ* का निर्देशन किया है । यह फिल्म कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जा चुकी है । बारह वर्षीय किशन बंगलौर स्थित कैमलिन इंग्लिश स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ रहा है । वह ऑप्टिकल इल्यूजन तथा वर्चुअल टेक्नोलॉजी जैसे विषयों में विशेष रूचि ले रहा है ताकि आगे चलकर उसका यह ज्ञान फिल्म-निर्माण में सहायक हो सके ।

SHYLAJA SRIKANTH

Shylaja Srikanth is a diploma holder in Sound and TV from SJ Polytechnic, Bangalore.

Her career in the film industry started as a Music Director and since then she has scored music for 5 feature films.

She has produced advertisements, documentaries and television programmes.

Her debut film *"C/o Footpath"* has won six international and two state awards.

S. S. KISHAN

Kishan started acting in films and television soaps at the age of four. He was nine when he directed *"C/o Footpath"* produced by his parents, Shylaja and Srikant Rayalu. The movie has been to several international film festivals. Kishan,12, is studying in the 8th standard in Camlin English School, Bangalore. He is brushing up subjects like Optical Illusion and Virtual Technology, which would further help in film-making.

सर्वोत्तम निर्देशन

मधुर भंडारकर

निर्देशक **मधुर भंडारकर** को **ट्रैफिक सिग्नल** (हिन्दी) के लिए को स्वर्णकमल तथा रु. 2,50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार **मधुर भंडारकर** को उनकी फिल्म **ट्रैफिक सिग्नल** के लिए दिया जाता है। इसमें उन्होंने मेट्रो शहर में रहने वाले बेघर लोगों की जिंदगी, रोजी-रोटी और चिंताओं को बड़ी खूबसूरती से पिरोने के साथ-साथ एक प्रेरक घटना को दर्शाया है जिससे फिल्म का नायक सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाता है।

BEST DIRECTION

MADHUR BHANDARKAR

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 2,50,000/- to DIRECTOR **MADHUR BHANDARKAR** for **TRAFFIC SIGNAL (HINDI)**

CITATION

The Award for the Best Direction of 2006 is given to **Madhur Bhandarkar** for weaving in the lives, livelihoods and concerns of the street dwellers in a metro and the inspiring stand that makes the protagonist a role model across society.

मधुर भंडारकर

किशोरावस्था से ही फिल्मों के शौकीन मधुर भंडारकर शुरुआत में एक वीडियो लाइब्रेरी में काम करते थे । इस लाइब्रेरी में लगभग 1800 फिल्में थीं । बाद में उनका परिचय मशहूर निर्देशक राम गोपाल वर्मा से हुआ । जिनके साथ इन्होंने पांच वर्षो तक फिल्म निर्माण के गुर सीखे । भंडारकर की पहली फ़ीचर फ़िल्म *त्रिशक्ति* थी । यह फ़िल्म काफी सराही गयी । इसके दो वर्ष बाद उन्होंने 'बार डांसर्स' पर आधारित फिल्म *'चांदनी बार'* बनायी । इस फिल्म ने उन्हें सिने जगत में अपनी पहचान बनाने में मदद की । यह युवा फिल्म निर्देशक सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों पर फिल्में बनाता है ।

MADHUR BHANDARKAR

A film buff in his teens, he worked in a video library with a collection of 1800 films until he was introduced to ace director Ram Gopal Verma who he assisted for five years. Having learnt the ropes of filmmaking under the eye of a master, Bhandarkar made his mark with the very first feature film, *Trishakti* but it was two years later that he made it big with *Chandni Bar*, a path breaking film on the bar dancers. This young director has many feathers in his cap and likes to make socially relevant films.

सर्वोत्तम अभिनेता

सौमित्र चटर्जी

अभिनेता **सौमित्र चटर्जी** को **पोदोक्खेप (बंगला)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार सौमित्र चटर्जी को उनकी फिल्म **पोदोक्खेप** के लिए दिया जाता है। इसमें उन्होंने एक ऐसे वयोवृद्ध व्यक्ति की पीड़ा और उल्लास का जीवंत अभिनय किया है जो बदलते समय के अनुरूप अपने को ढालने की कोशिश कर रहा है।

BEST ACTOR

SOUMITRA CHATTERJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to ACTOR **SOUMITRA CHATTERJEE** for **PODOKKHEP (Bengali)**

CITATION

The Award for the Best Actor of 2006 is given to **Soumitra Chatterjee** in **Podokkhep** for etching the agonies and elations of a an elderly person trying to keep peace with changing times.

सौमित्र चटर्जी

सौमित्र चटर्जी सिने जगत की जानी मानी हस्ती सत्यजीत राय के साथ काम करने के लिए विख्यात हैं । पहली बार 1959 में राय की *'अपूर्व संसार'* में कार्य करके उन्होंने फिल्मी जगत में प्रवेश किया । उस समय श्री चटर्जी मात्र एक रेडियो उद्घोषक थे और उन्होंने एक बंगाली नाटक में छोटी-मोटी भूमिका निभायी थी । उसके बाद उन्होंने राय की 14 फिल्मों में काम किया । सिने इतिहास में श्री राय के साथ उनकी जोड़ी कुछ ऐसी ही थी जैसी मिफ्यून और कुरुसावा की, मैस्ट्रोइआन्नी और फेलिन्नी की तथा डि नेरो और स्कोरिसीज की । वह बहुत ही अच्छा कविता पाठ करते हैं और उन्होंने टीवी तथा बंगाली लोक नाटक जात्रा में अभिनय किया है । फ्रांस सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार - 'आफीसर डेस आर्ट्स एट मेटियर्स' इटली का जीवन पर्यन्त उपलब्धि पुरस्कार तथा भारत सरकार से पद्मभूषण सहित उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

SOUMITRA CHATTERJEE

Most famous for his frequent collaborations with the celebrated Indian director Satyajit Ray, Chatterjee's film debut was in 1959 in Ray's *Apur Sansar*. Chatterjee was a radio announcer then and had only played a small role in a Bengali stage production. Eventually he featured in 14 of Ray's films. His centrality to Ray's work is akin to other key collaborations in the history of cinema, Mifune and Kurosawa, Mastroianni and Fellini and De Nero and Scorsese.He is a well-known poetry reciter, and has acted on TV and in Bengali folk drama, jatra. He has received several national and international awards including the 'Officier des Arts et Metiers', the highest award for arts given by the French government, a lifetime achievement award from Italy and Padma Bhushan from the Indian government.

सर्वोत्तम अभिनेत्री

प्रियामणि

अभिनेत्री **प्रियामणि** को **पारुती वीरन** (तमिल) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार **प्रियामणि** को उनकी फिल्म **पारुती वीरन** के लिए दिया जाता है। इसमें उन्होंने गांव की एक ऐसी तेज तर्रार लड़की का सशक्त अभिनय किया जो प्रेम में विफल होने पर रौद्र रूप धारण कर लेती है।

BEST ACTRESS

PRIYAMANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to ACTRESS **PRIYAMANI** for **PARUTHI VEERAN (Tamil)**

CITATION

The award for the Best Actress of 2006 is given to **Priyamani** in **Paruthi Veeran** for portraying the ferocity of love in a firebrand village girl.

प्रियामणि

स्कूल की पढ़ाई पूरी करते ही प्रियामणि ने बतौर मॉडल काम करना शुरु कर दिया था । उनकी पहली फिल्म *कांगालाल कैथू सेई* थी । तेलुगू में उनकी पहली फिल्म *पेल्लाइना कोथालु* थी । इसके बाद उन्होंने *जगपति बाबू* में काम किया । इन फिल्मों से उन्हें काफी शोहरत मिली । पारुतीवीरन में उनके अभिनय ने उन्हें एक बार फिर से तमिल सिनेमा में वापस ला दिया है । प्रियामणि अपने अभिनय जीवन को लेकर काफी उत्साही हैं । उनके पसंदीदा कलाकार मामूटी, मोहनलाल और दिलीप हैं । संगीत और नृत्य के प्रति उनकी अभिरुचि निश्चित तौर पर उनके अभिनय में निखार लाएगी ।

PRIYAMANI

Starting off as a model when she was barely out of school, Priyamani's first film was *Kangalal Kaithu* Sei. She made her Telugu debut in *Pellaina Kothalu* and, with *Jagapati Babu*, Priyamani rose to fame. She has made a comeback to Tamil cinema with *Paruthiveeran*. Priyamani is passionate about her acting career and her favorite actors include Mammooty, Mohanlal and Dilip. Her fondness for music and dance are a great boost to her acting.

सर्वोत्तम सह अभिनेता

दिलीप प्रभावलकर

सह अभिनेता **दिलीप प्रभावलकर** को **लगे रहो मुन्ना भाई** (हिन्दी) तथा **शेवरी** (मराठी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम सह अभिनेता का पुरस्कार **दिलीप प्रभावलकर** को दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें **लगे रहो मुन्ना भाई** में गांधी तथा **शेवरी** में एक मध्यम वर्गीय उदार क्लर्क की भूमिका निभाने के लिए दिया गया है। यह दोनों ही चरित्र एक दूसरे से पूरी तरह भिन्न और काफी चुनौतीपूर्ण है। दिलीप प्रभावलकर के सशक्त अभिनय ने इन दोनों ही पात्रों को जीवंत कर दिया है।

BEST SUPPORTING ACTOR

DILIP PRABHAVALKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to SUPPORTING ACTOR **DILIP PRABHAVALKAR** for **LAGE RAHO MUNNABHAI (HINDI)** and **SHEVRI (MARATHI)**

CITATION

The Award for the Best Supporting Actor of 2006 is given to **Dilip Prabhavalkar** for the sincere portrayal of a wide range of emotions of two divergent and equally challenging characters of Gandhi in Lage Raho Munna Bhai and a benign middle-class clerk in Shevri.

दिलीप प्रभावलकर

दिलीप प्रभावलकर स्वयं एक अभिनेता हैं। उनका फिल्मी जीवन काफी लंबा और शानदार रहा है। मराठी थियेटर, टेलीविजन, फिल्म और लेखन सहित उनकी सृजनात्मकता ने अपने को कई रूपों में व्यक्त किया है। थियेटर संबंधी अपने कार्यों के लिए महाराष्ट्र सरकार से उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। एक गंभीर और सामाजिक रूप से सजग इस अभिनेता के अभिनय ने आभिजात्य वर्ग और आम आदमी दोनों पर ही अपनी छाप छोड़ी है। अब तक उनकी प्रकाशित 14 पुस्तकों में से तीन पुस्तकों - *गुगली, हसगत* और *कागदी बान* को साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

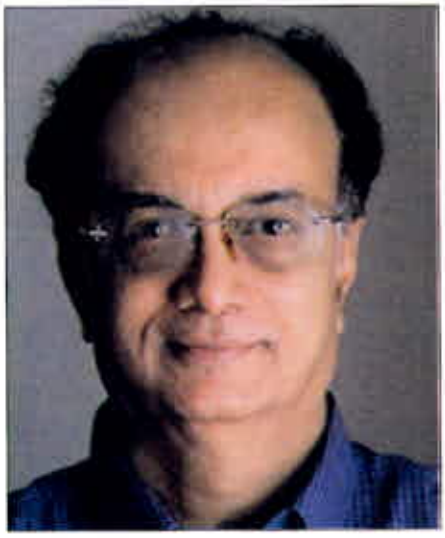

DILIP PRABHAVALKAR

The thespian has a long and illustrious career that has many expressions of creativity including Marathi theatre, television, films and writing. He has received many prestigious awards from the Maharashtra State government for his work in theatre. A serious and socially conscious actor, his performances appeal to connoisseurs as well as the common man. Three of his 14 books published so far -*Googly, Hasga and Kagdi Baan* - have won literary awards. In his view, an actor must give back to society at least a part of what he achieves with the help of the society.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री

कोंकना सेन शर्मा

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री **कोंकना सेन शर्मा** को ओंकारा (हिन्दी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार **कोंकना सेन शर्मा** को एक ऐसी ग्रामीण महिला के चरित्र-चित्रण के लिए दिया गया है जो उत्तर प्रदेश के एक राजनीतिक परिवार में हिंसा पर आमादा लोगों में समझ और सूझ-बूझ लाने का प्रयास करती है।

BEST SUPPORTING ACTRESS

KONKONA SEN SHARMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to SUPPORTING ACTRESS **KONKONA SEN SHARMA** for **OMKARA (HINDI)**

CITATION

The Award for the Best Supporting Actress of 2006 is given to **Konkona Sen Sharma** for the textured characterisation of a village woman trying to bring sanity in the violent lives of a political family in Uttar Pradesh.

कोंकना सेन शर्मा

कोंकना, भारत की जानी मानी अभिनेत्री हैं । वह अभिनय के क्षेत्र में भारत की बहुत ही होनहार कलाकार हैं। सिनेमा उनके परिवार की खासियत है। कोंकना के नाना चिदानंद दासगुप्ता एक जाने माने फिल्म समीक्षक, विद्वान, प्रोफेसर और लेखक रहे हैं । वह कलकत्ता फिल्म सोसायटी के संस्थापक भी रहे हैं । कोंकना दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से अंग्रेजी में स्नातक हैं । उनकी पहली फिल्म *मिस्टर एंड मिसेज अय्यर* बाक्स ऑफिस पर तो विशेष अच्छा नहीं कर पाई लेकिन फिल्म समीक्षकों ने इसकी काफी तारीफ की है । इस समय वह कई अच्छी फिल्मों पर काम कर रही हैं जिनमें से मीरा नायर की एक फिल्म *शांताराम* भी है ।

KONKONA SEN SHARMA

Konkona, one of the most promising acting talents in India. Cinema runs in the family.Konkona's maternal grandfather, Chidananda Dasgupta is a famous film critic, scholar, professor and writer. He is also the co-founder of the Calcutta Film Society. Konkona has a degree in English from Delhi's St Stephen College. Her first film, *Mr and Mrs Iyer*, did not do well at the box office but she received good reviews. She has several prestigious assignments lined up including one in Mira Nair's *Shantaram*.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

दिव्या चाफड़कर

बाल कलाकार **दिव्या चाफड़कर** को **अंतर्नाद** (कोंकणी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार **दिव्या चाफड़कर** को कोंकणी फिल्म **अंतर्नाद** के लिए दिया जाता है। इसमें उन्होंने एक ख्यातिलब्ध मां के व्यक्तित्व तले निष्प्रभ हो रहे एक प्रतिभावान बच्चे के जटिल भावों को बड़ी ही खूबसूरती से व्यक्त किया है।

BEST CHILD ARTIST

DIVYA CHAPHADKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to **CHILD ARTIST** for **ANTARNAD (KONKANI)**

CITATION

The Award for the Best Child Artist of 2006 is given to **Divya Chaphadkar in Antarnad** for evoking the complex emotions of a talented child overshadowed by a celebrity mother.

दिव्या चाफड़कर

साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि वाली यह बालिका आठवीं कक्षा की छात्रा है । जब वह मात्र छह वर्ष की थी तब से वह शास्त्रीय हिन्दुस्तानी गायन संगीत सीख रही है । उसने अब तक अपने गृह राज्य गोवा में कई संगीत समारोहों में भाग लिया है ।

DIVYA CHAPHADKAR

This child artiste from a simple background is studying in 8th Standard. She has been a student of classical Hindustani vocal music since the age of six and has participated in several music festivals in Goa, her home state.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

गुरुदास मान

पार्श्व गायक **गुरुदास मान** को **वारिस शाह – इश्क दा वारिस (पंजाबी)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार **गुरुदास मान** को **वारिस शाह-इश्क दा वारिस** में गायन के लिए दिया गया है। इस फिल्म में हीर के अपने गायन के माध्यम से उन्होंने फिल्म की पूरी कहानी बयान कर दी है।

BEST MALE PLAYBACK

GURDAS MAAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to **MALE PLAYBACK SINGER** for **WARIS SHAH - ISHQ DA WARIS (PUNJABI)**

CITATION

The Award for the Best Male Playback Singer of 2006 is given to **Gurdas Maan** in Waris Shah: Ishq Da Waris for building the entire narrative through his singing of Heer.

गुरुदास मान

गुरुदास मान एक ऐसे सुस्थापित पंजाबी गायक, गीतकार, नृत्य निर्देशक और अभिनेता हैं जिनकी झोली में अब तक कई प्रतिष्ठित पुरस्कार आ चुके हैं । युवावस्था में खेल-कूद ही उनके लिए सब कुछ था । वह राष्ट्रीय स्तर के एथलीट होने के अलावा जूडो में ब्लैक बेल्ट होल्डर रहे हैं । भारत में वह 'एकल गायन शो' के प्रणेता कहे जा सकते हैं । शुरुआत में उन्होंने टीवी धारावाहिकों के कहानी लेखन और निर्देशन का कार्य किया । पंजाबी लोक नृत्य भांगड़ा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने का श्रेय गुरुदास मान को ही जाता है । *वारिसशाह-इश्क दा वारिस* और *शहीदे मोहब्बत बूटा सिंह* ने दर्शकों को उनकी अभिनय प्रतिभा से भी रूबरू करा दिया है ।

GURDAS MAAN

He is an iconic Punjabi singer, songwriter, choreographer and actor with many prestigious awards in his cap. Sports was a passion with him as a young man and besides excelling in athletics at the national level, he was also a Black Belt in judo. He is a pioneer of solo singing shows in India.During his early career he also wrote and directed TV serials. Maan is often credited with making Punjab's folk Bhangra music into an inetrnational rage. As an actor, he is best known for *Waris Shah: Ishq da Waris* and *Shaheed-E-Mohabbet*..

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

आरती अंकलेकर टिकेकर

पार्श्व गायिका **आरती अंकलेकर टिकेकर** को **अंतर्नाद** (कोंकणी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार **आरती अंकलेकर टिकेकर** को दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें उनके उस मधुर गायन के लिए दिया गया है जो किसी शास्त्रीय गायक की विशेषताओं को अभिव्यक्त करता है।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

AARTI ANKLEKAR TIKEKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to FEMALE PLAYBACK SINGER **AARTI ANKLEKAR TIKEKAR** for **ANTARNAD (KONKANI)**

CITATION

The Award for the Best Female Playback Singer of 2006 is given to **Arati Anklekar Tikekar** for the sonorous rendering that gives conviction to the central character of a classical vocalist.

आरती अंकलेकर टिकेकर

भारतीय शास्त्रीय संगीत घराने से ताल्लुक रखने वाली और अपनी सुरीली आवाज से हर तरह के भावों को व्यक्त करने की सामर्थ्य रखने वाली आरती ने कई प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में भाग लिया और कई पुरस्कार जीते हैं। इनमें कुछ प्रमुख पुरस्कार हैं पंडित कुमार गंधर्व राष्ट्रीय पुरस्कार तथा महाराष्ट्र और गोवा सरकारों द्वारा दिए जाने वाले सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक/गायिका पुरस्कार। उन्होंने सबसे पहले श्याम बेनेगल की फिल्म *सरदारी बेगम* के लिए गाया था और उनका एलबम जबर्दस्त हिट हुआ था।

AARTI ANKLEKAR TIKEKAR

An Indian classical music prodigy with a rich voice that can bring out diverse emotions, Arti has perormed at many prestigious competitions and has many music awards in her cap including the Pandit Kumar Gandharva National Award and the Best Singer Award of the Maharashtra and Goa Governments. She first sang in Shyam Benegal's *Sardari Begum* and her album was a hit.

सर्वोत्तम छायांकन

गौतम घोष

कैमरा मैन **गौतम घोष** को **यात्रा (हिन्दी)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार

फिल्म प्रोससिंग लैबोरेटरीज़ **रेनबो कलर लैब** तथा **एडलैब फिल्म्स प्राइवेट लि.** को रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार **गौतम घोष** को दिया गया है। कोई सामंतवादी व्यवस्था जब आधुनिक युग में परिवर्तित होती है तब उसकी मनःस्थितियां और मनोदशाएं क्या होती हैं, इस बात को इस फिल्म में बड़े सशक्त ढंग से फिल्माया गया है।

BEST CINEMATOGRAPHY

GOUTAM GHOSE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to CAMERAMAN **GOUTAM GHOSE FOR YATRA (HINDI)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to LABORATORIES, PROCESSING THE FILM **RAINBOW COLOUR LAB** and **ADLAB FILMS PVT LTD.**

CITATION

The Award for the Best Cinematography of 2006 is given to **Goutam Ghose** for creating evocative moods and capturing the nuances of a feudal system changing to modern times.

गौतम घोष

गौतम घोष ने अपने फिल्मी सफर की शुरूआत 1973 में वृत्त चित्रों के माध्यम से की । उनका पहला वृत्तचित्र *'न्यू अर्थ'* थी । इसके बाद उन्होंने *'हंग्रीआटम'* बनायी जिसके लिए उन्हें आबेरहाउसेन फिल्म समारोह में प्रथम पुरस्कार दिया गया। उसके बाद से अब तक उन्होंने *मा भूमि, दखल, पार* और *यात्रा* सहित कई फीचर फिल्मों का निर्देशन बिस्मिल्ला किया है । उन्होंने शहनाई वादक उस्ताद बिसमिल्ला खान और सत्यजीत राय जैसी मशहूर सिनेमा हस्ती के अलावा कई दूसरे महान कलाकारों को अपने कैमरे में कैद किया है । इन्हें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

GOUTAM GHOSE

He started making documentaries in 1973. *New Earth*, his first, was followed by *Hungry Autumn* that won him the main award at the Oberhausen Film Festival. He has since made several feature films including *Maa Bhoomi*, *Dakhal*, *Paar* and *Yatra* and has captured many great artistes in his camera including Shehnai maestro Ustad Bismilla Khan in *Meeting A Milestone* and cinema icon Satyajit Ray. Ghosh has won many national and international awards for his plus.

सर्वोत्तम पटकथा

अभिजात जोशी, राजकुमार हिरानी तथा विधु विनोद चोपड़ा

पटकथा लेखक का पुरस्कार **अभिजात जोशी, राजकुमार हिरानी** तथा **विधु विनोद चोपड़ा** को **लगे रहो मुन्ना भाई** (हिन्दी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम **पटकथा लेखक** का पुरस्कार **अभिजात जोशी, राजकुमार हीरानी तथा विधु विनोद चोपड़ा** को दिया गया है। यह पुरस्कार उन्हें गांधी जी के अहिंसा के दर्शन को लोक व्यवहार में अमली जामा पहनाने संबंधी नए विचार के लिए दिया गया है।

BEST SCREENPLAY

ABHIJAT JOSHI, RAJ KUMAR HIRANI and VIDHU VINOD CHOPRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the SCREENPLAY WRITERS : **ABHIJAT JOSHI, RAJ KUMAR HIRANI** and **VIDHU VINOD CHOPRA** for **LAGE RAHO MUNNABHAI (HINDI)**

CITATION

The Award for the Best Screenplay Writer of 2006 is given to **Abhijat Joshi, Raj Kumar Hirani** And **Vidhu Vinod Chopra** for the original vision with which Gandhi's philosophy of non-violence is given life in popular parlance.

अभिजात जोशी

बहुभाषी नाटककार और फिल्म लेखक अभिजात जोशी वर्तमान में अमरीका स्थित ओटरबेन कॉलेज में क्रिएटिव राइटिंग के प्रोफेसर हैं। उनका पहला अंग्रेजी नाटक - *ए शाफ्ट ऑफ सन लाइट* उनके गृह नगर अहमदाबाद में मजहबी हिंसा को लेकर है। इस नाटक को बीबीसी वर्ल्ड सर्विस नाट्यलेखन प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त हुआ है। श्री जोशी ने अब तक तीन नाटक लिखे हैं और ये तीनों ही प्रकाशित हुए हैं और इन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दर्शाया गया है। श्री जोशी ने *मिशन कश्मीर एकलव्य* और *64 स्क्वायर* जैसी फिल्मों की पटकथा लिखी है।

ABHIJAT JOSHI

A multi-lingual playwright and screenwriter, he is a professor of Creative Writing at Otterbein College, USA. His first English play, *A Shaft of Sunlight*, about the sectarian violence in his city Ahmedabad, was a winner at the B B C World Service Playwriting Contest. The three plays he has written have been published and produced internationally. He is the screenwriter of films like *Mission Kashmir, Eklavya, 64 Squares* and *Lage Raho Munnabhai*. He wishes to dedicate his award to his parents.

विधु विनोद चोपड़ा

कोई तीन दशक पहले उनकी एक लघु फिल्म - *'ऐन एनकाउन्टर विद फेसेस'* आस्कर के लिए नामित की गयी थी। तब से अब तक उन्होंने कई लोकप्रिय और सराहनीय फिल्में जैसे - *परिंदा, 1942 ए लव स्टोरी* तथा *मुन्नाभाई* और इसके बाद *लगे रहो मुन्नाभाई* बनाई है। अपनी सुपरहिट फिल्मों के कारण आज यह युवा फिल्म निर्माता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फिल्म उद्योग की एक हस्ती के रूप में जाना जाता है।

VIDHU VINOD CHOPRA

His film, *An Encounter with Faces* was nominated for an Oscar in the short,non-fiction film category three decades ago. Since then, Chopra has been involved with a number of critically acclaimed films like *Parinda, 1942: A Love Story and the Munna Bhai* series.*Lage Raho Munna Bhai* has made this young filmmaker an international celebrity along with the rest of the film's team.

राजकुमार हिरानी

राजकुमार हिरानी को मुन्नाभाई सीरीज के सृजक के रूप में जाना जाता है। वह बालीवुड फिल्मों के लेखक, निर्देशक और निर्माता सबकुछ हैं। महाराष्ट्र के पुणे स्थित मशहूर भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के छात्र रहे हीरानी ने मुंबई में एक संपादक के रूप में अपने जीवन की शुरूआत की और धीरे-धीरे उन्होंने विज्ञापन फिल्मों के निर्देशक और निर्माता के रूप में अपनी पहचान बना ली। *लगे रहो मुन्नाभाई* का प्रदर्शन फिल्म की सफलता की कहानी अपने आप कहता है। श्री हीरानी आस्टिन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास से फाइन आर्ट में परास्नातक हैं।

RAJ KUMAR HIRANI

He is best known as the creator of the *Munna Bhai* series. He is a writer, director and producer of Bollywood movies.An alumni of the prestigious Film and Television Institute of India in Pune, Maharashtra, Hirani began his career in Mumbai as an editor and gradually established himself as a director and producer of advertising films.*Lage Raho Munnabhai's* screenplay is central to the film's success.He received his Master's in Fine Arts from the University of Texas, Austin.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

के.जे. सिंह, सुभाष साहू तथा सजित कोयेरी

फाइनल मिक्स्ड ट्रैक के रि-रिकार्डिस्ट **के.जे. सिंह, सुभाष साहू** तथा **सजित कोयेरी** को ओंकारा (हिन्दी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम ध्वनि पुरस्कार **फाइनल मिक्स्ड ट्रैक के रि-रिकार्डिस्ट के.जे. सिंह, सुभाष साहू तथा सजित कोयेरी** को दिया गया है। यह पुरस्कार उन्हें बेहतरीन साउंड डिजाइन के लिए दिया गया है जो फिल्म में ध्वनि के विभिन्न स्तरों के माध्यम से दर्शकों के मनोभाव और आवेगों में उतार-चढ़ाव लाती है।

BEST AUDIOGRAPHY

K.J. SINGH, SHAJITH KOYERI and SUBHASH SAHOO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Re-recordists of the Final Mixed Track **K.J. SINGH, SHAJITH KOYERI** and **SUBHASH SAHOO** for **OMKARA (HINDI)**

CITATION

The Award for the Best Audiography of 2006 is given to Re-recordists of the Final Mixed Track **K.J. Singh and Subhash Sahoo** for the brilliant sound design that enhances the moods and emotions through different layers of sound in the film.

के.जे. सिंह

वर्ष 1989 में पहली बार के. जे. सिंह ने दिल्ली स्थित हयात रीजेन्सी होटल में एपलवर्ल्ड के लिए म्यूजिक और कम्प्यूटर में 'डेमो' करके दिखाया था और तभी से वह एक विश्वसनीय 'मैक-यूजर' रहे हैं। हालांकि, उन्होंने कनाडा के टोरंटो स्थित ट्रेबास इंस्टीट्यूट ऑफ रिकार्डिंग आर्टस से रिकार्डिंग/साउंड इंजीनियरिंग का कोर्स किया है, लेकिन एमआईडीआई और कम्प्यूटर की दुनिया ने उन्हें अपनी ओर ज्यादा आकर्षित किया। शायद इसीलिए उन्होंने अपने लिए की-बोर्ड, असली डी एक्स सेवेन, ड्रम मशीन, टोन जनरेटर, एम आई डी आई इंटरफेस, आई बी एम एक्स टी, आवाज की बारीकियों की पहचान करने वाला साफ्टवेयर और यामहा एसपीएक्स 90 इफेक्ट्स प्रॉसेसर सहित टैसकैम 246 पोर्टो स्टूडियो जैसी चीजें जुटायीं और म्यूजिक कंपोजिंग करने लगे। गुलजार की हिट फिल्म *माचिस* में मौका मिलने के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने *चाची 420, हू तू तू, सत्या* और *गॉड मदर* जैसी कई हिट फिल्मों में संगीत दिया है।

K J SINGH

K.J. Singh is a confirmed Mac-user since 1989, when he first did a demo of music and computers for AppleWorld at Hyatt Regency, Delhi. Though trained as a recording/sound engineer at Trebas Institute of Recording Arts, Toronto, Canada, he found the world of MIDI and computers exciting enough to bring back a keyboard, the original DX7, a drum machine, a tone generator, MIDI interface, an IBM XT, with Texture sequencing software and a Tascam 246 portastudio with a Yamaha SPX 90 Effects processor and got into music composing. After a breakthrough in Gulzar's hit film *Maachis*, he moved to Mumbai and success chased him with films like *Chachi 420, Hu Tu Tu, Satya* and *Godmother*.

सजित कोयेरी

आडियोग्राफ सजित कोयेरी का जन्म थालासेरी में हुआ था। गठिया रोग के कारण चलने फिरने में असमर्थ सजित काफी अवसाद ग्रस्त रहते और इसी से मुक्ति पाने के लिए वह कुछ वर्ष पहले मुंबई आ गए। वहां वह साउंड डिजाइन में बिना किसी प्रशिक्षण या औपचारिक शिक्षा के मिक्सर पर काम करने लगे और यह काम उन्हें इतना भाया कि वह पूरी तरह उसमें डूब गए। अब तक वह *ब्लैक, ब्लफ मास्टर, मंगल पांडे* और *मकबूल* सहित 50 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं। उन्हें इस बात की खुशी है कि भारतीय सिनेमा में अब साउंड डिजाइन को सिर्फ औपचारिकता निभाने के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता।

SHAJITH KOYERI

The Thalaserry-born audiographer left for Mumbai a few years ago to get out of depression caused by immobility on account of rheumatoid arthritis. He had no training or orientation in sound design but the day he touched the mixer he knew it was going to be his world. Since then he has worked on more than 50 films, including *Black, Bluff Master, Mangal Pande* and, *Maqboo*. He is glad that sound design is no longer just a formality in Indian cinema and that the advent of high-fidelity sound systems and their extensive implementation in theatres demand more creative attention on the sound track.

सुभाष साहू

इंजीनियरिंग में स्नातक साहू तीन वर्षों तक एक इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी में काम कर चुके हैं। इसके बाद उन पर इस क्षेत्र में आने की धुन सवार हुई। अतः उन्होंने नौकरी छोड़कर पुणे स्थित भारतीय फिल्म और टेलीविजय संस्थान से साउंड रिकार्डिंग और इंजीनियरिंग से संबंधित डिप्लोमा पूरा किया। कोर्स पूरा करने के बाद वह इस संस्थान से साउंड इंजीनियरिंग कोर्स करने वाली पहली महिला नमिता नायक के साथ कार्य करने लगे। इसी बीच उनका परिचय संगीत निर्देशक, फिल्म निर्देशक, फिल्म निर्माता और लेखक विशाल भारद्वाज से हुआ जो उनके लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। इस समय वह भारद्वाज की फिल्म *ओमकारा*, सुधीर मिश्रा की *तेरा क्या होगा* और बालाजी टेलीफिल्म्स के लिए *महाभारत* पर कार्य कर रहे हैं।

SUBASH SAHOO

A graduate engineer, Sahoo was determined to make a mark when he left a three-year-old job with an electronics company to join FTII, Pune, for a diploma in sound recording and engineering for films. He started working under Namita Nayak, the first woman to enroll into the sound engineering course at FTII. His association with music director, author, director and filmmaker Vishal Bharadwaj is perhaps the best thing to happen to him, he says. He is currently working for Bhardwaj's *Kaminey*, Sudhir Mishra's *Tera Kya Hoga* and the mega serial Mahabharat for Balaji Telefilms.

सर्वोत्तम संपादन

राजा मोहम्मद

संपादक **राजा मोहम्मद** को **पारुती वीरन (तमिल)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार **राजा मोहम्मद** को दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें उस अनूठे संपादन के लिए दिया गया है जो निर्देशक की सोच को पर्दे पर उतारने में अत्यधिक मददगार साबित हुआ है और जिसके कारण यह फिल्म बहुत ही सशक्त बन गई है।

BEST EDITING

RAJA MOHAMMED

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the EDITOR **RAJA MOHAMMED** for **PARUTHI VEERAN (Tamil)**

CITATION

The Award for Best Editing for the year 2006 is given to **Raja Mohamed** for innovative editing that enhanced the director's vision to fashion a powerful film.

राजा मोहम्मद

राजा मोहम्मद की पहली फिल्म *नल दमयंती* थी। राजा मोहम्मद ने तमिल, तेलुगु, अंग्रेजी एवं बंगला सहित अनेक भाषाओं में 150 फिल्मों के सहायक संपादक के रूप में कार्य संपादक के रूप में कार्य किया है। इन्होंने संपादन का कार्य ए श्रीकर प्रसाद से सीखा। ये स्वतंत्र रूप से बीस फिल्मों का संपादन कर चुके हैं, जिसमें ए.के. लोहितदास द्वारा निर्देशित *सूत्रधारन* शामिल है। राजा मोहम्मद *कस्तूरीमान* फिल्म के लिए केरल राज्य का सर्वोत्तम संपादक का पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

RAJA MOHAMMED

His editing skills can be seen in 150 films in a variety of languages including Tamil, Telugu, English, Bengali and Oriya. Mohammed owes his ace editing skills to experience as well as to his mentor, A. Sreekar Prasad. He has also exclusively edited 20 films including *Sootradharan* (Malayalam) directed by Lohitadas. He has received the Kerala State Film Critics Award for Best editing for *Kastoorimaan*.

सर्वोत्तम कला निर्देशन

राशिद रंगरेज

कला निर्देशक **राशिद रंगरेज** को **वारिस शाह – इश्क दा वारिस (पंजाबी)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार **राशिद रंगरेज** को उनकी फिल्म **वारिस शाह- इश्क दा वारिस** के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध युग को विश्वसनीय ढंग से पुनः प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

BEST ART DIRECTION

RAASHID RANGREZ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the ART DIRECTOR **RAASHID RANGREZ** for **WARIS SHAH ISHQ DA WARIS (Punjabi)**

CITATION

The Award for the Best Art Direction of 2006 is given to **Raashid Rangrez** for the film **Waris Shah - Ishq Da Waris** for the authentic recreation of a historic and culturally rich era.

राशिद रंगरेज

दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया से स्नातक राशिद रंगरेज पहले नाट्य लेखन और निर्देशन का काम करते थे । लेकिन आज से कोई 13 वर्ष पूर्व वह मुंबई आ गए और यहां वह आर्ट डायरेक्टर तथा प्रोडक्शन डिजाइनर का काम करने लगे । उन्होंने मणिकौल, एम. पी. सुकुमारन नायर, साजिद खान और मनोज पुंज सहित भारतीय सिनेमा के कई नामी-गिरामी लोगों के साथ काम किया है ।

RAASHID RANGREZ

A graduate of the Jamia Millia Islamia, Delhi, Rangrez wrote and directed plays before moving to Mumbai 13 years ago where he has been working as art director and production designer.He has worked with many big names of Indian cinema including Mani Kaul, M.P. Sukumaran Nair, Sajid Khan and Manoj Punj.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार

मंजीत मान

वेशभूषाकार मंजीत मान को **वारिस शाह – इश्क दा वारिस (पंजाबी)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम वेशभूषाकार **मनजीत मान** को उनकी फिल्म **वारिस शाह- इश्क दा वारिस** के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें एक ऐतिहासिक युग के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाने वाली सटीक और परिवेशानुकूल वेशभूषाओं के लिए दिया गया है।

BEST COSTUME DESIGNER

MANJEET MAAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to COSTUME DESIGNER **MANJEET MAAN** for **WARIS SHAH: ISHQ DA WARIS (PUNJABI)**

CITATION

The Award for the Best Costume Designer of 2006 is given to **Manjeet Maan** for the film **Waris Shah: Ishq Da Waris** for accurate and convincing costumes, reflecting the socio-cultural fabric of a historic era.

मंजीत मान

मंजीत मान पंजाबी गायक अभिनेता गुरुदास मान की पत्नी है । वह इतिहास फिल्म *वारिस शाह-इश्क दा वारिस* की वेशभूषाकार हैं । फिल्म में मौलिकता लाने के लिए उन्होंने इसकी पृष्ठभूमि का गहराई से अध्ययन किया है । फिल्माए गए सेट, मकान, गलियों, मस्जिदों, दरवाजों, दीवारों, मेहराबों, आंगनों, जनानखाना, पोशाकें, गहने, जूते-चप्पल, अस्त्र-शस्त्र, संगीत वाद्य यंत्र इन सबसे पता चलता है कि मंजीत मान ने काफी शोध कार्य किया है ।

MANJEET MAAN

Wife of celebrated Punjabi singer-actor, Maan is a producer who delved deep into history and archives just to recreate the sounds and sights of *Waris Shah—Ishq Da Waris*, essentially a period film. The film's sets, houses, streets, mosques, gates, walls, arches, single roof houses, courtyards, indoors, matching properties, costumes, ornaments, footwear, weaponry and musical instruments all have the stamp of the producer's research skills. She is adept at handling subtle, stylish and dramatic productions.

सर्वोत्तम मेकअप कलाकार

अनिल मोतीराम पालंदे

मेकअप कलाकार **अनिल मोतीराम पालंदे** को **ट्रैफिक सिग्नल** (हिन्दी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम **मेकअप कलाकार** पुरस्कार **अनिल मोतीराम पालंदे** को उनकी फिल्म **ट्रैफिक सिग्नल** के लिए दिया जाता है। इस फिल्म में उन्होंने कई तरह के पात्रों का मेकअप बड़ी ही चतुराई और सूझ-बूझ से किया है।

BEST MAKE-UP ARTIST

ANIL MOTI RAM PALANDE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to MAKE UP ARTIST **ANIL MOTI RAM PALANDE** for **TRAFFIC SIGNAL**

CITATION

The Award for the Best Make Up Artist of 2006 is given to **Anil Motiram Palande** for the film **Traffic Signal** for subtle and convincing make-up for a wide range of characters.

अनिल पालंदे

32 वर्षीय अनिल मोतीराम पालंदे को नाटकों में रूपसज्जा का दो वर्ष का एवं धारावाहिकों में तीन वर्ष का अनुभव है। इन्होंने 10 से अधिक फिल्मों के लिए मेकअप कलाकार के रूप में कार्य किया है।

ANIL MOTI RAM PALANDE

The first recipient of the best make-up artiste award for *Traffic Signal* in the 54-year-old history of film awards, has experience in drama and Television serials. He has also worked as make-up artist for 10 films.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

अशोक पतकी

संगीत निर्देशक **अशोक पतकी** को **अंतर्नाद (कोंकणी)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार **अशोक पतकी** को उनकी फिल्म **अंतर्नाद** के लिए दिया जाता है। इसमें उन्होंने शास्त्रीय संगीत से लेकर पॉप संगीत तक का जादू इस तरह से बिखेरा है कि यह फिल्म अपनी एक नई पहचान बनाने में सफल रही है।

BEST MUSIC DIRECTION (Songs and Background Music Score)

ASHOK PATKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Music Director **ASHOK PATKI** for **ANTARNAD (KONKANI)**

CITATION

The Award for the Best Music Direction of 2006 is given to **Ashok Patki** for the film **Antarnad** for a judicious range of music from the classical to pop, elevating the film.

अशोक पतकी

अंतर्नाद एक अनुभवी शास्त्रीय गायिका रमाबाई शिरोडकर और उनकी बेटी सानिका की कहानी है। चूंकि यह एक शास्त्रीय गायिका की कहानी है इसलिए सबसे बड़ी चुनौती फिल्म में उपयुक्त संगीत को लेकर थी। लेकिन पतकी इसमें विजेता बनकर उभरे हैं। आरती अंकलेकर-टिकेकर, सावनी शिंदे और देवली पंडित जैसी भारतीय शास्त्रीय गायिकाओं के योगदान से फिल्म का संगीत अति उत्तम बन पड़ा है।

ASHOK PATKI

Antarnad is the story of a veteran classical singer Ramabai Shirodkar and her daughter Sanika. Since the story is about a classical singer, the greatest challenge would have been getting the music right. Patki pulls off a winner.With names from the Indian classical vocal field like Aarti Anklikar-Tikekar, Savani Shende and Devaki Pandit,the film's music is outstanding.

सर्वोत्तम गीतकार

स्वानंद किरकिरे

गीतकार **स्वानंद किरकिरे** को **लगे रहो मुन्नाभाई के गीत (बन्दे में था दम – वंदे मातरम)** के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार **स्वानंद किरकिरे** को उनकी फिल्म **लगे रहो मुन्नाभाई** के लिए दिया जाता है। इसमें उन्होंने ऐसे झकझोर देने वाले बोल लिखे हैं जो परंपरा और आधुनिकता को बड़े ही गेय ढंग से सम्मिश्रित करते हैं और अपनी पहुंच जनसाधारण तक बनाते हैं।

BEST LYRICS

SWANAND KIRKIRE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to LYRICIST **SWANAND KIRKIRE for LAGE RAHO MUNNABHAI** for the lyric - Bande Mein Tha Dum - Vande Mataram

CITATION

The Award for the Best Lyrics of 2006 is given to **Swanand Kirkire** for the film **Lage Raho Munnabhai** for rousing words that lyrically combine tradition with modernity to reach the masses.

स्वानंद किरकिरे

कॉमर्स में स्नातक करने के बाद स्वानंद किरकिरे दिल्ली स्थित नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के छात्र के रूप में और **ऐक्ट वन** थियेटर ग्रुप के सदस्य के रूप में लंबे समय तक थियेटर से जुड़े रहे । उन्होंने कोई आठ साल पहले जाने माने फिल्म निर्देशक सुधीर मिश्रा के साथ अपनी पहली फिल्म की । किरकिरे पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत लेखन और गाना गाने से लेकर फिल्मों में अभिनय करने तक की सभी विधाओं में दखल रखते हैं । वह भारतीय सिनेमा की एक बहुमुखी प्रतिभा कहे जा सकते हैं । उनकी प्रमुख फिल्में हैं - *एकलव्य, चमेली* और *शिवाजी* ।

SWANANAD KIRKIRE

After graduating in commerce he romanced theatre for a long time, both as student of the National School of Drama, Delhi and as part of *Act One* theatre group. His first break in films came eight years ago with celebrated director Sudhir Mishra.From screenplay writing to dialogues to lyrics, singing and acting, Kirkire has come to be recognised as a multi-facted talent of Indian cinema. Prominent works include *Eklavya*, *Chameli* and *Sivaji*.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

विशाल भारद्वाज

निर्देशक **विशाल भारद्वाज** को **ओंकारा (हिन्दी)** के लिए रजत कमल तथा रु.1,25,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 के निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार **विशाल भारद्वाज** को उनकी फिल्म **ओंकारा** के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें एक ऐसी उत्कृष्ट फिल्म के लिए दिया गया है जो एक ज़मीनी और वास्तविक अनुभूति के साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में नया जोश भर देती है।

SPECIAL JURY AWARD

VISHAL BHARDWAJ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,25,000/- to Director **VISHAL BHARDWAJ** for **OMKARA (HINDI)**

CITATION

The Special Jury Award of 2006 is given to **Vishal Bhardwaj** for the film **Omkara** for an outstanding film that synergises international treatment with an earthy, rooted sensibility.

विशाल भारद्वाज

जाने माने कवि और गीतकार राम भारद्वाज के पुत्र विशाल भारद्वाज अपने शुरुआती दिनों में फूड फेस्टिवल में कुछ गजल गायकों के साथ हारमोनियम बजाया करते थे। बाद में उन्हें एक म्युजिक कंपनी में नौकरी मिल गयी। तभी उनके एक मित्र ने उनका परिचय बेहतरीन फिल्म निर्माताओं में शुमार किये जाने वाले गुलजार से करा दिया। विशाल भारद्वाज ने गुलजार के साथ मिलकर *जंगल बुक* और *एलिस इन वंडरलैंड* जैसे धारावाहिको में अपना संगीत किया। उन्होंने गुलजार की हिट फिल्म *माचिस* में भी संगीत दिया। वर्तमान में वह बालीवुड के प्रमुख संगीत निर्देशक के रुप में जाने जाते हैं। उन्होंने एक फिल्म- *मकड़ी* का निर्देशन भी किया है। *मकबूल* और *ओंकारा* जैसी हिन्दी फिल्में बनाकर उन्होंने *ओथेलो* और *मैकबेथ* को हिन्दी फिल्मों के पर्दे पर ला दिया है। इन्हें *मकड़ी*, *मकबूल* तथा *ब्लू अम्ब्रेला* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

VISHAL BHARDWAJ

Son of popular poet and lyricist Ram Bhardwaj, he played the harmonium for little known ghazal singers at food festivals as a young man. Later he got a job with a music company. A friend recommended him to one of India's best filmmakers, Gulzar, with whom he collaborated on TV serials such as *Jungle Book* and *Alice in Wonderland*. After he composed music for Gulzar's hit film, *Maachis*, there has been no looking back. Today, he is among the top music directors of the Bollywood film industry. He turned director with his children's film, *Makdee*. With *Maqbool* and *Omkara*, he has brought Shakespeare's *Macbeth* and *Othello* to the Hindi cinema screen. Vishal has won National Awards for Makdee, Maqbool and Blue Umbrella.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

ईएफएक्स—प्रसाद कार्पोरेशन लिमिटेड

ईएफएक्स, प्रसाद कार्पोरेशन लिमिटेड को कृष (हिन्दी) के लिए रजत कमल तथा रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार ईएफएक्स, प्रसाद कार्पोरेशन लिमिटेड को उनकी फिल्म कृष के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार ऐसे असरदार प्रभावों और तकनीकी बारीकियों के लिए दिया गया है जो फिल्म की जादुई गुणवत्ता में चार चांद लगा देता है।

BEST SPECIAL EFFECTS

EFX—PRASAD CORPORATION LTD.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to **EFX, Prasad Corporation Ltd.** for **KRRISH (HINDI)**

CITATION

The Award for the Best Special Effects of 2006 is given to **EFX, Prasad Corporation Ltd.** for the film **Krrish** for impressive effects and technical finesse that enhances the magical quality of the film.

ईएफएक्स—प्रसाद कार्पोरेशन लिमिटेड

प्रसाद ग्रुप की प्रसाद ईएफएक्स भारत में 52 वर्षों से कार्यरत सबसे बड़ी समेकित फिल्म **पोस्ट-प्रोडक्शन** कंपनी है । यह कंपनी फीचर फिल्मों तथा विज्ञापन फिल्मों के लिए संपूर्ण पोस्ट प्रोडक्शन सेवाएं प्रदान करती है । इसके भारत, दुबई, सिंगापुर और हालीवुड में सर्व सुविधा संपन्न पोस्ट प्रोडक्शन कार्यालय हैं ।

प्रसाद ईएफएक्स विजुअल इफेक्ट्स, एनिमेशन, डिजिटल इंटरमीडियट, डिजिटल रेस्टोरेशन, एचडीपोस्ट, टेप टु फिल्म, कंप्रेशन एंड ऑथरिंग, स्कैनिंग एंड फिल्म रिकार्डिंग, साउंड स्टेजेज, आडियो तथा प्रदर्शनी बिजनेस संबंधी सेवाएं प्रदान करती है ।

EFX—PRASAD CORPORATION LTD.

Prasad EFX is an integral part of the 52 year old Prasad group, the largest integrated film post-production company in India. Prasad Group provides end-to-ed post production services to both feature film and Advertising. Prasad EFX has full fledged post-production facilities and offices in India, Dubai, Singapore and Hollywood.

The group's array of services include Visual Effects , Animation, Digital Intermediate, Digital Restoration, HD post, tape to Film, Compression and authoring, Scanning and Film Recording, Sound stages, Audio (Recording, Mixing, Duplication), Exhibition business.

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

नृत्य निर्देशक **मधु गोपीनाथ** और **वैक्कोम सजीव**

नृत्य निर्देशक **मधु गोपीनाथ** और **वैक्कोम सजीव** को **रात्रि मड़ा** (मलयालम) के लिए रजत कमल तथा रु. 25,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन का पुरस्कार **मधु समुद्र और सजीव समुद्र** को उनकी फिल्म **रात्रि मड़ा** के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार उन्हें ऐसे नृत्य निर्देशन के लिए दिया गया है जो लय और गति में आधुनिक और नूतन सौंदर्य बोध दर्शाता है।

BEST CHOREOGRAPHY

MADHU GOPINATH & VAKKOM SAJEEV

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- each to CHOREOGRAPHERS **MADHU GOPINATH & VAKKOM SAJEEV for RATRI MAZHA (Malayalam)**

CITATION

The Award for the Best Choreography of 2006 is given to **Madhu Gopinath** and **Vakkom Sajeev** for the film **Ratri Mazha** for choreography that displays modern and innovative aesthetics in rhythm and movement.

मधु गोपीनाथ और वक्कम सजीव

दस वर्ष पहले ये दोनो ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले ऐसे युवा थे जिन्हें नृत्य के क्षेत्र में सहारा देने वाला कोई न था । उनके पास कुछ था तो वह उनकी सृजनात्मकता और नृत्य के प्रति उनका जुनून । वे अपने इस जुनून के लिए सदैव बेहतर मंच की तलाश में रहते, आर्थिक संसाधनों और अपनी अलग पहचान के लिए संघर्ष करते । उन्होंने हिम्मत नहीं हारी । इसी का नतीजा है कि आज फिल्म समीक्षक और संस्कृति के पुरोधा भी इनकी सराहना कर रहे हैं ।

यह युगल अब तक 120 देशों में अपनी नृत्य प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुके है । इनके नृत्य में कलारीपयट्टु योग, भरतनाट्यम, केरल की लोक कलाएं तथा मलखंभ का अद्भुत मेल होता है । आजकल यह युगल *'कॉस्मिक डांस ऑफ शिवा'* से संबंधित एक नयी नृत्य रचना पर कार्य कर रहा है । केरल के कलाडी में इन्होंने एक नृत्य स्कूल भी खोला है ।

MADHU GOPINATH & VAKKOM SAJEEV

Ten years ago, they were two youngsters from a rural background without a backing. All they had was creativity and the passion for dance that turned into a constant struggle for stages, finance and recognition. But they plodded on. Today, critics and cultural czars alike take them seriously. The duo danced their way to center stage. Their dance has taken them to 120 countries and its vocabulary is a happy mix of Kalaripayattu, Yoga, Bharatanatyam, folk arts of Kerala and rope Malkhamb. They are now working on their new piece – *'Cosmic Dance of Siva.'*

After proving themselves as dancers and choreographers, the two want to expand their dance school in Kalady, Kerala.

संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम फीचर फिल्म

सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म

एड्यू

निर्माता **नबोमिका बरठाकुर** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अरुप मन्ना** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म पुरस्कार भारतीय सिनेमा की एक ऐसी मार्गदर्शक अभिनेत्री के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए दिया जाता है जो सिने जगत में कोई बड़ा नाम न बन सकी।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES SPECIFIED IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

AIDEU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **NABOMIKA BORTHAKUR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **ARUP MANNA**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 2006 is given to **Aideu** for highlighting a lesser known, pioneering heroine of Indian cinema.

नबोमिका बरठाकुर

रंगमंच और टेलीविजन की यह 32 वर्षीय अभिनेत्री बहुमुखी प्रतिभा की धनी है । एड्यू फिल्म से उन्होंने यह साबित कर दिया है कि वह फिल्म निर्माता के साथ-साथ बेहतरीन वेशभूषाकार भी हैं । असम के नागांव से स्नातक नबोमिका की यह पहली फ़ीचर फ़िल्म है । रंगमंच और टेलीवजन धारावाहिकों में वह चरित्र अभिनेत्री की भूमिका निभाती रही हैं ।

NABOMIKA BORTHAKUR

At just 32, this stage and television actress is a multi-faceted talent. With *Aideu* she has proved herself to be a producer as well as costume designer. For this science graduate from Nagaon in Assam, *Aideu* is her first feature film. She is a familiar face on stage and in television serials where she mainly plays character actor.

अरूप मन्ना

अरूप मन्ना ने मुम्बई के सेंट जैवियर कॉलेज से छायांकन की संपादन और निर्देशन का अध्ययन किया है । इसके अलावा वह एक अच्छे फोटो पत्रकार, पटकथा लेखक और अध्यापक भी है । *जीवन तृष्णा* के बाद *एड्यू* उनके द्वारा निर्देशित दूसरी फिल्म है । उन्होंने अब तक 11 टेलीविजन धारावाहिकों की स्क्रिप्ट लिखी है । उनके द्वारा निर्देशित फिल्म *एड्यू* कनाडा, जर्मनी और ब्राजील सहित लगभग 10 फिल्म समारोहों में शामिल हो चुकी हैं ।

ARUP MANNA

He studied cinematography, editing and direction at St Xavier's College, Mumbai and has been a photo journalist, script writer and teacher. After *Jeevan Trishna*, Aideu is the second feature film directed by Manna. He has written scripts for 11 television serials and documentaries and *Aideu* has traveled to about 10 film festivals including those in Canada, Germany and Brazil.

सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म

अनुरनन और पोदोक्खेप

फिल्म **अनुरनन** के निर्माता **स्क्रीनप्ले फिल्म्स प्रा. लि.** तथा फिल्म **पोदोक्खेप** के निर्माता **नितेश शर्मा** को संयुक्त रूप से रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

फिल्म **अनुरनन** के **निर्देशक अनिरूद्ध राय चौधरी** तथा **पोडोक्खेप** की **निर्देशक सुमन घोष** को संयुक्त रूप से रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म का पुरस्कार संयुक्त रूप से **अनुरनन** तथा **पोदोक्खेप** को दिया गया है। अनुरानन में संबंधों में नए अर्थ तलाशने और उन्हें नया आयाम देने का प्रयास किया गया है जबकि पोदोक्खेप में अकेलेपन से जूझ रहे एक वृद्ध का जीवंत चित्रण है।

BEST FEATURE FILM IN BENGALI

ANURANAN & PODOKKHEP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- jointly to PRODUCERS **SCREENPLAY FILMS PVT LIMITED** for **ANURANAN** and **NITESH SHARMA** for **PODOKKHEP**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- jointly to DIRECTORS **ANIRUDDHA ROY CHOWDHURY** for **ANURANAN** and **SUMAN GHOSH** for **PODOKKHEP**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 2006 is jointly given to **Anuranan** for sensitively exploring nuances in relationships, and to **Podokkhep** for a convincing depiction of an old man coping with loneliness.

स्क्रीनप्ले फिल्म्स प्रा. लि.

ओपस कम्युनिकेशन्स से सम्बद्ध है। इस निर्माण कंपनी ने 13 विज्ञापन फिल्मों का निर्माण किया है। *अनुरनन* इनकी पहली फिल्म है, जिसे महती सफलता प्राप्त हुई है। अब कंपनी *अंतहीन* फिल्म का निर्माण कर रही है जिसमें शर्मिला टैगोर एवं अपर्णा सेन अभिनय कर रही हैं।

अनिरूद्ध राय चौधरी

इन्होंने अपने जीवन की शुरूआत विज्ञापन फिल्म निर्माता के रूप में की थी । 16 वर्षों से भी अधिक समय से इस क्षेत्र में कार्यरत श्री राय चौधरी ने फिलिप्स, ब्रिटेनिया और दूसरे ब्रांडों के लिए विज्ञापन फिल्में बनायी हैं ।

नितेश शर्मा

नितेश शर्मा रितुपर्णो घोष की फिल्म *दहन* में प्रोडक्शन सहायक से लेकर कार्यकारी निर्माता के रूप में और संजय लीला भंसाली की फिल्म *ब्लैक* में बतौर सहायक निर्माता कार्य कर चुके हैं । वर्ष 2005 में उन्होंने बांग्ला टाकीज की स्थापना की जो बंगला फिल्मों की अलग पहचान बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है ।

सुमन घोष

फ्लोरिडा अटलांटिक विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर सुमन घोष के मन में फिल्मों के प्रति जबर्दस्त लगाव रहा है । उन्होंने कुछ लघु फिल्में और नोबेल पुरस्कार विजेता अमृत्य सेन पर - *अमर्त्यसेन: ए लाइफ रि-इक्जामिन्ड* - वृत्तचित्र बनाया है।

SCREENPLAY FILMS P. LTD.

An associate of Opus Communications, it is a production house with 13 years in producing advertising films. *Anuranan*—a resonance was a debut feature film and a major commercial success. The company is now producing *Antaheen* with a star caste including Sharmila Tagore and Aparna Sen.

ANIRUDDHA ROY CHOWDHURY

He started off as an ad filmmaker and in a career spanning 16 years he has done ad-films for Philips, Britannia and many other brands. Known as Tony in the industry, he took to directing and *Anuraanan* is his first feature film.

NITESH SHARMA

Nitesh Sharma worked his way up from a production assistant to executive producer in Rituparno Ghosh's *Dahan* and assistant line producer in Sanjay Leela Bhansali's *Black*. In 2005, he floated Bangla Talkies, which is creating a niche for independent Bengali films.

SUMAN GHOSH

The professor of economics at Florida Atlantic University always nursed a passion for films. Before *Podokkhep* he made some short films and a documentary on Nobel laureate Amartya Sen, titled *Amartya Sen: A Life Re-examined*. He also worked as assistant director to Gautam Ghose in Dekha. He divides his time between teaching, writing scripts and publishing papers for the university.

सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म

खोसला का घोसला

निर्माता **सविता राज हिरेमथ** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **दिबाकर बनर्जी** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म का पुरस्कार **खोसला का घोसला** को दिया जाता है। इसमें एक भूमाफिया के खिलाफ मध्यमवर्गीय परिवार के संघर्ष का वास्तविक चित्रण किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

KHOSLA KA GHOSLA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **SAVITA RAJ HIREMATH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **DIBAKAR BANERJEE**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 2006 is given to **Khosla ka Ghosla** for an original portrayal of the middle class struggle against the real estate mafia.

सविता राज हिरेमथ

खोसला का घोसला जैसी पुरस्कार विजेता फिल्म बनाने के बाद फिल्म निर्माता सविता राज हिरेमथ अब दो और फिल्में बना रही हैं। यह युवा फिल्म निर्माता वास्तविक जीवन पर आधारित कम बजट वाली और अच्छे विषय वस्तु वाली फिल्मों को ही हाथ में लेती है । उनका मानना है कि सिनेमा लोकरंजन का एक माध्यम है । फिल्म के लोकप्रिय होने के लिए इसकी विषय-वस्तु का अच्छा होना नितांत आवश्यक है । वह अपनी भावी परियोजनाओं के लिए कुछ हालीवुड स्टूडियो के साथ बातचीत कर रही हैं।

दिबाकर बनर्जी

मध्यम वर्गीय परिवार में पले-बढ़े श्री बनर्जी जब दिल्ली के भीड़-भाड़ वाले एक व्यावसायिक इलाके में गए तो वह उस परिवेश को अपने साथ ले गए और इसी परिवेश को वह अपनी फिल्मों में उतारते हैं । उनकी ज्यादातर फिल्में दो पीढ़ियों में टकराव तथा परिवार के अंदर ही अलग-अलग जीवन मूल्यों और अलग-अलग जीवन शैलियों के कारण उत्पन्न विवादों पर आधारित है । *खोसला का घोसला* भी उक्त विषयों पर आधारित फिल्म है । गोविन्द निहलानी और यश चोपड़ा जैसी फिल्मी हस्तियों द्वारा उनकी फिल्मों की सराहना ने उन्हें और अधिक सजग कर दिया है । उन्हें विश्वास है कि वह स्वस्थ मनोरंजन और भावनात्मक लगाव वाली खोसला का घोसला जैसी भविष्य में और अधिक फिल्में बना पायेंगे और लोग उन फिल्मों को पसंद करेंगे ।

SAVITA RAJ HIREMATH

After producing the award winning *Khosla Ka Ghosla*, producer Savita Raj Hiremath has moved on to produce two more movies. The young producer believes in making films that are a leaf out of real life, with small budgets and good content. She says cinema is a medium of mass entertainment, and content is the key to a film's popular appeal. She is negotiating with Hollywood studios for her future projects.

DIBAKAR BANERJEE

He brings his middle class upbringing in a congested commercial area of Delhi to his films. The clash of generations, values and lifestyles within families are the themes that attract him and *Khosla Ka Ghosla* was inspired by this theme. Appreciation for the film from cinema giants Govind Nihalani and Yash Chopra has made this debutant sit up and take note of his cinematic talent, and he hopes to win the heart of India with more films like the quirkily humorous and emotional *Khosla Ka Ghosla*

सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म

काडा बेलाडिन्गालू

निर्माता **बेंगालुरू कंपनी** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बी.एस. लिंगदेवारु** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म का पुरस्कार **काडा बेलाडिन्गालू** को दिया जाता है। इसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि युवाओं के प्रवासन और मीडिया की अवसरवादिता का पुरानी पीढ़ी पर क्या प्रभाव पड़ता है।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

KAADA BELADINGALU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- jointly to the PRODUCERS **BENGALOORU COMPANY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to the DIRECTOR **B.S. LINGADEVARU**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 2006 is given to **Kaada Beladingalu** for highlighting the impact of youth migration and media opportunism on the older generation.

बेंगालुरु कंपनी

उत्कृष्ट लेखकों, तकनीकविदों और पत्रकारों की एक टीम ने मिलकर यह कंपनी बनायी है। काडा बेलाडिंगालू फिल्म इस कंपनी का सिनेमा क्षेत्र में उत्कृष्टता के लक्ष्य को प्राप्त करने का पहला प्रयास है।

BENGALOORU COMPANY

A team of outstanding creative writers, technicians and journalists form the Bengalooru Company. *Kaada Beladingalu* is the first step by the company on way to achieving the goal of excellence in cinema.

बी. एस. लिंगदेवरु

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले *लिंगदेवरु* कन्नड़ फिल्म और टेलीविजन के क्षेत्र में अब एक जाना माना नाम है। उन्होंने अब तक एक दर्जन से अधिक दूरदर्शन धारावाहिकों का निर्माण किया है। उनकी पहली फिल्म मौनी ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता यू. आर. अनंतमूर्ति के उपन्यास पर आधारित है। मौनी कई प्रतिष्ठित भारतीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग ले चुकी है। *काडा बेलाडिंगालू* अर्थात 'चांदनी में चमकता वन' उनकी दूसरी फीचर फिल्म है। इसमें वनों में रहने वाले ऐसे बेबस युवाओं का चित्रण किया गया है जो वहां से उजड़ रहे हैं। पर्यावरण में ह्रास इसका एक मुख्य कारण है। जाने माने फिल्म और दूरदर्शन धारावाहिक निर्देशक बी. एस. लिंगदेवरु की पहली फिल्म *मौनी* के भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया था।

B. S. LINGADEVARU

Hailing from the picturesque countryside, Lingadevaru is now an established name in the Kannada film and television industry. He has made at least a dozen popular television soaps, and opened his account in filmmaking with *Mouni*, based on a novel by Jnanapith award winner U R Ananthamurthy. *Mouni* went to several prestigious film festivals both in India and abroad. *Kaada Beladingalu*, or the moonlit forest, is his second feature film. It is a creative response to questions that haunt him including the exodus of the young from rural areas and uprooting of innocent forest people because of environmental degradation.

सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म

दृष्टांतम्

निर्माता **एम.पी. सुकुमारन नायर** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **एम.पी. सुकुमारन नायर** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म का पुरस्कार दृष्टांतम् को प्राचीन परंपरा के समयानुरूप परिवर्तित होने की एक सशक्त प्रस्तुति के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

DRISHTANTHAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **M.P. SUKUMARAN NAIR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to the DIRECTOR **M.P. SUKUMARAN NAIR**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 2006 is given to **Drishtantham** for a powerful tribute to the co modification of ancient tradition.

एम.पी. सुकुमारन नायर

एम.पी. सुकुमारन नायर ने प्रख्यात फिल्म निर्माता अडूर गोपालकृष्णन के सहायक के रूप में अपने फिल्मी जीवन की शुरूआत की । उनकी प्रमुख फिल्में हैं - *अपराहनम, कझाकम और सयनम* । ये तीनों ही फिल्में काफी सराही गई हैं और उन्हें कई राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

M.P. SUKUMARAN NAIR

M P Sukumaran Nair started his career as an assistant to renowned filmmaker Adoor Gopalakrishnan. His major works are *Aparahnam, Kazhakam,* and *Sayanam,* which were critically acclaimed and won several State and National awards.

सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म

शेवरी

निर्माता **नीना कुलकर्णी** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गजेन्द्र अहिरे** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म का पुरस्कार **शेवरी** को दिया गया है। इसमें अपने परिवार से अनबन होने के कारण एक मध्यमवर्गीय शादीशुदा औरत के संघर्ष का हृदय विदारक चित्रण किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

SHEVRI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **NEENA KULKARNI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **GAJENDRA AHIRE**

CITATION

The Award for the Best Feature Film **Shevri** in Marathi of 2006 is given to **Shevri** for an empathetic portrayal of the struggles of a middle class married woman estranged from her family.

नीना कुलकर्णी

नीना कुलकर्णी मराठी नाटक, सिनेमा और टेलीविजन की मशहूर अदाकारा हैं । टेलीविजन के एक धारावाहिक *हिना* में निभायी गई उनकी यादगार भूमिका ने उनकी शोहरत भारत के घर-घर तक पहुंचा दी है । नीना ने मुम्बई के एलफिस्टन कॉलेज से फ्रेंच भाषा के साथ आर्ट्स में डिग्री हासिल की है । थियेटर से उनका नाता तब से है जब वह मात्र नौ साल की थीं । अभिनय के क्षेत्र में उनकी पहचान एक गंभीर और प्रतिबद्ध कलाकार की है । यह दूसरी बात है कि लोग उन्हें चरित्र अभिनेत्री के रूप में ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं ।

NEENA KULKARNI

An acclaimed Marathi stage, cinema and television actress, her role in television serial *Heena* made her a household name in India.A graduate in Arts from Mumbai's Elphistone College, with French as her major, Neena's tryst with theatre began when she was just nine years old. She went on to carve out a place for herself as a serious and committed actress and has no objection to being labeled as a character-actor.

गजेन्द्र अहीरे

गजेन्द्र अहिरे महाराष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्माताओं में से एक हैं । मराठी नाटकों से शुरूआत करने वाले श्री अहिरे ने कई पारिवारिक नाटक लिखे हैं और सामाजिक विषयों पर फिल्में बनायी हैं । इनकी सर्वाधिक चर्चित फिल्म *पंधर* है जिसमें सुप्रसिद्ध पर्यावरण कार्यकर्त्ता मेधा पाटेकर ने अभिनय किया है । अहिरे ने सिनेमा और थियेटर की जानी मानी हस्ती डा0 श्रीराम लागू के साथ भी काम किया है । थियेटर से दिल भर जाने के बाद अब वह सिनेमा क्षेत्र में कार्यरत हैं । उनका विश्वास है कि रंचमंच कलाकार के रूप में उन्होंने अभिनय की जो तकनीकी बारीकियां सीखीं वह सिनेमा में उनके लिए लाभप्रद रहेंगी ।

GAJENDRA AHIRE

He is counted among the best filmmakers in Maharashtra. Rooted in regional theatre, Ahire has written several family dramas and made films on social themes, the most celebrated being *Pandhar*, in which he got noted environment activist Medha Patkar to act. Ahire has also worked with theatre and cinema giants like Dr Sriram Lagoo. Having had his fill of theatre, he wants to stick to cinema for now, and believes that the technical know-how he has acquired as a stage artiste is a great advantage for him in cinema.

सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म

पूजा पाई फूलतिए

निर्माता **पद्मिनी पूती** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गदाधर पूती** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म का पुरस्कार **पूजा पाई फूलतिए** को बच्चों में आपसी लगाव और उदात्त भावना का भावुक चित्रण करने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN ORIYA

POOJA PAEEN PHOOLATIE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **PADMINI PUTY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **GADADHAR PUTY**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Oriya of 2006 is given to **Pooja Paeen Phoolatie** for an emotional portrayal of the bonding and generosity of children.

पद्मिनी पूती

पुणे स्थित भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से स्नातक पद्मिनी को सिनेमा में अत्यधिक रुचि ने उन्हें फिल्मों की स्क्रिप्ट लिखने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने अब तक कई टेलीविजन धारावाहिकों के लिए स्क्रिप्ट लिखी है । पूजा *पाईं फूलतिए* उनकी पहली फिल्म है जिसके लिए उन्होंने स्क्रिप्ट लिखी भी है ।

PADMINI PUTY

A keen interest in cinema propelled this alumnus of the FTII into scripting, but before debuting as script writer for *Pooja Paeen Phoolatie*, she largely wrote scipts for television soaps.

गदाधर पूती

पुणे स्थित भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के छात्र रहे गदाधर पूती ने कोई दो दशक पूर्व अपनी पहली उड़िया फिल्म *आशरा आकाश* का निर्देशन किया था । यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पायी। इसके बाद वह फिल्मों में निर्देशन न करके उनका संपादन करने लगे जहां उन्हें आशातीत सफलता मिली ।

GADADHAR PUTY

Puty and good cinema are synonyms in Orissa, the filmmaker's home state in eastern India. The spiritual element in the human persona rings loud and clear in Puty's films. Puty is also known for skilled editing and has edited many well-acclaimed films inclding *Nissiddha Swapna*, *Tara* and *Khudi*. Gadadhar Puty, an FTII alumnus had directed *Ashara Aakash*, his maiden Oriya film, over two decades ago. But the film could not set the box-office ringing and Puty beat a retreat. Thereafter, it is editing rather than direction where he has been making his mark.

सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म

वारिस शाह–इश्क दा वारिस

निर्माता **साई प्रोडक्शंस** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मनोज पुंज** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म का पुरस्कार **वारिस शाह - इश्क दा वारिस** को दिया गया है। इसमें समृद्ध संगीतमय सूफी परंपरा का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

WARIS SHAH - ISHQ DA WARIS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **SAI PRODUCTIONS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **(LATE) MANOJ PUNJ**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Punjabi Language for the Year 2006 is given to **Waris Shah-Ishq da Waris** for an evocative portrayal of the rich, musical Sufi tradition.

साई प्रोडक्शंस

साई प्रोडक्शंस ने सुपर कैसेट्स और टिप्स जैसी कई संगीत कंपनियों के लिए पॉप संगीत और भक्ति संगीत के गानों का प्रोडक्शन किया है । यह कंपनी गुरुदास मान जैसे स्टार गायकों के इवेंट मैनेजमेंट का काम भी देखती है और अब तक इसने पूरी दुनिया में कई सफल संगीत शो आयोजित किए हैं ।

SAI PRODUCTIONS

The company, owned by filmmaker Manjit Maan, has produced chart- busting songs for music companies like Super Cassettes and Tips in pop and spiritual genres. It is also into event management for stars like Gurdas Maan, and has organized several successful shows all over the world.

मनोज पुंज

अपने 36 वर्ष के छोटे से जीवन में ही, मनोज पुंज ने पंजाबी सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है और उसे गुमनामी से शोहरत के मुकाम पर पहुंचाया है । उनकी फिल्म *वारिस शाह-इश्क दा वारिस* का आस्कर के लिए नामांकन पुंज के लिए शायद सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है । पुंज द्वारा निर्देशित सभी चार फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है । उनके द्वारा निर्देशित पहली फिल्म *शहीदे-मोहब्बत बूटा सिंह* को सर्वोत्तम पंजाबी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ । उसके बाद उन्होंने *जिन्दगी खूबसूरत है* का निर्देशन किया जिसे सर्वोत्तम पार्श्व गायक का पुरस्कार दिया गया । उनकी एक और फिल्म *देश होया परदेश* को सर्वोत्तम पंजाबी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ । इस फिल्म को अंग्रेजी में *'पॉलिटिकल असाइलम'* नाम से बनाया गया है । पुंज कहानी सुनने-सुनाने में काफी दिलचस्पी रखते थे और अभिनय की बारीकियों पर काफी ध्यान देते थे ।

MANOJ PUNJ

In a tragically short life of 36, Punj made his mark on Punjabi cinema, bringing it out of anonymity into glory. *Waris Shah's* nomination for Oscar was perhaps the biggest tribute to Punj. All the four films directed by Punj bagged National awards. The first Punjabi directorial *Shaheed-E-Mohabbat Boota Singh* won the Best Punjabi Film award and the next, *Zindagi Khoobsoorat Hai* was awarded for the Best Playback Singer. *Des Hoyaa Pardes* bagged the National Award for Best Punjabi Film.The film was also made in English as *Political Asylum.* Punj had a penchant for story telling, attention to detail in acting and a very personal brand of direction.

सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म

वैयिल

निर्माता **एस. शंकर** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **जी. वसंत बालन** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म पुरस्कार **वैयिल** को एक संकटग्रस्त परिवार में बच्चे के प्रति लगाव के हृदय विदारक चित्रण के दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

VEYIL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **S. SHANKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **G. VASANTA BALAN**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 2006 is given to **Veyil** for a moving portrayal of sibling bonding in a turbulent family.

एस शंकर

लोकप्रिय निर्देशक, निर्माता और फिल्म लेखक एस. शंकर को सिनेमा में महारथ हासिल है। बाक्स ऑफिस पर हिट रहने वाली उनकी फिल्में अक्सर सामाजिक विषयों पर केन्द्रित होती हैं । उनकी फिल्में तेलुगू और हिन्दी सहित दूसरी भाषाओं में भी डब की जा चुकी है । उन्होंने अपने फिल्मी जीवन की शुरूआत *जेंटलमैन* से की थी । इसके बाद *जीन्स, काधलन* और *इंडियन* सहित उनकी कई सुपर हिट फिल्में आयीं । उनकी एक 'साइकोलॉजिकल थ्रिलर' *एन्नियन* काफी हिट रही । इसके बाद रजनीकांत की नायक भूमिका वाली फिल्म *'शिवाजी - द बॉस'* इतनी जबर्दस्त हिट हुई कि टिकटों की बिक्री में इसने सारे रिकार्ड तोड़ दिए ।

S SHANKAR

A popular director, producer and screenwriter, he is a master of cinema. His commercially successful films echo social themes and he is credited with delivering expensive, high-end CGI in most of his films. His movies have been dubbed into other languages including Telugu and Hindi.Starting his career with *Gentleman*, he has made many blockbusters including *Jeans, Kadhalan* and *Indian. Anniyan*, Shankar's psychological thriller was a great hit and *Sivaji : The Boss* with super star Rajnikanth in the lead role was an Indian record breaker for the sale of tickets.

जी. बसंत बालन

बसंत बालन ने एस. पिक्चर्स को तमिल सिनेमा के सर्वोत्तम प्रोडक्शन हाऊस के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। एस. पिक्चर्स हमेशा उत्तम गुणवत्ता वाली फिल्में बनाते हैं जो बाक्स ऑफिस पर भी सफल हो सकें। बसंत बालन एक ऐसे निर्देशक हैं जो बेहतरीन फिल्म बनाने की बारीकियों को अच्छी तरह समझते हैं । उनकी फिल्मों के पात्र सशक्त और अपनी अलग छाप छोड़ने वाले होते हैं ।

G. VASANTA BALAN

Vasanta Balan has vindicated the reputation of S Pictures as one of the best production houses in Tamil cinema with *Veyil*. They make commercially viable quality films, and Balan is a director who understands the nuances of making a realistic film with well-etched characters and a strong screenplay.

सर्वोत्तम तेलुगु फीचर फिल्म

कमली

निर्माता **अपूर्व चित्र** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के.एन.टी. शास्त्री** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम तेलुगु फीचर फिल्म पुरस्कार **कमली** को दिया गया है। इसमें बालिका भ्रूण हत्या तथा शिशु बदलने के विरूद्ध एक वंचित वर्ग की महिला के अदम्य साहस का जीवंत चित्रण किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN TELUGU

KAMLI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 50,,000/- each to PRODUCER **APOORVA CHITRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1.00.000/- to DIRECTOR **K.N.T. SASTRY**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 2006 is given to **Kamli** for a convincing portrayal of the courage of a disadvantaged woman in her fight against female foeticide and child swapping.

अपूर्व चित्र

दो वर्ष पूर्व बी.सी. हरिचरन प्रसाद और पी वी सुकन्या द्वारा संस्थापित अपूर्व चित्र ऐसी फिल्में बनाना चाहता है जो भरपूर मनोरंजन के साथ-साथ लोगों को बांध सकें और उन्हें सोचने पर मजबूर कर सकें । वह मौलिक और नवीन फिल्में प्रस्तुत करने वाले फिल्म निर्माताओं को ज्यादा तरजीह देता है । इस कंपनी के पहले प्रोडक्शन *कमली* को पुरस्कार प्राप्त हुआ है । गैर सरकारी संगठन 'क्राई' ने हाल ही में सिएटल स्थित माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में इस फिल्म का प्रदर्शन किया है ।

APOORVA CHITRA

Founded by B C Hari Charan Prasad and P V Sukanya two years ago, the company aims to produce engaging, entertaining and thought-provoking films made by original and innovative filmmakers. *Kamli*, its very first production, has won an award. An NGO, Child Rights and You (CRY), organized screening of the film at the Microsoft Office in Seattle.

के.एन.टी. शास्त्री

के एन टी शास्त्री फिल्म समीक्षक, स्तंभकार, पटकथा लेखक और फिल्म निर्माता सब कुछ हैं । उनकी पहली वृत्त चित्र फिल्म *सुरभि* कई फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की गयी और फिल्म समीक्षकों ने उसकी भूरि-भरि प्रशंसा की । शास्त्री ने *दासी* और *मा ओरु* जैसी पुरस्कार विजेता फिल्मों की पटकथा लिखी है । सादगी पसंद शास्त्री का नाम फिल्म पत्रकारिता में बड़े आदर के साथ लिया जाता है ।

K N T SASTRY

A film critic, columnist, script- writer and film-maker, Sastry wears many caps and each one fits him well. *Surabhi*, his first documentary, traveled to many film festivals and received rave reviews. He scripted the award winning *Daasi* and *Maa Ooru*. A man of simple living he is a celebrated name in film journalism.

सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म

क्वेस्ट

निर्माता **अमोल पालेकर** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अमोल पालेकर** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म पुरस्कार **क्वेस्ट** को दिया गया है। यह एक ऐसी फिल्म है जिसमें सेक्स से संबंधित मुद्दों का सशक्त चित्रण है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

QUEST

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **AMOL PALEKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **AMOL PALEKAR**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in English of 2006 is given to **Quest** for a bold film addressing issues of sexuality.

अमोल पालेकर

अमोल पालेकर, अपने गृह राज्य महाराष्ट्र में 'थियेटर ऑफ ऐबसर्ड' के प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने *गोलमाल, छोटी सी बात* और *नरम-गरम* जैसी लोकप्रिय हिन्दी फिल्मों में बहुत ही शानदार अभिनय किया है। एक निर्देशक के रूप में पालेकर की तब अलग पहचान बनी जब उन्होंने *'पहेली'* फिल्म को इतने अच्छे ढंग से निर्देशित किया कि उसे वर्ष 2006 में आस्कर की सर्वोत्तम विदेशी फिल्म श्रेणी में भारत की आधिकारिक फिल्म के रूप में नाम निर्देशित किया गया।

AMOL PALEKAR

The man who introduced the "theatre of the Absurd" to Maharashtra, his home state, has acted in many popular films including *Golmaal, Choti Si Baat* and *Naram Garam*. Palekar made a mark as director when *Paheli*, his debut directorail venture, was nominated as India's official entry for Oscar's Best Foreign Film in 2006.

सर्वोत्तम कोंकणी फीचर फिल्म

अंतर्नाद

निर्माता **राजेन्द्र तालक किएशंस** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजेन्द्र तालक** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम कोंकणी फीचर फिल्म पुरस्कार **अंतर्नाद** को दिया गया है। इसमें एक कलाकार और उसकी बेटी के बीच अंतर्विरोधी संबंधों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN KONKANI

ANTARNAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **RAJENDRA TALAK CREATIONS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **RAJENDRA TALAK**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Konkani of 2006 is given to **Antarnad** for a sensitive portrayal of an artist and her conflicting relationship with her daughter.

राजेन्द्र तालक

राजेन्द्र तालक अपने काम के प्रति काफी निष्ठावान रहते हैं। वह निरर्थक साज सज्जा की ओर ज्यादा ध्यान न देकर कहानी के भाव पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं और उसमें ऐसी जीवंतता लाते हैं कि फिल्म एक यादगार अनुभव बन जाती है। इनकी फिल्म *आलीशा* को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

RAJENDRA TALAK

He has done theatre, produced music albums, is associated with several educational institutions of repute and produced an award winning Konkani telefilm Shitu and Aleesha which won him the National Award for the best film and best direction. He was also associated with the International Film Festival of India for three years. Talak's sincerity to his subject. Without meandering too much on the frills and typical filmy Goan concepts, Talak concentrates on the soul of the story, thereby breathing life into it and making it an enjoyable experience.

सर्वोत्तम तुलु फीचर फिल्म

कोट्टि चेन्नया

निर्माता **आर. धनराज** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **आनंद पी. राज** को रजत कमल तथा रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम तुलु फीचर फिल्म पुरस्कार **कोट्टि चेन्नया** को जाति संबंधी सुधारों और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN TULU

KOTTI CHANNAYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to PRODUCER **R. DHANARAJ**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 1,00,000/- to DIRECTOR **ANAND P. RAJ**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Tulu of 2006 is given to the film **KOTTI CHANNAYA** for promoting caste reform and integration.

आर धनराज

पेशे से ग्रैनाइट निर्यातक और सामाजिक कार्यकर्त्ता धनराज ने पहले पहल एक फीचर फिल्म *चन्दू गिड* में अभिनय किया था । इसके भाद उन्होंने तुलु भाषा में अपनी पहली फिल्म *कोटि चेन्नया* बनायी । इस फिल्म ने उन्हें काफी ख्याति दी और वह तुलु क्षेत्र में बतौर हीरो स्थापित हो गए । इस फिल्म की पटकथा भी धनराज ने ही लिखी है ।

R DHANARAJ

An active social worker and a granite exporter by vocation, he acted in a feature film, *Chandu Gid*. By making the first film in Tulu, *Koti Chennaiah* Dhanaraj has brought great laurels to the language and a folk hero of the region. The story of the film was also scripted by Dhanaraj.

आनन्द पी राजू

विज्ञान में स्नातक आनन्द पी. राजू का फिल्मी जीवन काफी लंबा और रोचक रहा है । अभ तक उन्होंने बीस से अधिक फिल्में और धारावाहिक निर्देशित किए हैं । तमिल और हिन्दी सहित पांच भाषाओं में परास्नातक राजू ने कोटि चेन्नैया जैसी पुरस्कार विजेता फिल्म बनाकर तुलु सिनेमा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है ।

ANAND P RAJU

He has come a long and interesting way off since gradating in science. He has directed 20 films and television serials in the last as many years. A master of five languages including Tamil and Hindi, Raju has added a feather to the cap of Tulu cinema with the award winning *Koti Chennaya*.

निर्णायक मंडल ने निम्नलिखित कलाकारों का विशेष उल्लेख किया है:

तिलकन तथा प्रोसेनजित् चटर्जी

- **एकांतम (मलयालम)** के लिए **तिलकन** का - जिन्होंने मान-सम्मान से बुढ़ापे की ओर बढ़ रहे व्यक्ति की जीवंत भूमिका अदा की है।

तथा

- **दोसर (बंगला)** के लिए **प्रोसेनजित् चटर्जी** का - जिन्होंने एक ऐसे व्यक्ति की सशक्त भूमिका निभाई है जो शारीरिक रूप से अपंग होने के बावजूद अपने भावों को सुस्पष्ट ढंग से व्यक्त कर पाता है।

THE JURY MAKES A SPECIAL MENTION OF ACTORS

THILAKAN and PROSENJIT CHATTERJEE

SHRI THILAKAN for **EAKANTHAM (Malayalam)** for his evocative portrayal of a man ageing with grace and dignity and **Thailakan**

SHRI PROSENJIT CHATTERJEE for **DOSAR (Bengali)** for his effective portrayal of a man, emotionally expressive despite his physical immobility.

प्रोसेनजित्

अपने बंगला प्रशंसकों द्वारा प्यार से बुम्बा दा कहे जाने वाली प्रोसेनजित् मशहूर अभिनेता विश्वजीत के बेटे हैं । उनकी पहली फिल्म *चौट्टा जिग्नासा* थी । वह बंगला सिनेमा के स्टार अभिनेता है और फिल्म इंडस्ट्री में अपने सहयोगियों के बीच उनका बड़ा रूतबा है ।

PROSENJIT

Affectionately called Bumba Da by his Bengali fans, he is the son of celebrity actor Biswajeet and debuted in *Chotto Jignasa*. He has been a leading star of Bengali cinema and is held in great awe by his colleagues in the industry.

तिलकन

तिलकन मलयालम सिनेमा जगत के वरिष्ठ अभिनेता हैं। एकान्तम् से पूर्व *इरक्कल* एवं *पेरूमतच्चन* इत्यादि फिल्मों में इनके अभिनय की दर्शकों ने भरपूर सराहना की। इनकी आने वाली उल्लेखनीय फिल्मों में *विलापंगलकपुरम, आयुधम्, अली बाबा, वन वे टिकट* इत्यादि शामिल हैं। इन्हें केरल राज्य द्वारा अभिनय के लिए कई बार पुरस्कृत किया जा चुका है।

THILKAN

Thilkan is a great actor of Malayalam cinema. He has won applause for his acting in *Irakkal* and *Perumthachan*. *Vilapangalkappuram, Ayudham Ali Baba, One Way Ticket* etc. are his notable forthcoming films. He has been awarded many times by Kerala State Government for his acting.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए।

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

सर्वोत्तम भोजपुरी फिल्म

Awards not given

Best Film on Environment Conservation/Preservation

Best Film in Bhojpuri

गैर कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म

बिशर ब्लूज़

निर्माता **अमिताभ चक्रवर्ती** को स्वर्णकमल एवं रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अमिताभ चक्रवर्ती** को स्वर्णकमल एवं रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म पुरस्कार **बिशर ब्लूज़** को दिया गया है। इसमें एक संवेदनशील विषय को काव्यमय ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें इस किंवदंती का पर्दाफाश किया गया है कि इस्लाम की पूजा सब जगह एक जैसी है और इसके अलग-अलग रूप नहीं होते।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

BISHAR BLUES

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.1,00,000/- to PRODUCER **AMITABH CHAKRABORTY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.1,00,000/- to DIRECTOR **AMITABH CHAKRABORTY**

CITATION

The Award for the Best Non Feature Film of 2006 is given to **"BISHAR BLUES"** for courageously treating a sensitive subject in a poetic form. It demolishes the myth that the practice of Islam is monolithic and not multifaceted.

अमिताभ चक्रवर्ती

पश्चिम बंगाल के फकीरों के साथ यह उनका आत्मिक लगाव ही था जिसने उन्हें *बिशर ब्लूज* फिल्म बनाने के लिए प्रेरित किया । ये फकीर संस्थागत धर्म के एकदम खिलाफ है और वे मानव मात्र में ही देवत्व के दर्शन करते हैं । इस फिल्म को बनाने के लिए चक्रवर्ती तीन वर्षो तक बीरभूम, मुर्शिदाबाद, नाडिया और बर्दवान की खाक छानते रहे और उन्होंने सैकड़ों फकीरों से मिलकर जानकारी एकत्र की ।

AMITABH CHAKRAVARTY

It was his fascination with the fakirs/ mendicants of West Bengal that led him to make *Bishar Blues*.The fakirs stand completely against institutionalised religion and instead locate divinity in human beings.Chakravarty traversed through Birbhum, Murshidabad, Nadia and Burdwan in West Bengal and interacted with scores of fakirs for three years to make the film.

निर्देशक की पहली सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म

अन्दियुम

निर्माता **एन. दिनेश राजकुमार** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **जैकब वर्गीज** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का निर्देशक की पहली सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म पुरस्कार **अन्दियुम** को सिनेमा माध्यम पर ऐसी जबरदस्त पकड़ दर्शाने के लिए दिया गया है जो कि पहली बार फिल्म बनाने वाले व्यक्ति की समझ से कहीं अधिक है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

'ANDHIYUM'

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER: **N DINESH RAJKUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR: **JACOB VARGHESE**

CITATION

The Award for the Best First Non Feature Film of 2006 is given to **'ANDHIYUM'** for displaying command over the medium that goes far beyond the level expected from a first film.

एन. दिनेश कुमार

ऑडियो-विजुअल पत्रकार दिनेश कुमार एक ऐसे कहानीकार हैं जो लाइट और कैमरा के माध्यम से अलग-अलग शैली और संरचना में कहानी पेश करने की संभावना तलाशते रहते हैं । फिल्म टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा करने के बाद सिर्फ 8 वर्ष की अवधि में उन्होंने कई प्रोमो, म्यूजिक वीडियो और टेलीविजन फीचर तैयार किए हैं ।

N DINESH KUMAR

An audio-visual journalist, he is a storyteller who loves to explore diverse styles and formats through lights and camera. Starting at just 18 after doing a diploma in film technology, he has made several promos, music videos and television features before accolades came his way through *Andhiyum* of which he is the producer.

जैकब वर्गीस

बत्तीस वर्षीय फिल्म निर्देशक जैकब वर्गीस ने पामेला रुक्स और राजीव मेनन जैसे फिल्म निर्माताओं से काम सीखा है। मलयालम फिल्म *अन्दियुम* उनके द्वारा निर्देशत पहली फीचर फिल्म है । इसके पहले वह सात फिल्मों में बतौर सहायक निर्देशक कार्य कर चुके हैं । यह फिल्म भारत सहित कई दूसरे देशों के फिल्म समारोहों में शामिल हुई है और इसे कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

JACOB VERGHESE

This 32-year-old director trained under filmmakers like Pamela Rooks and Rajiv Menon. He was associate director for 7 films before he directed his first feature film, *Andhiyum*, in Malayalam. The film has traveled to major film festivals in India and abroad and has also won awards.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म

यात्रा जीवन, जीवन यात्रा

निर्माता **कैलाश चन्द्र भूयन** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **कपिलास भूयन** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम **कला/सांस्कृतिक फिल्म** पुरस्कार **यात्रा जीवन, जीवन जात्रा** को दिया जाता है। यह पुरस्कार उड़ीसा की जात्रा के लोक रूप को व्यावसायिक ढंग से प्रस्तुत करने और उसे मुख्य धारा से जोड़ने के सृजनात्मक कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

"JATRA JEEVAN JEEVAN YATRA"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER : **KAILASH CHANDRA BHUYAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR : **KAPILAS BHUYAN**

CITATION

The Award for the Best Arts/Cultural film of 2006 is given to **"JATRA JEEVAN JEEVAN YATRA"** for creatively presenting the transformation of Oriya Jatra from a folk form to a highly commercialized and mainstream form.

कैलाश चन्द्र भूयन

भुवनेश्वर के फिल्म निर्माता कैलाश चन्द्र भूयन की - *ब्रीदिंग विदाउट एअर* - पहली डिजीटल फिल्म है । इसे पेरिस फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म पुरस्कार के साथ-साथ न्यूयार्क फिल्म समारोह में निर्णायक मंडल के विशेष उल्लेख पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । इस फिल्म ने कई दूसरे प्रतिष्ठित फिल्म समारोहों में भाग लिया है ।

KAILASH CHANDRA BHUYAN

Kailash Chandra Bhuyan is a Bhubaneswar-based producer of digital films whose debut production *Breathing Without Air,* a 23-minute short ducu-fiction film (2003) received the Best Short Film Award at Festival du Cinema de Paris (2004) and Jury's Special mention at New York Short Film Festival (2004). Besides, the film was also an official selection in various national and international film festivals.

कपिलस भूयन

भुवनेश्वर के स्वतंत्र पत्रकार और लेखक कपिलस भूयन एक निर्देशक और नाटककार भी हैं । *ब्रीदिंग विदाउट एअर* उनके द्वारा निर्देशित पहली फिल्म है । 23 मिनट की इस फिल्म को पेरिस फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म पुरस्कार के साथ-साथ न्यूयार्क फिल्म समारोह में निर्णायक मंडल के विशेष उल्लेख पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । इस फिल्म ने कई दूसरे प्रतिष्ठित फिल्म समारोहों में भाग लिया है ।

KAPILAS BHUYAN

Kapilas Bhuyan, is a Bhubaneswar-based acrredited freelance journalist, writer and filmmaker. As a theatre director and playwright he has been involved with Oriya theatre for over two decades. He is one of the core team members of Bring Your Own Film Festival (BYOFF), an international independent film festival being held every year on the beaches of Puri in Orissa.

पर्यावरण संरक्षण/अनुरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

कल्प वृक्ष - लीगेसी ऑफ फारेस्ट्स

निर्माता **माइक पांडेय** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **नीना सुब्रमणि** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का पर्यावरण संरक्षण/अनुरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार **कल्प वृक्ष - लीगेसी ऑफ फारेस्ट्स** को दिया जाता है। इस फिल्म में वन और मानव जीवन के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डालते हुए मौजूदा वनों की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण पर बल दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM (including method and process of science, contribution of Scientists, etc.)/ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION FILM (including awareness)

'KALPAVRIKSHA-LEGACY OF FORESTS'

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER: **MIKE PANDEY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR: **NINA SUBRAMANI**

CITATION

The Award for the Best Environmental Film of 2006 is given to **"KALPAVRIKSHA-LEGACY OF FORESTS"** for bringing out the symbiotic relationship between forests and human life and underlining the need for conserving the rich bio diversity still existing in our remaining forests.

माइक पाण्डेय

पर्यावरण कार्यकर्त्ता और वन्य जीव फिल्म निर्माता माइक पाण्डेय अपनी वृत्त चित्र फिल्मों के लिए अब तक तीन ग्रीन आस्कर पुरस्कार जीत चुके हैं । वह प्रत्येक रविवार दूरदर्शन पर लोकप्रिय पर्यावरण कार्यक्रम *अर्थमैटर्स* के प्रस्तुतकर्ता हैं । इस कार्यक्रम को चार अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों सहित फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान गोल्डेन जिराफ प्राप्त हुआ है । वर्तमान मे माइक पाण्डेय भारत के जल संसाधनों को बचाने और ग्रामीण स्वास्थ्य पर काम कर रहे हैं ।

MIKE PANDEY

Pandey, environment activist and wildlife filmmaker who has won three Green Oscars for his documentaries, hosts the popular vernacular environmental capsule *Earth Matters* on Doordarshan every Sunday. The programme, which has bagged four international awards, was given the Golden Giraffe, the highest civilian honour in France, in April 2008. With 8 million viewers watching the show and 4000 people writing emails and sending post cards to him Pandey is a household name as an environment activist. He is preoccupied with saving India's water resources and rural health now.Pandey believes the three majors eco-hazards that confront India are water pollution, ambient air and environment pollution and rapid depletion of wildlife species.

नीनासुब्रमणि

वह वन्यजीव और पर्यावरण वृत्तचित्र फिल्म निर्माता हैं । वह चेन्नई में रहती है । वह ग्रीन पीस द्वारा निर्मित वृत्त चित्र फिल्म *माइल्स टू गो* की लेखिका और निर्देशक हैं । उन्होंने भारत के सात राज्यों में केरल में एलूर की केमिकल फैक्टरियों, उड़ीसा में वनरहित पहाड़ों और ऐश पॉण्डों से लेकर झारखण्ड में जादूगोड़ा के यूरेनियम खानों की यात्रा की तथा विकलांग बच्चों, बीमार बूढ़ों, गंदे पानी, प्रदूषित हवा तथा उसर जमीनों का फिल्मांकन किया । इससे पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त करने के कठिन कार्य के बारे में पता चलता है । उनकी अन्य फिल्मों में *'केरल - इन गॉड्स ओन कंट्री'* है । यह फिल्म 28 मिनट की है जिसमें केरल में कासरगौड़ के लोगों पर कीटनाशक एन्डोसल्फान के प्रभाव को दिखलाया गया है ।

NINA SUBRAMANI

She is a wildlife and environment documentary filmmaker based in Chennai. She is the writer and director of *Miles to Go*, a documentary film produced by Greenpeace. As she traveled through seven states of India, from the chemical factories of Eloor in Kerala to dust hills and ash ponds in Orissa, and the uranium mines of Jadugoda in Jharkhand, her camera captured crippled children, sick adults, filthy water, foul air and dead lands, revealing the mammoth task of cleaning up the environment. Among her other films is a 28-minute film about Kerala—*In God's Own Country*—which shows the havoc the pesticide Endosulfan has wreaked on the people of Kasargod in Kerala.

सर्वोत्तम प्रोत्साहन फिल्म

रॉनदेवू विद् टाइम

निर्माता **मध्य प्रदेश माध्यम** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजेन्द्र जांग्ले** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का **सर्वोत्तम प्रोत्साहन फिल्म** पुरस्कार **रॉनदेवू विद् टाइम** को मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत की भावनात्मक झांकी प्रस्तुत करने के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM (to cover tourism, exports, crafts, industry, etc.)

RENDEZVOUS WITH TIME

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER **MADHYA PRADESH MADHYAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR **RAJENDRA JANGLAY**

CITATION

The Award for the Best Promotional film of 2006 is given to **RENDEZVOUS WITH TIME** for sensitively evoking the spirit of the cultural heritage of Madhya Pradesh.

मध्य प्रदेश माध्यम

यह मध्य प्रदेश सरकार की मल्टीमीडिया सरकारी एजेन्सी है । यह फिल्म निर्माण का काम करती है । इसके द्वारा निर्मित अधिकतर फिल्में सामाजिक, सांस्कृतिक और विकास संबंधी विषयों पर केन्द्रित हैं । भारत के विख्यात फिल्म निर्माताओं में राजेन्द्र जांग्ले की गिनती होती है । उन्हें 'राग ऑफ रिवर नर्मदा' के लिए इंडियन क्रिटिक अवार्ड प्रदान किया गया है ।

राजेन्द्र जांग्ले

राजेन्द्र जांग्ले एक अनुभवी फिल्म निर्माता और छायांकनकर्त्ता हैं । उनकी कर्मभूमि भोपाल हैं । उन्होंने पर्यटन, खेल-कूद, शिक्षा, संस्कृति, भारत में राजमार्ग और पर्यावरण जैसे विविध विषयों पर 100 से भी अधिक वृत्तचित्र बनाए हैं । वह दो दशकों से भी अधिक समय से मध्यप्रदेश सरकार की मल्टी मीडिया कंपनी मध्य प्रदेश माध्यम से जुड़े हैं । वह फिल्म परियोजना की संकल्पना करते हैं, उसका निर्माण करते हैं तथा निर्देशन भी करते हैं । उनकी अनेक फिल्में मॉस्को, ओबेर हाउसेन तथा कार्लोवी वेरी जैसे अंनराष्ट्रीय फिल्मोत्सवों में दिखाई गई हैं । उन्हें अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है ।

MADHYA PRADESH MADHYAM

This is a multi-media official agency of the government of Madhya Pradesh involved in filmmaking. Most of the films produced by it relate to social, cultural and development themes. Among its most notable staff is Rajendra Janglay who has been awarded the Indian Critic Award for Raga of River Narmada and is among the best known filmmakers in India.

RAJENDRA JANGLAY

Based at Bhopal, he is a seasoned filmmaker and cinematographer having made over 100 documentaries on subjects as diverse as tourism, sports, education, culture, the highways of India and environment. Raga of River Narmada is a fascinating flow of visuals highlighting the river in its glory.He has been with a government of Madhya Pradesh multi-media compnay, Madhya Pradesh Madhyam, for over two decades where he conceptualizes, produces and directs film projects, and many of his films have travelled to international film festivals at Moscow, Oberhausen and Karlovyvary. He has been honored with many prestigious awards.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म

जैविक खेती

निर्माता **एग्रो इंडिया** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मृणालिनी रवीन्द्र भोंसले** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का **सर्वोत्तम कृषि फिल्म** पुरस्कार **'जैविक खेती'** को दिया गया है। इसमें जैविक खेती की आवश्यकता और उपायों संबंधी सीधी, सरल और विश्वसनीय जानकारी दी गई है।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURE FILM (to include subject related to and allied to agriculture like animal husbandry, dairying, etc.)

"JAIVIK KHETI"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50, 000/- to PRODUCERS **AGRO INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR **MRUNALINI RAVINDRA BHOSALE**

CITATION

The Award for the Best Agriculture film of 2006 is given to **JAIVIK KHETI** for its direct and convincing approach to the need and methods of organic farming.

एग्रो इंडिया

एग्रो इन्डिया ने कृषि विषय पर अब तक 13 फिल्मों का निर्माण किया है । यह भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन करती है । इसने कृषि पर पहला वीडियो कैसेट बनाया और भारत की पहली पहली फार्मर्स अल्मानैक भी एग्रो इंडिया द्वारा तैयार की गई। किसानों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता इसी से स्पष्ट होती हैं कि इसने भारतीय भाषाओं में विशेष किसान कैलेण्डर तैयार किया है ।

AGRO INDIA

The organisation has made 13 films on agriculture in as many years of its existence, and organises national and international seminars on agriculture that drives the Indian economy. It produced the first video cassette on agriculture which has sold 80,000 copies. India's first farmer's almanac is also a product of Agro India and sells 200,000 copies. Its commitment to the farmers is evident in its innovative production of a special farmers' calendar in 9 Indian languages.

मृणालिनी रवीन्द्र भोंसले

एफ टी टी आई, पुणे से शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने विभिन्न भाषाओं में कृषि विषयों पर 23 वीडियो फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया । उनके कैमरे में पशुधन, फसलों, सब्जियों और फूलों की तस्वीरों को कैद किया गया है । उन्होंने संतुलित कृषि पर एक फिल्म भी बनाई है जिसकी 50,000 कॉपियां बिक चुकी हैं ।

MRUNALINI RAVINDRA BHOSALE

A product of the FTII, Pune, she has produced and directed 23 video films on agricultural subjects in various languages. Livestock, crops,vegetables and flowers take on a unique personality under her camera gaze. She has also produced a film on sustainable farming that has sold over 50,000 copies.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

चिल्ड्रेन ऑफ नोमैड्स

निर्माता **लिओ आर्ट्स कम्यूनिकेशंस** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मीनाक्षी और विनय राय** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का **सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म** पुरस्कार **चिल्ड्रेन ऑफ नोमैड्स** को दिया जाता है। इसमें घुमन्तू जातियों के बच्चों ने क्या कुछ खो दिया है, इस ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। इसके अलावा इस फिल्म में एक शहरी बच्चे और गांव में रहने वाले घुमन्तू जाति के बच्चों के एक ग्रुप के बीच आपसी व्यवहार को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (such as prohibition, women and child welfare and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped, etc.)

CHILDREN OF NOMADS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER: **LEOARTS COMMUNICATION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR DUO **MEENAKSHI** and **VINAY RAI**

CITATION

The Award for the Best Film on Social issues of 2006 is given to **CHILDREN OF NOMADS** for gently drawing attention to the deprivation experienced by the children of nomads and for creating sensitive interaction between an urban child and a group of nomadic rural children.

लिओआर्ट्स कम्युनिकेशन्स

लिओ आर्ट्स कम्युनिकेशन्स शिक्षा और सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक विषयों पर फिल्म बनाने के लिए विख्यात है । इसे 32 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं । यह कंपनी युवा दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्म बनाने के लिए जानी जाती है ।

LEOARTS COMMUNICATION

With 32 national and international awards under its belt, Leonart Communications is known for making films on education and socially relevant themes. The company is known for its unique style of handling subjects for a young audience.

मीनाक्षी और विनय राय

बच्चों को अपना दर्शक मानते हुए इन दोनों फिल्म निर्माताओं को नए सिनेमैटिक ग्रामर के सृजन का श्रेय जाता है । वे शैक्षणिक कार्यशालाएं भी आयोजित करते हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उन्हें बुलाया जाता है । वे कैरो अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में निर्णायक मंडल के सदस्य थे । उन्होंने एनिमेशन पर एक पुस्तक भी लिखी है ।

MEENAKSHI AND VINAY RAI

With children as their target audience, the filmmaker duo are credited with creating a new cinematic grammar. They also hold education workshops and are regularly invited to international platforms, have served on the jury of the Cairo International Children Film Festival and have authored a book on animation.

सर्वोत्तम शैक्षणिक/प्रेरक/अनुदेशात्मक फिल्म

फाइलेरियासिस

निर्माता **फिल्म प्रभाग** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **एम. इलांगो** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम शैक्षणिक/प्रेरक/अनुदेशात्मक फिल्म पुरस्कार **फाइलेरियासिस** को दिया गया है। इस फिल्म में स्वास्थ्य संबंधी एक बहुत बड़ी समस्या फाइलेरियासिस के उपचार से संबंधित जानकारी दी गई है और बताया गया है कि इस बीमारी का निदान तो नहीं है लेकिन इसे नियंत्रित किया जा सकता है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/MOTIVATIONAL/ INSTRUCTIONAL FILM

"FILARIASIS"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER: **Films Division**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR: **M. ELANGO**

CITATION

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional film of 2006 is given to **"FILARIASIS"** for a straight forward and matter- of- fact treatment of a major health problem that has no cure but that can be controlled.

फिल्म प्रभाग

वृत्तचित्र निर्माण के मामले में फिल्म प्रभाग विश्व का पुराना और सर्वाधिक बड़ा प्रभाग है। इसने हाल ही में अपनी 60वीं वर्षगांठ मनाई है। भारत के दृश्य विश्वकोष नाम से विख्यात फिल्म प्रभाग एक प्रमुख मीडिया एकक है और इसने भारत में वृत्तचित्र फिल्म आंदोलन को एक संगठित मंच दिया है। इसमें संपादन कक्ष, रिकार्डिंग थियेटर एनिमेशन स्टूडियो, प्रिव्यू थियेटर, कैमरा और वीडियो उपकरणों सहित सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। फिल्म प्रभाग 1990 से लगातार वृत्तचित्र, लघु फिल्म तथा कार्टून फिल्म हेतु मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों का सफलता पूर्वक आयोजन करता रहा है।

एम. एलांगो

कला में परास्नातक होने के साथ-साथ एलांगों ने फिल्म निर्देशन और पटकथा लेखन में डिप्लोमा किया है । वह फिल्म प्रभाग में बतौर निर्देशक कार्य कर रहे हैं । उन्होंने कुछ वृत्त चित्र और छोटी-छोटी फीचर फिल्में भी बनाई हैं ।

उनकी प्रमुख फिल्में हैं - *वेत्रि मुझाक्कम, पुधुउदयम, वाझु वाजाविधु, देशभक्तम, नाओर एक्सप्रेस और थाये उनकाहा ।*

FILMS DIVISION

Films Division, ranked among the oldest and largest documentary producers in the world, has celebrated its 60th anniversary. Acclaimed as the 'Visual Encyclopedia on India' this principal media unit has provided an organized platform for the documentary film movement in India. It is equipped with all modern facilities including editing suites, recording theatres, animation studios, preview theatres, cameras and video equipments which are available on hire. A milestone FD has achieved is by successfully organizing the Mumbai International Film Festivals for Documentary, Short & Animation Films (MIFF) continuously from 1990.

Films Division has organized more than 90 film festivals in 2006–08 including the first ever Swatantrata Filmotsav in Delhi.

M. ELANGO

Elango has obtained a master's degree in Arts& Diploma in Film Direction and Screenplay writing. He is working with Films Division as Director and has made a few documentaries and featurettes.

His films include: *Vetri Muzhakkam (Voice of Victory), Pudhu Udhyam (1997), Vazhu Vazavidhu (Live & Let Live) (1999), Desabaktham (patriot) (2000), Naore Express (2000), Thaye Unakaha (For You Mother) (2003).*

सर्वोत्तम खोजी फिल्म

मेरे देश की धरती

निर्माता **राजीव मेहरोत्रा, पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **सुमित खन्ना** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम खोजी फिल्म पुरस्कार **'मेरे देश की धरती'** को दिया जाता है। इसे यह पुरस्कार कृषि उत्पादन में कमी आने तथा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशियों के प्रयोग के कारण खाद्य श्रृंखला के विषाक्त होने संबंधी समस्या की गहराई से जांच पड़ताल के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

"MERE DESH KI DHARTI"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER **RAJIV MEHROTRA, PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR **SUMIT KHANNA**

CITATION

The Award for the Best Investigative Film of 2006 is given to **MERE DESH KI DHARTI** for exploring in depth the problem of falling agro-production and poisoning of the food chain due to use of chemical fertilizers and chemical pesticides.

राजीव मेहरोत्रा

राजीव मेहरोत्रा पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी हैं । इस ट्रस्ट ने अब तक लगभग 300 वृत्तचित्र बनाए हैं जिन्हें 150 अंतराष्ट्रीय समारोहों में 30 पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं । मेहरोत्रा एक जाने माने फिल्म निर्माता हैं । इन्होंने श्री रामकृष्ण और दलाईलामा सहित बौद्ध भिक्षुओं पर एक टेलीविजन सीरीज बनायी है । इन्हें टेलीविजन और रेडियो प्रोडक्शन के सभी पहलुओं का विशद अनुभव है । मेहरोत्रा दूरदर्शन पर *इन कन्वरसेशन* नाम से दो दशकों से भी अधिक समय से एक 'टॉक शो' चला रहे हैं ।

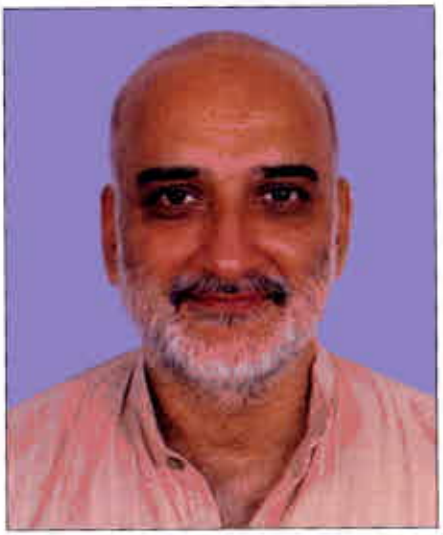

RAJIV MEHROTRA

With him as its Managing Trustee, the Public Service Broadcasting Trust has made over 300 dcumentaries winning 30 awards at 150 international film festivals. Mehrotra is an ace filmmaker, having done a television series on monks and mystics including Sri Ramakrishna and the Dalai Lama. Mehrotra has extensive and pioneering experience in all aspects of television and radio production. He has anchored a range of programmes in different genres and hosts India's longest running talk show on public television, *In Conversations* that has been on air for two decades.

सुमित खन्ना

सुमित खन्ना ने बालीवुड की कुछ जानीमानी हस्तियों के साथ व्यावसायिक सिनेमा में बतौर सहायक काम शुरू किया था । उन्होंने मेघना गुलजार की पहली फीचर *फिलहाल* में भी मुख्य सहायक का काम किया है । उन्होंने कई वृत्तचित्र और कारपोरेट फिल्में भी बनायी है । इस युवा फिल्म निर्माता के वृत्तचित्रों में खाद्य और पर्यावरण सुरक्षा, बच्चों का सामाजिक-सांस्कृतिक विकास तथा आध्यात्मिकता जैसे विषय शामिल हैं ।

SUMIT KHANNA

He started out as an assistant in commercial cinema with some of Bollywood's well-known names and went on to become chief assistant to Meghna Gulzar in her first feature film, *Filhal*. He has made numerous documentaries, corporate and promotional films. Food and environment safety, children's socio-cultural health and spirituality are the themes that echo in this young filmmaker's documentaries.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

नोकपोकलीबा

निर्माता **भारतीय बाल चित्र समिति** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मेरेन इम्चेन** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

एनिमेटर **मेरेन इम्चेन** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 के लिए सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का पुरस्कार **नोकपोकलीबा** को दिया जाता है। यह फिल्म नागालैंड की एक खूबसूरत लोक कथा पर आधारित है। इसकी प्रस्तुति संगीतमय और रंगीन होने के कारण यह कार्टून फिल्म काफी मजेदार बन पड़ी है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

"NOKPOKLIBA"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER : **CHILDREN'S FILM SOCIETY, INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR : **MEREN IMCHEN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to ANIMATOR : **MEREN IMCHEN**

CITATION

The Award for the Best Animation Film of 2006 is given to **"NOKPOKLIBA"** for relating a beautiful folk tale from Nagaland in lyrical colours and fluid animation.

भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में हुई। संस्था बच्चों की फिल्मों के निर्माण, वितरण, प्रदर्शन एवं उन्नयन में कार्यरत है। समिति भारत तथा विदेश में बच्चों की फिल्मों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये अपनी फिल्मों की वीडियो कैसेट्स का वितरण भी करते हैं। भारतीय बाल चित्र समिति की फिल्में नियमित रुप से दूरदर्शन पर प्रसारित होती रहती है। सी.एस.एफ.आई. दो वर्ष में एक बार अंतराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन करती है।

CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA

CFSI was established in 1955 to provide value-based entertainment to children through the medium of films. The organization is engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of children's films. The Society is committed to spreading and encouraging the children's film movement in India and abroad.

CFSI is organizing International Children Film Festival every alternate year (in various cities).

मेरेन इम्चेन

मेरेन इम्चेन ने अहमदाबाद स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन से एनिमेशन फिल्म डिजाइन की पढ़ाई की है । वह शौकीनी पेंटर और संगीतकार भी हैं । वह फोटोग्राफी, संपादन और ग्रैफिक डिजाइन में भी दक्ष हैं । वह एम टी वी तथा चैनेल (वी) जैसे टेलीविजन चैनलों के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं । नोकपोकलीबा जैसी पुरस्कार विजेता फिल्म के अलावा उनकी दूसरी मशहूर फिल्में हैं - *ओक एंड ए, बैटल आफ पानीपत, टाइम बम, ह्वाइल दे स्लीप* और *फाइनल स्कूल प्रोजेक्ट* ।

MEREN IMCHEN

He studied animation film design at the National Institute of Design at Ahmedabad and is a fond painter and musician. He is adept at illustrations, photography, editing and graphic design. Imchen freelances for television channels like MTV and Channel (V), and among his notable films other than the award winning *Nokpokliba* are *Aok and Aie*, Battle of *Panipat, Time Bomb* and *While They Sleep :Final School Project.*

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

लामा डांसेस ऑफ सिक्किम

निर्माता **पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र** को रजत कमल एवं रु. 25,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मानश भौमिक** को रजत कमल एवं रु. 25,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार **लामा डांसेस ऑफ सिक्किम** के अनुष्ठानिक महत्व तथा लामा मास्क नृत्य की रंगीन प्रकृति को सिनेमाई भाषा में प्रस्तुत करने के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE SPECIAL JURY AWARD (to a film or an individual not already covered by the awards)

"LAMA DANCES OF SIKKIM"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.25,000/- to PRODUCER **Eastern Zonal Cultural Centre**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.25,000/- to DIRECTOR **MANASH BHOWMICK**

CITATION

The Special Jury Award for the year 2006 is given to **"LAMA DANCES OF SIKKIM"** for presenting the ritualistic significance and the colourful nature of the Lama mask dances in cinematic language Eastern Zonal Cultural Centre.

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र देश के पूर्वोत्तर भाग के विभिन्न सांस्कृतिक केन्द्रों एवं उत्कृष्टता समूहों के बीच एक सांस्कृतिक तंत्रिका केन्द्र के रूप में कार्य करता है। यह केन्द्र अपने विभिन्न क्रिया कलापों के माध्यम से सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध और प्रोत्साहित करती है। और परंपरागत संस्कृति के उत्थान तथा प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है।

यह केन्द्र गत कई वर्षों से लोक, जनजातीय और शास्त्रीय नृत्य संगीत, प्रलेखीकरण और प्रकाशन, कार्यशालाओं तथा प्रदर्शनियों आदि कार्यक्रमों के माध्यम से देश के पूर्वी भाग सहित दूसरे भागों में लोगों में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के आत्मीयता का भाव पैदा करती है।

Eastern Zonal Cultural Center (EZCC) :

The EZCC functions as a cultural nerve center, between and among the numerous ethnic cultural centers/groups of excellence of the eastern parts of the country. The Center strives through its various activities to enrich, promote and strengthen these traditions. The Center is totally dedicated to the promotion, projection and dissemination of out traditional culture.

Over the past several years, the EZCC has been able to infuse among people a conscious appreciation of the rich cultural heritage of its own zone as well as other parts of the country through its manifold programs of folk, tribal and classical dance music, documentation and publication, workshops, as well as its exhibitions on arts and crafts.

मानश भौमिक

इस प्रतिष्ठ फिल्म निर्माता ने अपने 30 वर्ष के फिल्मी जीवन में कई टेलीफिल्में और धारावाहिक बनाए हैं। उनकी फिल्मों को कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उनकी बंगला फिल्म *हेमान्तर पाखी* को छह वर्ष पूर्व सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उनकी फिल्मों को कई फिल्म समारोहों के लिए भी चुना गया है। सुंदरवन पर बनायी गयी उनकी फिल्म को काफी सराहा गया है।

MANASH BHOWMICK

This acclaimed filmmaker has made several tele-films and serials in a career spanning 30 years. His films have received awards including the National Award for the Best Regional(Bengali) film six years ago for *Hemanter Pakhi*. His films have been selected for various film festivals. *Sundarban* on the land and people of the Sundarban deltas is one of his celebrated films.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

एक आदेश - ए कमांड फॉर छोटी

निर्माता **भारतीय बाल चित्र समिति** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **रमेश आशेर** को रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम लघु कहानी फिल्म पुरस्कार "**एक आदेश - ए कमांड फॉर छोटी**" को दिया जाता है। इसमें प्रतिकूल वातावरण में गुजर-बसर करने वालों की नैतिक ऊहापोह को बड़े संवेदनात्मक ढंग से दर्शाया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

"EK AADESH - A COMMAND FOR CHHOTI"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to PRODUCER **CHILDREN's FILM SOCIETY, INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to DIRECTOR **RAMESH ASHER**

CITATION

The Award for the Best Short Fiction Film of 2006 is given to **"EK AADESH - A COMMAND FOR CHHOTI"** for sensitively bringing out the moral dilemma created by existence at a subsistence level in a hostile environment.

भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में हुई। संस्था बच्चों की फिल्मों के निर्माण, वितरण, प्रदर्शन एवं उन्नयन में कार्यरत है। समिति भारत तथा विदेश में बच्चों की फिल्मों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये अपनी फिल्मों की वीडियो कैसेट्स का वितरण भी करते हैं। भारतीय बाल चित्र समिति की फिल्में नियमित रुप से दूरदर्शन पर प्रसारित होती रहती है। समिति देश और विदेश में बाल चित्रों को प्रोत्साहित करने केलिए प्रतिबद्ध है। सी.एस.एफ.आई. प्रत्येक दो वर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन करती है।

CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA

CFSI was established in 1955 to provide value-based entertainment to children through the medium of films. The organization is engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of children's films. The Society is committed to spreading and encouraging the children's film movement in India and abroad.

CFSI is organizing International Children Film Festival every alternate year (in various cities).

रमेश आशेर

रमेश आशेर ने वयस्क शिक्षा, बंजर भूमि को पुनरुत्पादक बनाने और पोलियोग्रस्त लोगों सहित अनेक विषयों पर कई लघु फिल्मों का निर्माण-निर्देशन किया है। उन्होंने उपग्रह टेलीविजन के संबंध में भारतीय अंतरिक्ष और अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ भी कार्य किया है तथा वैज्ञानिक और शैक्षणिक विषयों पर अनेक कार्यक्रमों से संबद्ध रहे हैं। उनकी उल्लेखनीय और पुरस्कार विजेता फिल्मों में *ब्लू फ्लेक्स, ग्रीन विलेजेज, भावनी भवाई,* और *यूं सिखलायें आखर* प्रमुख हैं।

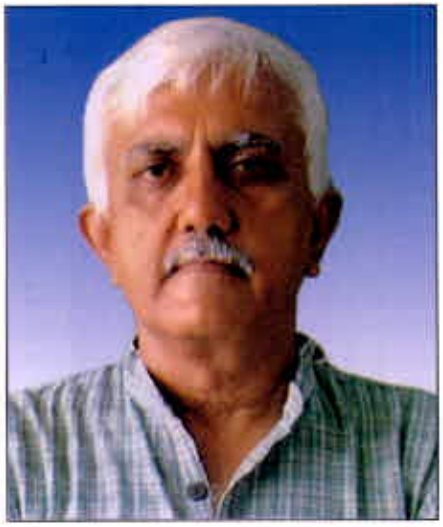

RAMESH ASHER

He has produced and directed several short films and documntaries on a variety of subjects including adult literacy, regeneration of wastelands and polio-affected people.He also worked with the Indian Space and Research Organisation (ISRO) on its satellite television and was associated with scores of programmes on scientific and educational themes. Notable and award winning films include *Blue Flames, Green Villages, Bhavni Bhavai* and *Yun Sikhlayen Akshar.*

सर्वोत्तम निर्देशन

एक आदेश - ए कमांड फॉर छोटी

निर्देशक **रमेश आशेर** को स्वर्ण कमल एवं रु. 1,00,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार **रमेश आशेर** को दिया जाता है। इसमें स्थानीय चीजों और चरित्रों का कल्पनात्मक उपयोग करने के साथ-साथ फिल्म निर्माण के सभी विषयों में पूर्ण नियंत्रण को दर्शाया गया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

"EK AADESH - A COMMAND FOR CHHOTI"

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.1,00,000 to DIRECTOR **RAMESH ASHER**

CITATION

The Award for the Best Direction for the year 2006 is given to **RAMESH ASHER** for making imaginative use of the locale and cast of characters, and for displaying complete command over all disciplines of film making.

रमेश आशेर

रमेश आशेर ने वयस्क शिक्षा, बंजर भूमि को पुनरुत्पादक बनाने और पोलियोग्रस्त लोगों सहित अनेक विषयों पर कई लघु फिल्मों का निर्माण-निर्देशन किया है। उन्होंने उपग्रह टेलीविजन के संबंध में भारतीय अंतरिक्ष और अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ भी कार्य किया है तथा वैज्ञानिक और शैक्षणिक विषयों पर अनेक कार्यक्रमों से संभद्ध रहे हैं । उनकी उल्लेखनीय और पुरस्कार विजेता फिल्मों में *ब्लू फ्लेम्स, ग्रीन विलेजेज, भावनी भवाई,* और *यूं सिखलायें आखर* प्रमुख हैं ।

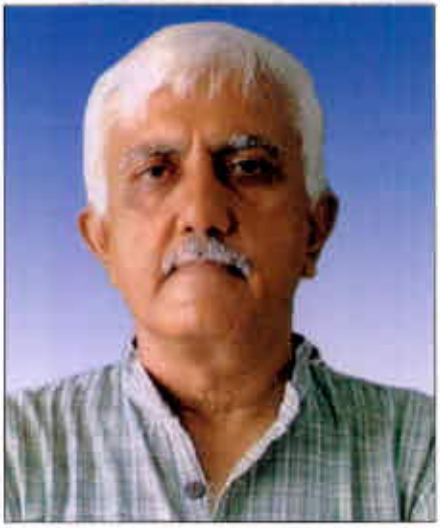

RAMESH ASHER

He has produced and directed several short films and documntaries on a variety of subjects including adult literacy, regeneration of wastelands and polio-affected people.He also worked with the Indian Space and Research Organisation (ISRO) on its satellite television and was associated with scores of programmes on scientific and educational themes. Notable and award winning films include *Blue Flames, Green Villages, Bhavni Bhavai* and *Yun Sikhlayen Akhar.*

सर्वोत्तम छायांकन

राजेन्द्र जांग्ले तथा संजय विजयवर्गीय

कैमरामैन **राजेन्द्र जांग्ले** तथा **संजय विजयवर्गीय** को **राग ऑफ रिवर नर्मदा** के लिए रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार **राजेन्द्र जांग्ले** तथा **संजय विजयवर्गीय** को वीडियोग्राफी की तकनीकी संभावनाओं के विस्तार तथा नर्मदा नदी की विभिन्न भावदशाओं के छायांकन के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

"RAGA OF RIVER NARMADA"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- jointly to CAMERAME **RAJENDRA JANGLAY & SANJAY VIJAYVERGIYA**

CITATION

The Award for the Best Cinematography for 2006 is given to **RAJENDRA JANGLAY AND SANJAY VIJAYVERGIYTA** for stretching the technical possibilities of videography and capturing the varying moods of river Narmada.

संजय विजयवर्गीय

विजयवर्गीय को मानवीय जीवन की जटिलताओं को कैमरा में कैद करने का 15 वर्षो का अनुभव है । उन्होंने प्रसिद्ध फिल्म निर्माताओं के साथ काम किया और स्वतंत्र निर्देशक के रूप में भी काम किया है । उन्होंने सशक्त सामाजिक संदेश देने वाली फिल्मों के अलावा वन्य प्राणियों और संस्कृति पर भी फिल्में बनाई हैं ।

SANJAY VIJAYVERGIYA

He has 15 years of experience in capturing the complex panorama of human life and has worked with renowned filmmakers as well as an independent director. Other than films that have a strong social message, he has made films on wildlife and culture.

राजेन्द्र जांग्ले

राजेन्द्र जांग्ले एक अनुभवी फिल्म निर्माता और छायांकनकर्त्ता हैं । उनकी कर्मभूमि भोपाल हैं । उन्होंने पर्यटन, खेल-कूद, शिक्षा, संस्कृति, भारत में राजमार्ग और पर्यावरण जैसे विविध विषयों पर 100 से भी अधिक वृत्तचित्र बनाए हैं । वह दो दशकों से भी अधिक समय से मध्यप्रदेश सरकार की मल्टी मीडिया कंपनी मध्य प्रदेश माध्यम से जुड़े हैं । वह फिल्म परियोजना की संकल्पना करते हैं, उसका निर्माण करते हैं तथा निर्देशन भी करते हैं । उनकी अनेक फिल्में मॉस्को, ओबेर हाउसेन तथा कार्लोवी वेरी जैसे अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सवों में दिखाई गई हैं । उन्हें अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है ।

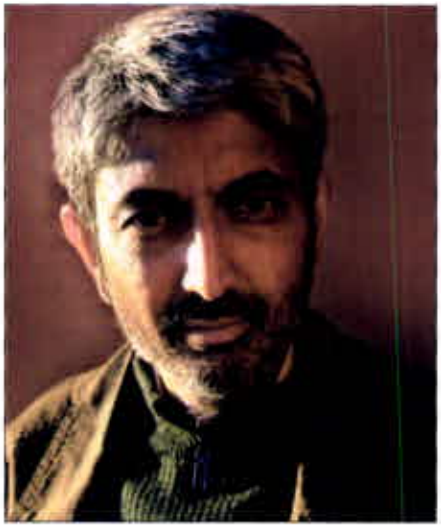

RAJENDRA JANGLAY

Based at Bhopal, he is a seasoned filmmaker and cinematographer having made over 100 documentaries on subjects as diverse as tourism, sports, education, culture, the highways of India and environment. Raga of River Narmada is a fascinating flow of visuals highlighting the river in its glory.He has been with a government of Madhya Pradesh multi-media compnay, Madhya Pradesh Madhyam, for over two decades where he conceptualizes, produces and directs film projects, and many of his films have travelled to international film festivals at Moscow, Oberhausen and Karlo Vary. He has been honored with many prestigious awards.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

पार्थ प्रतिम बर्मन

ध्वनि आलेखक **पार्थ प्रतिम बर्मन** को **बिशर ब्लूज़** के लिए रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार पार्थ प्रतिम बर्मन को **बिशार ब्लूज** के लिए दिया जाता है। लोकेशन साउंड, एम्बिएंस साउंड और संगीत के मिश्रण से एक ऐसा साउंड ट्रैक सृजित हुआ है जिसने इस फिल्म के अर्थ को नया आयाम दिया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

PARTHA PRATIM BARMAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to AUDIOGRAPHER **PARTH PRATIM BARMAN for BISHAR BLUES.**

CITATION

The Award for the Best Audiography for 2006 is given to **PARTH PRATIM BARMAN** for **BISHAR BLUES** for creating a sound track by combining location sound, ambience sound and music that enhance the "meaning" of the film.

पार्थ प्रतिम बर्मन

भारत के सत्यजीत राय फिल्म और टेलिविज़न संस्थान के छात्र रहे प्रतिम पार्थ बर्मन, *प्रहर, पोदोक्खेप, बिशर ब्लूज* और *विलायत खान* सहित कई वृत्त चित्र और फीचर फिल्मों में साउंड डिजाइनर के रूप में कार्य कर चुके हैं ।

PARTHA PRATIM BARMAN

An alumni of Satyajit Ray Film Insititute of India, he has been sound designer for many documentary and feature films including Prohor, *Podokkhep, Bishar Blues* and *Vilayat Khan.*

सर्वोत्तम संपादन

अमिताभ चकवर्ती और अमित देबनाथ

संपादक **अमिताभ चकवर्ती** और **अमित देबनाथ** को संयुक्त रूप से **बिशर ब्लूज़** के लिए रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार **बिशर ब्लूज** को ऐसे जीवन प्रवाह को पर्दे पर उतारने के लिए दिया जाता है जिसमें सहजता और गहनता है। यह ग्रामीण बंगाल में रहने वाले फकीरों के जीवन और दुनिया संबंधी दृटिकोण से मेल खाता है।

AWARD FOR BEST EDITING

"BISHAR BLUES"

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- jointly to the EDITORS : **AMITABH CHAKRABORTY** and **AMIT DEBNATH**

CITATION

The Award for the Best Editing for the year 2006 is given to **"BISHAR BLUES"** for creating a rhythm which is unhurried and profound and that is in tune with the life and world view of Fakirs in rural Bengal.

अमिताभ चक्रवर्ती

पश्चिम बंगाल के फकीरों के साथ यह उनका आत्मिक लगाव ही था जिसने उन्हें बिशार ब्लूज फिल्म बनाने के लिए प्रेरित किया । ये फकीर संस्थागत धर्म के एकदम खिलाफ है और वे मानव मात्र में ही देवत्व के दर्शन करते हैं । इस फिल्म को बनाने के लिए चक्रवर्ती तीन वर्षों तक बीरभूम, मुर्शिदाबाद, नाडिया और बर्दवान की खाक छानते रहे और उन्होंने सैकड़ों फकीरों से मिलकर जानकारी एकत्र की ।

AMITABH CHAKRAVARTY

It was his fascination with the fakirs/ mendicants of West Bengal that led him to make *Bishar Blues*. The fakirs stand completely against institutionalised religion and instead locate divinity in human beings.Chakravarty traversed through Birbhum, Murshidabad, Nadia and Burdwan in West Bengal and interacted with scores of fakirs for three years to make the film.

अमित देवनाथ

अमित देवनाथ ने अब तक चार बंगला फीचर फिल्मों, उन्नीस वृत्तचित्रों, कई विज्ञापन फिल्मों, कारपोरेट, लघु फिल्मों तथा विभिन्न चैनेलों पर दिखाये जाने वाले कई धारावाहिकों का संपादन किया है। वह देशाटन, फोटोग्राफी तथा 'डाग शो' के शौकीन है।

AMIT DEBNATH

Amit has obtained his training in digital media from Research Enginners Pvt Ltd. (Netguru India). He has edited four Bengali feature films, 19 documentaries, several ad films, corporates, short films and several television serials for various channels. He likes travelling, photography and dog shows.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

रमाकांत और उमाकांत गुंडेचा

संगीत निर्देशक **रमाकांत** और **उमाकांत गुंडेचा** को **राग ऑफ रिवर नर्मदा** के लिए रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार **राग ऑफ रिवर नर्मदा** को दिया जाता है। इसमें संगीत की ऐसी स्वरलिपियां पिरोई गई हैं जो पवित्र नदी नर्मदा की आत्मा की स्तुति करती प्रतीत होती हैं।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

RAMAKANT & UMAKANT GUNDECHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- jointly to MUSIC DIRECTORS **RAMAKANT & UMAKANT GUNDECHA for RAGA OF RIVER NARMADA**

CITATION

The Award for the Best Music Direction for the year 2006 is given to "RAGA OF RIVER NARMADA" for creating a music score which becomes an invocation of the spirit of the holy river Narmada.

उमाकांत और रमाकांत गुंडेचा

अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त उमाकांत और रमाकांत गुंडेचा ध्रुपद संगीत शैली के महारथियों में से एक हैं । मध्य भारत के उज्जैन शहर में जन्मे गुंडेचा भाइयों ने परंपरागत शिक्षा के साथ-साथ जाने-माने ध्रुपद गायक उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर तथा उस्ताद जिया मोहिउद्दीन डागर से ध्रुपद गायकी के गुर सीखे हैं । देश-विदेश की विभिन्न कंपनियों ने अब तक इन भाइयों के 35 से अधिक सीडी/कैसेट रिकार्ड किए हैं । गुंडेचा भाइयों ने तुलसीदास, कबीर, पद्माकर, निराला जैसे नामी हिन्दी कवियों की कविताओं को अपना स्वर दिया है और उन्होंने कई वृत्त चित्र फिल्मों में संगीत भी दिया है ।

उन्हें 1987-1989 की राष्ट्रीय फेलोशिप तथा 1993 की उस्ताद अलाउद्दीन खान फेलोशिप के अलावा संस्कृत पुरस्कार-1994 तथा मध्य प्रदेश सरकार का कुमार गंधर्व पुरस्कार-1998 प्राप्त हो चुका है । उन्हें वर्ष 2001 में मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा प्रतिपादित डागर घराना पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है ।

वर्तमान में ये दोनों भाई गुरु-शिष्य परंपरा के अनुरूप भोपाल स्थित ध्रुपद संस्थान में शिक्षण कार्य कर रहे हैं ।

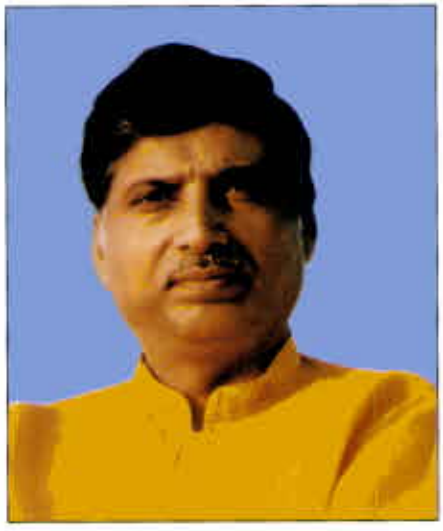

UMAKANT AND RAMAKANT GUNDECHA

Umakant and Uamakant Gundecha are internationally acclaimed and India's leading exponents of the Dhrupad style of music. They are among the most active performers of Dhrupad in Indian and international circuits. Born in Ujjain in central India, both were initiated into music by their parents.

Gundecha brothers received conventional university education and learned the Dhrupad vocal art under the renowned Dhrupad vocalist Ustad Zia Fariduddin Dagar and also with Ustad Zia Mohiuddin Dagar.

They have recorded more than 35 CDs and casstes for many Indian and international recording companies. The Gundecha borthers have sung great Hindi poetry by Tulsidas, Kabir, Padmakar. Nirala. They have also composed music for several documentaries. Gundecha brothers worked with famous choreographer, the late Ms Chandralekha.

The have received National Fellowship for 1987 to 1989, ustad Alluaddin Khan Fellowship in 1993, Sanskriti Award in 1994, Kumar Gandharva Award in 1998 by Government of Madhya Pradesh and Dagar Gharana Award by Mewar Foundation in 2001.

At present the brothers are teaching at Dhrupad Sansthan. Bhopal in Guru-Shishya parampara.

सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर

नेडुमुडि वेणु

प्रकथक **नेडुमुडि वेणु** को **मिनुक्कू** के लिए रजत कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2006 का सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर पुरस्कार **नेडुमुडि वेणु** को प्रकथन की अनूठी शैली, प्रकथक की आवाज की गुणवत्ता तथा फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने वाले प्रकथन के चुनिंदा उपयोग के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST NARRATION/VOICE OVER

NEDUMUDI VENU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.50,000/- to NARRATOR **NEDUMUDI VENU for 'MINUKKU'**

CITATION

The Award for the Best narration/voice over for the year 2006 is given to **NEDUMUDI VENU** for the unique style of first person narration, the quality of narrator's voice and the selective use of narration that advances the story of the film.

नेडुमुडि वेणु

नेडुमुडि ने एक कला पत्रकार के रूप में अपने जीवन की शुरूआत की । इसके बाद अरविंदन, पद्मराजन तथा भरत गोपी जैसे मशहूर फिल्म निर्देशकों के साथ जुड़े जिससे उनके फिल्मों में अभिनय करने का रास्ता साफ हुआ । उनकी पहली फिल्म जी अरविंदन द्वारा निर्देशित फिल्म 'तम्पु (1978) थी । इसके बाद उन्होंने अपने अभिनय के जौहर *आरवम* और *फायलवन* जैसी फिल्मों में दिखाए । इससे उनकी एक नयी पहचान बनी । उन्होंने करनावर में परिवार के मुखिया की जबर्दस्त भूमिका निभायी है । वह फिल्मों में स्क्रिप्ट लेखन का काम भी करते रहे हैं । उन्होंने एक फिल्म *पूरम* का निर्देशन भी किया है ।

NEDUMUDI VENU

A stint as an art journalist and association with great directors like Aravindan, Padmarajan and Bharath Gopi Venu paved the way for his acting career. He debuted in the film *Thampu* (1978) by G Aravindan, a highly acclaimed director. His acting skills were showcased in *Aaravam* and *Phayalvan* set a milestone for him. It marked his start in *karanavar* and he has excelled in the family patriarch's role. He has been a prolific television and film script writer and also also tried his hand at direction with *Pooram*.

विशेष उल्लेख

54वें गैर-फीचर राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल ने **कुलदीप सिन्हा** द्वारा निर्मित तथा **सुरेश मेनन** द्वारा निर्देशित फिल्म–**स्पेशल चिल्ड्रेन** का विशेष उल्लेख किया है। इस फिल्म में विकलांग बच्चों और उनके परिवारों द्वारा उठाई जा रही समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। यह हमारे समाज का एक ऐसा पहलू है जिस पर अब भी पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

SPECIAL MENTION

The Jury for the 54th Non Feature National Film Awards would like to make a special mention of the film "SPECIAL CHILDREN" produced by KULDIP SINHA and directed by SURESH MENON. The film highlights the problems faced by special children or differently abled children and their families-an aspect of our society that is still not receiving adequate attention.

कुलदीप सिन्हा

लेखक-फिल्म निर्माता कुलदीप सिन्हा को फिल्म और टेलीविजन निर्माण, निर्देशन, लेखन और संपादन में तीन दशकों का अनुभव है । निर्देशक के रूप में उन्हें पांच अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया जिसमें इंटरनेशनल एग्री फेस्टिवल, चेकोस्लोवाकिया और सान्टारेम आईएफएफ बेलग्रेड भी शामिल है । उन्होंने 16 प्रसिद्ध फिल्मों का निर्माण किया तथा उन्हें अपने धाराप्रवाह लेखन के लिए कई साहित्यिक पुरस्कार भी मिले । उन्होंने लगभग पच्चीस वर्ष पहले फिल्म्स डिवीजन में काम शुरू किया और इस समय व इसके चीफ प्रोड्यूसर और चिल्ड्रेन्स फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं ।

KULDIP SINHA

Author-filmmaker Sinha has over three decades of experience in film and television production, direction, writing and editing. As director, he has won five international awards including the International Agri Festival, Czechoslovakia and Santarem IFF, Belgrade. He has made 16 acclaimed films and his prolific writing has brought him literary awards as well. He joined the Films Division a quarter century ago, is presently its Chief Producer and is the CEO of Children's Film Society of India.

सुरेश मेनन

अंग्रेजी साहित्य, सिनेमा और मुख्य रूप से फिल्म निर्देशन के विद्यार्थी सुरेश मेनन ने वृत्तचित्र फिल्म बनाने से पहले दो फीचर फिल्मों *वेप्रालम* और *निनाइका थेरिया मैनेम* का निर्माण किया । *सिजोफ्रेनिया, वाटरशेड डेवलपमेंट* और *कबीर* उनके कुछ उल्लेखनीय वृत्तचित्र हैं । वह फिल्म्स डिवीजन में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं ।

SURESH MENON

A student of English literature and cinema, precisely Film Direction, he directed two feature films, *Vepralam* and *Ninaika Theritha Maname*, before turning to documentary film making. *Schizophrenia, Watreshed Development* and *Kabir* are some of his notable documenatries. He works with the Films Division as Director.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

सर्वोत्तम मानवजातीय/मानवशास्त्रीय फिल्म
सर्वोत्तम खोजी फिल्म

Awards Not Given

Best Anthropological/Enthrographic Film
Best Exploration/Adventure Film (to include sports)

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार

Awards for the Best Writing on Cinema

सिनेमा संबंधी सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार-2006

हेलेन - द लाइफ एंड टाइम्स आफ एन एच-बॉम्ब (अंग्रेजी)

लेखक **जेरी पिन्टो** को स्वर्णकमल तथा रु. 75000/- का नकद पुरस्कार

पेंग्विन बुक्स इंडिया प्रा. लि., को स्वर्णकमल तथा रु. 75000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष-2006 का सिनेमा संबंधी सर्वोत्तम पुरस्कार जेरी पिन्टो के उनकी पुस्तक हेलेन-द लाइफ एंड टाइम्स आफ ऐन एच बॉम्ब के लिए दिया जाता है जिसमें इन्होंने हिन्दी सिनेमा की हेलेन के जीवन की विशद विवेचन की है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA 2006

HELEN: THE LIFE AND TIMES OF AN H-BOMB (ENGLISH)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 75,000/- to Author **JERRY PINTO**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 75,000/- to Publisher **PENGUIN BOOKS INDIA PVT LTD.**

CITATION

The award for the best book on cinema is presented to **JERRY PINTO** for his book **'HELEN: THE LIFE AND TIMES OF AN H-BOMB'** for an insightful and witty account of a marginal yet iconic persona of the Hindi cinema.

पेंग्विन बुक्स इंडिया

हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी तथा उर्दू भाषा में पुस्तकें प्रकाशित करने वाला यह भारतीय उप महाद्वीप का सबसे बड़ा प्रकाशक है । इसने 1987 में केवल सात पुस्तकों से प्रकाशन कार्य आरंभ किया था । आज यह प्रतिवर्ष 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है । यह कुकिंग से लेकर धर्म और राजनीति सभी विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित करता है और इस समय इसके पास प्रकाशनार्थ लगभग 2000 पुस्तकों की लंबी सूची है । पेंग्विन के लेखकों को साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार, मेगासेसे पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार, बुकर प्राइज, साहित्य अकादमी पुरस्कार, राष्ट्रमंडल लेखक पुरस्कार सहित और भी कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । इसके कई लेखकों को भारत रत्न और पद्म विभूषण पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

PENGUIN BOOKS INDIA

It is the largest English language trade publisher in the subcontinent, publishes books in English Hindi, Marathi and Urdu. It began publishing in 1987 with seven titles. Today, the company publishes more than 200 new titles every year and has an active backlist of over 2000 titles— from cookery to reilgion and politics.Penguin's biggest authors have won virtually every major literary prize, including the Nobel Prize, the Magsaysay Award, the Jnanpith Award, theBooker Prize, the Sahitya Akademi Award and the Commonwealth Writers' Prize. Several of its authors are also recipients of the Bharat Ratna and the Padma Vibhushan, India's highest civilian honours.

जेरी पिंटो

जेरी पिंटो मुम्बई में रहते हैं । वह एक कवि हैं । उन्हें अनेक कविता और लघु कथा संग्रहों की रचना का श्रेय है । जेंडर पॉलिटिक्स पर उनकी पहली पुस्तक *सरवाइविंग वूमेन* का कई बार पुनर्मुद्रण हो चुका है । अपनी प्रमुख कृति *हेलेनः द लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ ऐन* एच बॉम्ब के बाद वह बॉलिवुड पोस्टर पर कार्य कर रहा है । उन्होंने स्टेट्समैन और हिन्दुस्तान टाइम्स सहित अनेक नामी भारतीय अखबारों के साथ काम किया है ।

JERRY PINTO

He is a poet who lives in Mumbai and has several poetry and short story collections to his credit. *Surviving Women*, his first book—on gender politics—has gone into several re-prints. After his celebrated work, *Helen: The Life and Times of an H Bomb*, he is working on *Bollywood Poster*. He has worked with several eminent Indian publications including the Statesman and Hindustan Times.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार-2006

जी. पी. रामचन्द्रन और रफीक ए.आर. बगदादी

फिल्म समीक्षक **जी.पी. रामचन्द्रन** और **रफ़ीक ए.आर. बगदादी** प्रत्येक को स्वर्णकमल तथा रु. 37,500/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

जी.पी. रामचन्द्रन को यह पुरस्कार विभिन्न विषयों और सिनेमाई शैली में उनके विश्लेषणात्मक और तथ्य परक लेखन के लिए दिया जाता है।

रफीक ए.आर. बगदादी को यह पुरस्कार सिनेमा के इतिहास और समकालीन सिनेमा के विश्लेषण के लिए दिया जाता है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2006

G.P. RAMACHANDRAN (MALAYALAM) and RAFIQUE A.R. BAGHDADI (ENGLISH)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 37,500/- each to critics **G.P. RAMACHANDRAN (MALAYALAM) AND RAFIQUE A.R. BAGHDADI (ENGLISH)**

CITATION

The award is given to **G.P.RAMACHANDRAN** for his analytical and perceptive writing on a wide range of themes and cinematic styles.
The award is given to **RAFIQUE A.R. BAGHDADI** for his writings on the history of cinema as well as his cogent analysis of contemporary cinema.

जी.पी. रामचन्द्रन

कई पुरस्कारों से सम्मानित जी.पी. रामचन्द्रन मशहूर फिल्म और टेलीविजन समीक्षक हैं । सिनेमा से संबंधित उनके कई लेख प्रकाशित-प्रसारित हुए हैं और उन्हें केरल के विभिन्न विद्यालयों-महाविद्यालयों में अपने शोध लेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया है । उनकी 1998 में प्रकाशित पुस्तक - *सिनेमायुम, मलयालियुरे जीवितायुम* को सिनेमा संबंधी सर्वोत्तम पुस्तक के लिए केरल राज्य सरकार फिल्म पुरस्कार प्राप्त हो चुका है । वह वर्ष 1996 और 1997 में केरल सरकार टेलीविजन पुरस्कारों संबंधी निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। उनके द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें हैं- *कलमकम पुरलाथा ओरु इमैजिन वेन्डी* (2000) और *25 लोका सिनेमाकल* वर्तमान में वह केरल राज्य चलचित्र अकादमी और केरल संगीत नाटक अकादमी से संबंधित महापरिषद के सदस्य हैं।

रफीक बगदादी

रफीक बगदादी एक फिल्म पत्रकार हैं । उन्होंने भारतीय सिने हस्ती सत्यजीत राय पर भारतीय मीडिया द्वारा प्रकाशित समाचारों, लेखों और समालोचनाओं को संग्रहीत करके उसे एक पुस्तक - *द सिनेमा ऑफ सत्यजीत राय बिटवीन ट्रडीशन एंड माडर्निटी* का रूप दिया है ।

G. P. RAMACHANDRAN

Recipient of many awards, G.P. Ramachandran is a film and television critic of repute. His writing on cinema has been widely published and broadcast and he has been invited to submit papers in different universities and colleges of Kerala.

His book titled *Cinemayum Malayaaliyude Jeevithavum*, published in 1998, was selected for the Kerala State Govt Film Awards-Best Book on Cinema. He was a jury member of the Kerala Govt Television Awards for the years 1996 and 1997. The other books written by him include *Kalamkam Puralaatha Oru Imaginu Vendi* (2000) and *25 Loka Cinemakal* (2007). At present he is member of the general council of the Kerala State Chalachitra Academy and Kerala Sangeetha Nataka Akademi. He is also an executive member of the Purogamma Kala Sahitya Sanghom.

RAFIQUE BAGHDADI

A film journalist who collected bits and pieces of most of what the Indian media wrote about film genius Satyajit Ray to go into a book, *The Cinema of Satyajit Ray: Between Tradition and Modernity* (by Darius Cooper) needs no introduction. He has also co-authored *Talking Films* and is a member of the International Federation of Film Critics.

विशेष उल्लेख

उत्पल दत्ता

फिल्मों और सिनेमा में नवीन प्रकृतियों की संवेदनात्मक व्याख्या के लिए निर्णायक मंडल श्री उत्पल दत्ता का विशेष उल्लेख करता है।

SPECIAL MENTION

UTPAL DATTA

The jury makes a special mention of **Mr. UTPAL DATTA** for his sensitive interpretation of films and trends in cinema

उत्पल दत्ता

उत्पल दत्ता ने कई पुस्तकों का लेखन, संपादन और अनुवाद किया है । उन्होंने 50 से अधिक टेलीविजन नाटकों और वृत्त चित्रों की पटकथा लिखी है । वह शब्दों के जादूगर हैं और उन्हें अब तक कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं । उनके लेखन की काफी सराहना होती रही है ।

UTPAL DATTA

He has edited, translated and authored books, and produced plays and radio shows. Having scripted more than 50 television dramas and documentaries, he is a master wordsmith and awards and accolades have never been in short supply for him.

कथासार : कथा चित्र

Synopses : Feature Films

एड्यू

असमिया/77मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता : नाबोमिका बोरठाकुर; **निर्देशन, पटकथा और छायांकन :** अरूप मन्ना; **संगीत :** मानश हजारिका; **कलाकार :** प्रशांत कुमार दास, चंदन शर्मा, सापोन्ती बारदोलोई और नाबोमिका बोरठाकुर

'एड्यू' असम की मशहूर फिल्म कलाकार एड्यू हांडिक के जीवन चरित्र पर आधारित फ़िल्म है । इसमें दिखाया गया है कि किस तरह एड्यू हांडिक समय की धारा के विपरीत बहते हुए असम की पहली फ़ीचर फिल्म 'जॉयमॅति' में हीरोइन बनीं और इसके लिए उन्हें क्या-क्या मुसीबतें उठानी पड़ी ।

1935 में जब एड्यू को हीरोइन की भूमिका निभाने के लिए राजी किया गया था, तब थियेटर और सिनेमा महिलाओं के लिए अच्छा पेशा नहीं समझा जाता था । जॉयमॅति की शूटिंग के बाद जब एड्यू अपने गांव वापस गयीं तो उन्हें अकेलेपन की जिन्दगी गुजारनी पड़ी क्योंकि परिवार वालों ने फिर उनसे किसी तरह का कोई संबंध नहीं रखा ।

AIDEU

She lived long and died slowly

Assamese/77 min./35mm/Colour

Producer: Nabomika Borthakur; **Direction, Screenplay** and **Cinematography:** Arup Manna; **Music:** Manash Hazarika; **Cast:** Prasanta Kr. Das, Chandana Sarma, Saponty Bordoloi and Nabomika Borthakur

Aideu traces the poignant life of Assamese film legend Aideu Handique who swam against the tide to become a heroine in Assam's first feature film, *Joymoti*, meaning saviour, only to become an outcast.

Unknowingly, Aideu literally seems to have traded her whole life with one film.

In 1935, when Aideu was persuaded to accept the heroine's role, theatre and cinema were seen as disrespectable professions for women. After the shooting of *Joymoti*, Aideu went back to her village but was condemned to a lonely life as she was quarantined in the family home.

Aideu lived long and died slowly: her engagement was called off, men shunned her, she remained unmarried and the family was ostracized.

अंतर्नाद

कोंकणी/117 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : राजेन्द्र तालक क्रिएशन्स; **निर्देशक :** राजेन्द्र तालक; **पटकथा :** प्रतिमा कुलकर्णी; **छायांकन :** देबू देवधर; **संगीत :** अशोक पत्की; **कलाकार :** स्वप्निल बांदोडकर, अमृता सुभाष, प्रदीप वेलणकर, रीमा

यह फिल्म वर्तमान पीढ़ी के बारे में है जो रातोंरात शोहरत और कामयाबी पा जाना चाहती है । फिल्म की कहानी एक माँ और उसकी जवान बेटी के बीच अपनी अलग-अलग पहचान बनाने को लेकर चल रही रस्साकशी से संबंधित है । रमा शिरोडकर शास्त्रीय संगीत में एक जानी मानी हस्ती होने के साथ-साथ कड़े अनुशासन की पक्षधर हैं । उनकी पुत्री सानिका भी एक बेहतरीन गायिका है और उसकी आवाज बहुत ही सुरीली है । माँ चाहती है कि बेटी उसके शास्त्रीय गायन की विरासत को संभाले । लेकिन सानिका आधुनिक संगीत में रूचि रखती है । अतः वह अपनी माँ से अलग हो जाती है और अपनी पहचान आप बनाने की राह पर चल पड़ती है ।

ANTARNAD

Pop Culture In Pink And Blue

Konkani/ 117 minutes/35mm/Colour/

Producer: Rajendra Talak Creations; **Director:** Rajendra Talak; **Screenplay**: Pratima Kulkarni; **Cinematography**: Debu Deodhar; **Music**: Ashok Patki; **Cast**: Swapnil Bandodkar, Amruta Subhash, Pradip Welankar Reema

The film is about the present generation, which expects and demands instant glory and fame. The story revolves around an identity clash between a mother and her teenage daughter. Rama Shridokhar is a classical music genius and a strict disciplinarian. Sanika, her daughter, is also a gifted singer blessed with a melodious voice. The mother expects the daughter to follow in her footsteps as a classical singer. Sanika however feels the tug of the modern and breaks away from the mother to start an individual journey and establish her own identity. Along the way she meets Vicky, a young man going through the same identity throes as she is. She identifies with him and he encourages her to follow her dreams.

अनुरनन

बंगला/102 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : स्क्रीनप्ले फिल्म्स; **निर्देशन और पटकथा :** अनिरूद्ध राय चौधरी; **छायांकन :** सुनील पटेल; **संगीत :** तन्मय बोस; **कलाकार :** राहुल बोस, रितुपर्णा सेनगुप्ता, राइमा सेन और रजत कपूर

राहुल एक कंपनी में आर्किटेक्ट है और लंदन में अपनी पत्नी नंदिता के साथ रहता है । राहुल की कंपनी कंचनजंगा की तराई में कुछ शानदार विला बनाना चाहती है और इसी के लिए उसने कलकत्ता के एक रियल एस्टेट डेवलपर अमित की सेवाएं ली हैं । राहुल लंदन में जब अमित से मिलता है तो उसकी कलकत्ता वापस आने की इच्छा प्रखर हो उठती है । वह कंचनजंगा परियोजना के चीफ आर्किटेक्ट के रूप में कलकत्ता वापस आ जाता है । अमित की शादी प्रीति से हो जाती है । कलकत्ता में इन दोनों परिवारों के बीच काफी निकटता बढ़ जाती है ।

यहां राहुल की पत्नी नंदिता एक प्ले स्कूल में टीचर की नौकरी पा जाती है । नंदिता को बच्चों से विशेष लगाव है और उसकी वजह शायद यह है कि वह अपने गर्भपात के बाद कभी मां नहीं बन सकी । इसने नंदिता और राहुल के मन में कहीं दरार डाल दी है । दूसरी और प्रीति अपने पति से तादात्म्य नहीं बैठा पाती है क्योंकि उसका पति पैसे को ही सब कुछ समझता है ।

ANURANAN

A Himalayan Home-Coming, Literally

Bengali/102 min./35mm/Colour

Producer: Screenplay Films; **Direction and Screenplay**: Aniruddha Roy Chowdhury; **Cinematography**: Sunil Patel; **Music**: Tonmoy Bose; **Cast:** Rahul Bose, Rituparna Sengupta, Raima Sen and Rajat Kapoor

Rahul, an architect, lives in London with wife Nandita, but the couple is eager to return to India . Rahul meets Amit, a real estate developer from Kolkata, employed by Rahul's firm that builds luxury villas at the foothills of the Kanchanjunga.

Rahul returns to Kolkatta as the chief architect of the Kanchanjunga project.

Amit is married to Preeti and the couple becomes a partying foursome with Rahul and Nandita. However, Nandita's miscarriage puts a seal on her motherhood, creating a chasm between her and Rahul.

On the other hand, Preeti cannot relate to her husband, whose life and happiness are driven by money. She and Rahul strike a chord.

When Amit leaves for a business trip to London and refuses to take Preeti along, almost on impulse, she joins Rahul in Kanchanjunga where he has gone on work. Their romance blossoms in the scenic environs leading to a predictable emotional complexity for both the couples.

केयर ऑफ फुटपाथ

कन्नड़/137 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : शैलजा श्रीकांत; **निर्देशक :** किशन श्रीकांत; **पटकथा :** जोगी और उदयमराकिनी; **छायांकन :** मैथ्यू राजन; **संगीत :** रवि दत्तात्रेय; **कलाकार :** किशन एस.एस., जयश्री बी.

यह झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले एक ऐसे अनाथ बच्चे किशन की कहानी है जो भीख मांगने के लिए मजबूर है । एक दिन वह अपने 'मालिक' की नजरों से बच निकलता है और एक धोबिन के पास पहुंच जाता है । धोबिन को बच्चे पर तरस आता है और वह उसे अपना लेती है । किशन का एक दिन स्कूली बच्चों से सामना हो जाता है और वे उसके अनपढ़ और गंवारूपन के लिए काफ़ी खिल्ली उड़ाते हैं । यह बात किशन को चुभ जाती है और वह पढ़ने-लिखने की ठान लेता है । उसे जो भी स्कूली बच्चा मिलता है वह उनसे कुछ न कुछ सिखाने, किताबें देने या पेंसिल, कलम देने का अनुरोध करता है । इस प्रकार वह पूरी तरह पढ़ाई में लीन हो जाता है ।

जब वह एक अमीर आदमी के यहाँ नौकर होता है तब भी किशन वहां बच्चों को पढ़ाने आने वाले एक प्राइवेट ट्यूटर से वह सब कुछ सीख लेता है जो दूसरे बच्चे सीखते हैं । पढ़ाई एक तरह से उसका जूनून हो गयी है ।

C/o FOOTPATH

Open The Door When Opportunity Knocks

Kannada/137min./35mm/Colour

Producer: Shylaja Shrikanth; **Director:** Kishan Shrikanth **Screenplay:** Jogi and Udaymarakini **; Cinematography:** Mathew Rajan**; Music:** Ravi Dattatreya; **Cast:** Kishan S.S. and Jayashree B.

This is an inspiring story of adversity propelling a boy onto genius and fate playing a happy accomplice. Kishan, an orphan boy from a slum has been forced into begging. One day he escapes his 'employer' and, in a chance encounter, meets some school children who taunt him about his illiteracy and crude manners. They challenge him to learn the alphabets and soon, he is sucked into learning. Working as a servant boy in a rich household where the children have a private tutor, Kishan stealthily learns all that they are learning.

What started off as a childish score-settling game becomes an obsession and Kishan emerges a hero.

दोसर

बंगला/127 मिनट/श्वेत श्याम

निर्माता : अरिंदम चौधरी; **निर्देशन** और **पटकथा :** रितुपर्णो घोष;
छायांकन : **कलाकार :** प्रसेनजित चटर्जी, परमब्रतब चटर्जी, कोंकणा सेन शर्मा और पल्लबी चटर्जी

दोसर का तात्पर्य है - साथी । यह कहानी कौशिक और काबेरी तथा बॉबी और बृंदा इन दो जोड़ों के आस-पास घूमती है । कौशिक के अपनी सहकर्मी और दोस्त मीता से प्रेम संबंध होते हैं । एक बार कौशिक और मीता जब कहीं जा रहे होते हैं उनकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है और मीता की मृत्यु हो जाती है । दुर्घटना के बाद कौशिक और मीता के बीच प्रेम संबंधों की बात सार्वजनिक हो जाती है । इससे कौशिक की पत्नी काबेरी को बहुत अधिक ठेस पहुंचती है । पर वह अब भी अपने पति को चाहती है ।

उधर बॉबी एक अविवाहित लड़का है जिसके संबंध अपनी उम्र से कहीं अधिक बड़ी एक विवाहित महिला बृंदा से हैं । बृंदा का विवाहित जीवन सुखमय नहीं है । यह प्रेमी युगल तब दोराहे पर आकर खड़ा हो जाता है जब बृंदा गर्भवती हो जाती है ।

DOSAR

It's Black & White But Gray!

Bengali/127 minutes/B&W

Producer: Arindam Chaudhuri; **Direction** and **Screenplay:** Rituparno Ghosh; **Cinematography** **Cast:** Prasanejit Chattergee, Parambratab Chatterjee, Konkona Sen Sharma and Pallabi Chatterjee

The film is black and white but its story all about the grey areas of human emotions, especially around marriage and marital infidelity.

Dosar, meaning companion, is a story of love beyond man-made boundaries. *Dosar* revolves around two couples, Kaushik and Kaberi and Bobby and Brinda. Kaushik's marriage gets a jolt when his colleague and mistress, Mita, dies in a car accident. The accident leaves Kaushik heavily injured and Kaberi wounded emotionally. Kaushik's disloyalty hurts Kaberi but does not dent her love for him.

There is another couple in the film, also in an extramarital relation—Bobby,a bachelor, and Brinda, much older than Bobby, but unhappily married.

दृष्टांतम

मलयालम/96 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक : एम.पी. सुकुमारन नायर; **छायांकन :** के.जी. जायन, **संगीत :** चंद्रन वेयत्तुम्मल; **कलाकार:** मारगी साथी, इन्द्रांस, रथ्या

दृष्टांतम केरल के गांवों में रहने वाली उन अछूत जातियों की तकदीर की निराशा भरी कहानी है जो मृत हो रही परंपराओं और उभर रही नई विश्वव्यवस्था के बीच फंसे हैं। इसमें एक ऐसे परिवार की कहानी बताई गई है जो काली-दारिका की लड़ाई से संबंधित कहानी पर आधारित थीयट्टू अनुष्ठान संपन्न करवाता है।

दानव दारिका ने तपस्या करके भगवान ब्रह्मा से यह वरदान मांग लिया था कि कभी कोई पुरुष उसको मारने में समर्थ न हो। इसलिए भगवान शिव ने उसके वध के लिए काली का सृजन किया। काली ने उसका वध कर दिया।

इस तरह की कहानी केवल दक्षिण केरल के काली मंदिरों में थीयट्टू मंदिर कला रूप में देखने को मिलती हैं। उसमें केवल उन्नी जाति के पुरुष पुजारी भाग लेते हैं।

इस फिल्म का नायक वासुन्नी है जिसके लिए यह कला केवल रोजी-रोटी का जरिया न होकर एक आत्मिक शांति का प्रतीक है।

DRISHTANTHAM

When Rituals Are Risky

Malayalam/96 min./35mm/Colour

Producer, Director and Screenplay Writer: M. P. Sukumaran Nair; **Cinematography**: K.G. Jayan; **Music**: Chandran Veyattummal; **Cast:** Margi Sathi, Indrans & Rathya

Drishtantham represents the desperate turns in the destiny of alien communities in interior Kerala, trapped between dying traditions and emerging new orders of the world. It tells the story of a family engaged in the ritualistic performance called Theeyattu, which is based on the legend of Kali-Darika combat.

Kali, the goddess of retribution, tells Lord Shiva, her creator, the story of the slaying of demon Darika by her. Lord Shiva creates a ferocious female force to annihilate Darika who is bestowed with a boon from Lord Brahma that he cannot be killed by any male. Kali takes over the mission and kills Darika. This story is a solo performance in which, traditionally, the all-male temple servant community of Unnis practices this art.

एकांतम

मलयालम/106 मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : एंटनी जोसेफ;
निर्देशक : मधु कैथाप्रम थैलाकन;
पटकथा : अलम्कोडि लीलाकृ-णन;
छायांकन : एम.जे. राधाकृ-णन;
संगीत : जॉनसन; **कलाकार :** तिलकन, मीरा वासुदेवन और मुरली

यह फिल्म अच्युत मेनन नाम के एक निःसंतान, अकेले और उम्र दराज विधुर के चारों और घूमती है ।

वह एक सुसंपन्न व्यक्ति हैं जो केरल के किसी गांव स्थित अपने परिजनों से दूर रहते हैं । लेकिन पत्नी की मौत के बाद वह अपने परिजनों अर्थात् अपने छोटे भाई रावुन्नी के पास लौट आता है ।

रावुन्नी भी विधुर है । लेकिन उसका एक पुत्र विश्वनाथन और एक पुत्री चन्द्रिका हैं । ये दोनों ही अपने-अपने परिवारों के साथ शहर में रहते हैं । रावुन्नी कैंसर से ग्रस्त है पर उसके बेटा-बेटी नियमित रूप से उसके पास आते रहते हैं ।

अच्युत मेनन और रावुन्नी लंबे समय बाद एक दूसरे से मिलते हैं और बचपन की यादों में खो जाते हैं ।

जब रावुन्नी का स्वास्थ्य काफी गिर जाता है तब उसके बच्चे उसे शहर ले जाने की सोचने लगते हैं ।

EKANTHAM

Of Human Bondage

Malayalam/106 minutes/35mm/Colour

Producer: Antony Joseph; **Director:** Madhu Kaithapram Thailakan; **Screenplay:** Alamkode Leelakrishnan; **Cinematography:** M.J. Radhakrishnan; **Music:** Johnson; **Cast:** Thilakan, Meera Vasudev and Murali

The film revolves around Achutha Menon, a childless and lonely widower in the twilight of his life. His younger brother Ravunni too is a widower, suffering from cancer.

As Ravunni's health deteriorates, he decides to move to a place that provides holistic treatment. Achutha too moves in with him. And once at the centre, the two brothers come across a bunch of very different characters like Sunny, the doctor in-charge of the center, and Sophie, a woman doctor in love with him. A new world opens up before the lonely widower who begins to see human relationships in all their diverse dynamics and dimensions, dimensions that he had never seen or experienced before.

फालतू

बंगाली/102 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : अरिंदम चौधरी;
निर्देशक : अंजन दास, **पटकथा:** पार्थो बनर्जी; **छायांकन :** श्रीशा राय;
संगीत : ज्योतिस्का दासगुप्ता;
कलाकार : यश पंडित, मांजरो फडनीस, इन्द्राणी हलदर, सौमितो चटर्जी

यह 1950 के दशक के आरंभिक वर्षों में पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले की पृष्ठभूमि में बनी एक फिल्म है । फिल्म का प्रमुख पात्र एक बीस वर्षीय लड़का फालतू है । वह एक अत्यधिक पिछड़े गांव रानिरघाट में रहता है । इस गांव में ज्यादा प्रवासी बांग्लादेशी रहते हैं ।

यह सबको पता है कि गांव की एक पागल औरत सूरी खेपी फालतू की मां है लेकिन उसके बाप के बारे में किसी को कुछ पता नहीं है । पूछताछ से पता चलता है कि गांव के कई लोगों ने एक-एक कर सूरी खेपी के पागलपन का फायदा उठाते हुए उसके साथ बलात्कार किया था ।

उधर सरकार रानिरघाट की नदी पर पुल बनाना चाहती है और चाहती है कि गांव वाले गांव खाली कर दें । लेकिन गांव वाले गांव खाली करने के पहले फालतू और टुकटुकी की शादी कराना चाहते हैं ताकि वे विगत में सूरी खेपी के साथ किए गए अत्याचार का पश्चाताप कर सकें ।

FALTU

Bengali/102minutes/35 mm/ Colour
A Strange Common Cause

Producer: Arindam Chaudhuri; **Director:** Anjan Das; **Screenplay:** Partho Banerjee; **Cinematography**: Shrisha Roy; **Music:** Jyotishka Dasgupta; **Cast:** Yash Pandit, Manjro Fadnis, Indrani Haldar, Soumito Chatterjee

The entire story deals with human relations and how the guilt of having done something wrong haunts everyone in the village. They want to make up for their sins, but end up opening a new can of worms and spoiling a marriage.

Set in the backdrop of Murshidabad district in West Bengal in the early 1950s, this is the story of a 20-year-old boy called Faltu whose mother is Suri Khepi, a mad woman. It turns out that almost everyone in the village took their turns to rape Suri Khepi, taking advantage of her mental condition. But overwhelmed with a guilty feeling , the villagers try to make amends.

होप

तेलुगु/106 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता : पॉलीचेर्ला वेंकट सुबैया;
निर्देशक : के. सत्यनारायण,
पटकथा : के सतीश;
छायांकन : शरत; **संगीत** : इलाया राजा; **कलाकार** : डी. रामानायडु, कल्याणी, वाइजाग प्रसाद, राधा देवी

होप एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसकी स्कूल में पढ़ रही एक बहन ने आत्महत्या कर ली है और बाद में उसके पिता की भी मृत्यु हो जाती है । इस तरह उसे एक के बाद एक निराशाजनक स्थितियों से गुजरना पड़ता है ।

लड़की के पिता एक तन्हा वृद्ध व्यक्ति हैं जिन्हें यह पता नहीं कि उनके जीने का मकसद क्या है । एक तरह से वे दोनों ही एक दुख भरी और निराशा जिन्दगी जी रहे हैं । बाद में एक दूसरे की जरूरत उन्हें करीब ले आती है और उनमें आपसी समझ पैदा होती है ।

होप समकालीन भारत और यहां की उस शिक्षण प्रणाली को दर्शाती है जो इस फिल्म के दो प्रमुख पात्रों के जीवन घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

HOPE

To Hope Is Human

Telugu/106 min./35MM/Colour

Producer: Policherla Venkata Subbiah; **Director**: K. Sathyanarayana; **Screenplay**: K. Satish; **Cinematograpahy**: Sarath; **Music**: Ilayaraaja; **Cast**: D. Ramanaidu, Kalyani, Vizag Prasad, Radha Devi

Hope is more than a film. It's a desire to stoke the embers of hope in all human beings.

She has lived through the suicide of her school going sister and despair of her father's death.

He is a solitary old man, disillusioned with life and has little reason for living. Their pains and frustrations, anguish and despair bring them closer. A relationship based on mutual need is born and nurtured.

Hope is the inspiring story of these two individuals whose lives intertwine and light a spark of hope in each other and also in those around them. The country's educational system, that plays a defining role in the lives of the two protagonists, forms the backdrop of the film.

काडा बेलाडिन्गलू

कन्नड़/115मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता : मेसर्स बेंगलुरू कंपनी;
निर्देशक : बी.एस. लिंगादेवरू;
पटकथा : उदयमराकिनी;
छायांकन : एच.एम. रामचन्द्रन;
कलाकार : सी.एच. लोकनाथ, अनन्य कसरावल्ली, एच.जी. दत्तात्रेय, भार्गवी नारायण, मास्टर अर्जुन

यह कहानी 'जोगी' उपनाम से लिखने वाले एक फिल्म पत्रकार गिरीश राव के जीवन पर आधारित है ।

इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि बच्चों के वतन से परदेश चले जाने पर वरिष्ठ नागरिकों को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उसके क्या दुष्परिणाम सामने आते हैं ।

इसमें एक युवा महिला पत्रकार सुदेशनी होती है जो एक विस्फोट की घटना को कवर करना चाहती है । वह गांव से आयी एक महिला है जो नौकरी के लिए शहर में आ बसी है । उसे घटना की तहकीकात करते वक्त पता चलता है कि ग्रामीण मूल्यों में कितनी गिरावट आ गयी है और किस तरह मीडिया गांव के लोगों को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहा है । वह लोगों के दोहरे जीवन मूल्यों से इतना भ्रमित हो जाती है कि उसे कुछ अपना ही अता-पता नहीं रहता ।

KAADA BELADINGALU

Left Out In The (C)Old

Kannada/115 minutes/35 mm/ Colour

Producer : M/s Bengalooru Company; **Director** : B.S. Lingadevaru; **Screenplay:** Udaya Marakini; **Cinematography** : H.M. Ramachandra; **Cast** : C.H. Lokanath, Ananya Kasaravalli, H.G. Dattatreya, Bhargavi Narayan, Master Arjun

The film deals with the problems of senior citizens and the consequences of migration from a native environment. It presents a larger picture of total degeneration of the country's rural space as a result of migration. The villages seem to be turning into old age homes as the young rural population has migrated to the cities in search of greener pastures.

The film reveals this through the story of a young woman journalist Sudheshne, who wants to investigate a bomb blast. She hails from a village but has migrated to the city in search of a job. As Sudheshne begins to investigate, she discovers that the vested interests and even the media are using a murder to their own advantage.

काबुल एक्सप्रेस

हिन्दी/150 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : आदित्य चोपड़ा; **निर्देशन और पटकथा :** कबीर खान; **छायांकन :** अंशुमान महाले; **संगीत :** जुलियस पैकियम; **कलाकार :** जॉन अब्राहम, अरशद वारसी और सलमान शाहिद

काबुल एक्सप्रेस ऐसे पांच लोगों की कहानी है जो दुनिया के अलग-अलग भागों से हैं। ये आपसी नफरत और भय से ग्रस्त हैं लेकिन युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में हालात ने उन्हें मिलजुलकर रहने पर बाध्य कर दिया है।

अमरीका की 11 सितम्बर की घटना के बाद जब अमरीका ने अफगानिस्तान पर हमला बोल दिया और तालिबानी सैनिक वहां से भाग खड़े हुए, यह फिल्म इसी स्थिति की पृष्ठभूमि में बनायी गयी है।

इसमें भारत के दो टी.वी. रिपोर्टर सुहेल खान और जय कपूर युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में एक वृत्तचित्र बनाने के इरादे से जाते हैं। वहाँ वे अफगानियों द्वारा बंदी बनाए गए एक तालिबानी सिपाही का इंटरव्यू लेने का प्रयास करते हैं। एक अफगान ड्राइवर खैबर उनकी मदद कर रहा है।

इसमें एक पाकिस्तानी इरफान, जो पूर्व में एक तालिबानी सैनिक होता है, बचकर पाकिस्तान निकल भागना चाहता है। वह बाकी के चार लोगों का अपहरण कर लेता है। इसमें एक अमेरिकन फोटोग्राफर जेसिका भी होती है।

KABUL EXPRESS

Love And War

Hindi/150 minutes/35 mm/ Colour

Producer: Aditya Chopra; **Direction** and **Screenplay**: Kabir Khan; **Cinematography**: Anshuman Mahaley; **Music**: Julius Packiam; Cast: John Abraham, Arshad Warsi & Salman Shahid

The film's setting is the post 9/11 Afghanistan when the country is under attack from America and soldiers of the Taliban regime are on the run.

Suhel Khan and Jai Kapoor, two television reporters from India, enter Afghanistan to make a documentary on the war-torn country. Their road trip becomes hell when the group is kidnapped, along with their Afghan driver, by a Pakistani , an ex-Taliban soldier trying to escape to his country.

Jessica, an American photo journalist, who follows the Indians on the trail of what she thinks is a scoop, is also captured. The film is about what happens over the next 48 hours. A special relationship develops between the Afghan, the Pakistani, the two Indians and the American.

कल्लार्ली हुवागी

कन्नड़/150 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता : एस. मधु बंगारप्पा; **निर्देशन और पटकथा :** टी.एस. नागाभरण; **छायांकन :** एच.सी. वेणु; **संगीत :** हंसलेखा; **कलाकार :** विजय राघवेन्द्र अम्बरीष, उमाशंकरी, अनंत नाग, भारती

कल्लार्ली हुवागी का तात्पर्य है - पत्थर दिल मुस्कान । यह फिल्म कल्लारली हूवागी शीर्षक से छपे एक उपन्यास पर आधारित है । यह एक तरह की इतिहास फिल्म है जिसमें कुछ-कुछ रोमांस का पुट दिया गया है । फिल्म की कहानी 1773 ईस्वी की पृष्ठभूमि से संबद्ध है और इसमें हैदर अली की दगाबाजी दिखायी गयी है । चित्रदुर्ग के राजा मदाकरी नायक की सहायता से मराठों से युद्ध जीतने के बाद हैदर अली उसके साथ विश्वासघात करता है और चित्रदुर्ग किला को हथियाने की कोशिश करता है । इसके लिए वह मदाकरी नायक से एक महीने तक युद्ध करता है । युद्ध के दौरान ही नायक के दूत जयदेव को मुसीबत में पड़ी एक बहुत ही खुबसूरत लड़की दिखायी देती है और वह उसको बचाने का प्रयास करता है और वह उसको बचाने का प्रयास करता है । वह उसे किला के अंदर स्थित अपने घर ले जाता है और यहीं से कहानी में एक नया मोड़ आता है ।

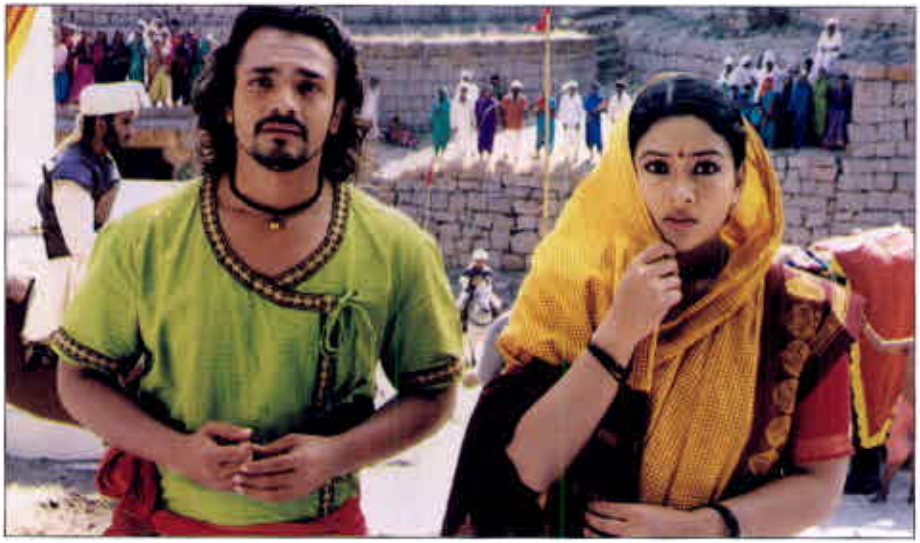

KALLARALI HOOVAGI

The Heart Of A Stone

Kannada/150 min/35mm/Colour

Producer: S. Madhu Bangarappa; **Direction** and **Screenplay:** T.S. Nagabharana; **Cinematography**: H.C. Venu; **Music:** Hamsalekha; **Cast:** Vijaya Raghavendra Ambareesh, Uma Shankari, Ananth Nag & Bharathi

A period film with an infusion of romance, based on a novel by the same name, *Kallarali Hoovagi* means stone-hearted blossom. The film is set 1773 and tells the story of Haidar Ali's treachery. After winning against the Marathas with the able help of Chitradurga king Madakari Nayaka, Haidar Ali betrays him and tries to capture Chitradurga rock-fort. The battle for the fort lasts for months during which he makes many attempts to take it. In the middle of the battle, Jayadeva, Nayaka's personal messenger, finds a damsel in distress and launches a rescue operation. He carries her to his own house in the fort and the story becomes more interesting. The film is a heady mix of romance and history.

कमली

तेलुगु/78 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : अपूर्व चित्रा; **निर्देशन और पटकथा :** के.एन.टी. शास्त्री; **छायांकन :** सन्नी जोसेफ; **संगीत :** इसाक थॉमस कोट्टूकपल्ली; **कलाकार :** एम.एस. मोहिनुद्दीन, नंदिता दास, तनिकेला भरनी

कमली और उसका पति रेड्या हैदराबाद में मजदूरी करते हैं । वे रोजी-रोटी की तलाश् में टंडा जनजातीय क्षेत्र से शहर आते हैं । उनकी जाति में मादा भ्रूण हत्या और बच्चियों से वेश्यावृत्ति करवाने का प्रचलन है । जाति के दबाव के कारण कमली अपनी एक लड़की को पहले ही बेच चुकी है । जब वह दूसरी बार गर्भवती होती है तो वह शहर के एक अस्पताल में डिलीवरी के लिए भर्ती हो जाती है । यहां उसे एक बेटा होता है जिसे अस्पताल के कर्मचारी किसी लड़की से बदल देते हैं । कमली इस पर हो हल्ला मचाती है और इसका विरोध करती है । परंतु उसका पति रेड्या चाहता है कि वह लड़की उसी के पास रहे ताकि आगे चलकर वह उसे बेच सके ।

मीडिया की दखल से कमली को अपना लड़का वापस मिल जाता है । परंतु लड़की के मां-बाप उसे वहीं छोड़कर चले जाते हैं । अब कमली इन दोनों बच्चों की परवरिश करती है । जब दोनों बच्चे बड़े हो जाते हैं तो वह उन दोनों के साथ अन्याय के प्रतीक अस्पताल पर धावा बोल देती है ।

KAMLI

Tragedy As Teacher

Telugu/78 min/35mm/Colour

Producer: Apoorva Chitra; **Direction and Screenplay:** K.N.T. Sastri, **Cinematography**: Sunny Joseph; **Music**: Issac Thomas Kottukapally; **Cast**: M.S. Mohinudden, Nandita Das, Tanikella Bharani

Drawn from real life incidents, the film mirrors the conditions of tribals in Andhra Pradesh and is based on a documentary, *Harvesting Baby Girls*.

Kamli and husband Redya are wayside laborers in Hyderabad, who belong to a community known for female feticide and female child sex rackets. Under the community's pressure, Kamli has already sold her girl child. During the second pregnancy she is in the city. The husband tells her to once again sell off the child if it's a girl in order to pay off his debts. However, she delivers a male child in a local hospital that is swapped with a female. Kamli protests against this. The husband gets an extra reason for selling the child but Kamli does not let him do that. The media picks up her story, finally leading to a thorough investigation into the child-swapping racket in the hospital.

करुत पक्षिकल

मलयालम/ 120 मिनट/ 35 एम एम/ रंगीन

निर्माता : जी. वी प्रोडक्शन्स; **निर्देशन और पटकथा :** कमल; **छायांकन :** पी सुकुमार; **संगीत :**मोहन सितारा;
कलाकार : मम्मूटी, मीना, सलीम कुमार, पद्मा प्रिया

कमल द्वारा लिखित निर्देशित यह फिल्म सच्ची घटना पर आधारित है और इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है ।

मुरुगन केरल में आ बसा है और कपड़ों पर प्रेस करके अपनी गुजर-बसर करता है। उसकी पत्नी का देहांत हो चुका है। उसकी तीन संतानें हैं । सबसे छोटी संतान-मल्ली दृष्टिहीन है और वह हमेशा इसी प्रयास में रहता है कि किसी न किसी तरह मल्ली को दिखाई देने लगे ।

KARUTHAPAKSHIKAL

Reel Slums: Work Of Art

Malayalam/120 min/35mm/Colour

Producer: G.V. Productions; **Direction** and **Screenplay:** Kamal; **Cinematography**: P. Sukumar; **Music**: Mohan Sithara; **Cast:** Mammootty, Meena, Salim Kumar, Padma Priya

The film, written and directed by Kamal, tells a story from reality, with characters who speak the language of the common man. The film tells the story of Murugan, who lives by ironing the clothes of other people. He lives in a slum and speaks a mix of Malayalam and Tamil, as he comes from Tamil Nadu. He is the representative of many Tamil descendants who live in Kerala to make a living. He looks after his children—Mayil, Azhagappan and Malli who is blind—after the death of his wife. He dreams to revive the eyesight of his daughter Malli. He does all he can to make his dream come true. Padmapriya appears in the film as Poonkodi who makes a living by begging in the streets. Murugan's life takes a new turn when Poonkodi enters his life. The film is all about the unlimited love and compassion that the people in the slums share between themselves. Highlights of the movie are the slums erected by the art director who has won many accolades before for his artistry.

खोसला का घोंसला

हिन्दी/135 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : सविता राज हीरेमथ;
निर्देशक : दिवाकर बनर्जी;
पटकथा : जयदीप साहनी;
छायांकन : अमिताभ सिंह;
कलाकार : अनुपम खेर, बोमन ईरानी, प्रवीण डबास, रणवीर शौरी, विनय पाठक और तारा शर्मा

कमल किशोर खोसला एक मध्यमवर्गीय 57 साल के व्यक्ति हैं । उनका सपना है दिल्ली में अपना घर बनाना ।

उनके तीन बच्चे हैं जिनमें सबसे बड़ा बेटा चेरी, साफ्टवेयर इंजीनियर है । चेरी का वास्तविक नाम चिरंजीलाल है । यह नाम उसे बिल्कुल पसंद नहीं है । वह अमरीका जाना चाहता है लेकिन उसके पिता नहीं चाहते कि वह घर छोड़कर अमरीका जाए । उसके चलते दोनों में अनबन है ।

इसी बीच खोसला जब अपना घर बनाकर अपने जीवन भर का सपना पूरा करने के करीब होते हैं तभी उन्हें पता चलता है कि एक स्थानीय भू माफिया खुराना ने उनके प्लाट पर कब्जा कर लिया है । जब वह उसे अपने कब्जे में लेने की कोशिश करते हैं तो उन पर जोर जबरदस्ती का आरोप लगाकर पुलिस उन्हें हवालात में बंद कर देती है । इस पर उनके बड़े बेटे चेरी का उनके प्रति मन बदलता है और वह अपनी गर्लफ्रेन्ड की सहायता से अपने पिता के बचाव में आता है ।

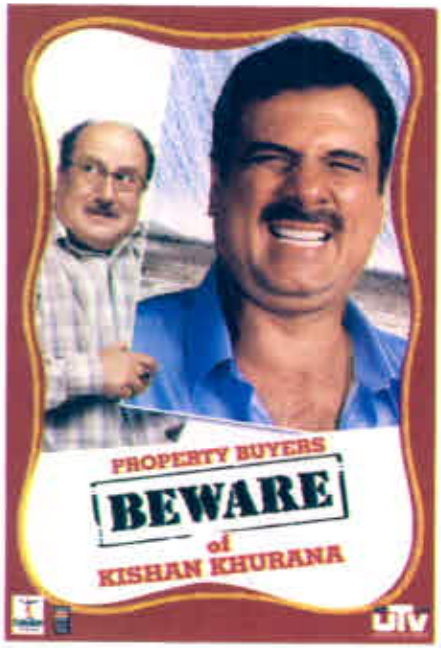

KHOSLA KA GHOSLA

Love Amidst Middle Class Dilemmas

Hindi/135 minutes/35 mm/ Colour

Producer : Savita Raj Hiremath; **Director:** Dibakar Bannerjee **Screenplay:** Jaideep Sahni **Cinematography:** Amitabha Singh **Cast:** Anupam Kher, Boman Irani, Parvin Dabas, Ranvir Shorey, Vinay Pathak & Tara Sharma

Khosla, a middle class, family man of 57 has a dream: to build his own house in a Delhi suburb.

Among his three children is Cherry who doesn't like his very Indian name, Chiranji Lal and wants to change it legally. He also wants to study abroad but the father would have none of it. Coldness sets in between the two.

Meanwhile, a local landshark , Khurana, grabs his land. Khosla fights back but ends up in jail, and unexpectedly Cherry comes to his rescue. The complex inter-play of emotions between the father and the son is brought out in simple domestic situations as is the tug of war between the heart and the head of the duo.

किट्टू

तेलुगु/90 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : के. भार्गव; **निर्देशन और पटकथा :** बी. सत्या; **एनिमेटर :** कोदवंती भारवि

यह हरे-भरे जंगल में रहने वाले एक छोटे बंदर की कहानी है । कहानी का प्रमुख पात्र किट्टू बड़ा ही नटखट, आवारा, घमंडी और जिद्दी है । वह अपने मां-बाप का कहना नहीं मानता । उसके गलत स्वाभाव के कारण उसके मां-बाप और टीचर सभी परेशान हैं । किट्टू गलत लोगों की संगत में आ जाता है और सिगरेट-शराब की लत डाल लेता है । नशे में वह ऊटपटांग काम करता है । इससे लोग परेशान होकर थाने में उसकी रिपोर्ट कर देते हैं । पुलिस उसे पकड़कर मजिस्ट्रेट के सामने पेश करती है । मजिस्ट्रेट उसे एक साल के लिए जंगल से बाहर कर देने का आदेश देता है । अब किट्टू शहर में आ जाता है । यहां अत्यधिक शोर-शराबा और भीड़-भाड़ के कारण न तो वह सो पाता है और न ही उसे कुछ खाने को मिल पाता है । एक दिन उसे एक मदारी पकड़ लेता है । वह उसे भरपेट खाना भी नहीं देता है और उसकी पिटाई भी करता है । आखिरकार एक दिन किट्टू उसकी कैद से निकल भागता है । उसे अपन विगत व्यवहार पर बहुत पछतावा होता है । वहां जंगल जाकर सभी से माफी मांगता है और अपनी नई जिन्दगी शुरू करता है ।

KITTU

All's Well That Ends Well

Telugu/90 min/35mm/Colour

Producer : K. Bhargava; **Direction** and **Screenplay:** B. Satya **Animator:** Kodavanti Bharavi

Kittu is the story of a monkey kid in a beautiful forest. Naughty, careless, proud and adamant – Kittu always makes fun of everyone and everything. Then he falls into bad company, landing in a police station following a complaint against him. The magistrate orders Kittu to be exiled from the forest for a year. He leaves the forest unaware of the struggles to come. The city confuses and frightens him. Food and sleep are also in short supply. Life becomes more miserable.

Kittu returns home and begs forgiveness. The story has a happy ending with a reformed Kittu opening a new chapter of his life in the forest.

कोट्टि चेन्नैया

तुलु/130 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता और पटकथा लेखक : आर. धनराज ; **निर्देशक :** आनंद पी. राज; **छायांकन :** एस.एन.बी. मूर्ति; **संगीत :** बी. मनोहर; **कलाकार :** बालकृष्ण शेट्टी, नीतू, शेकर कोटियन

कोटि चेन्नाया तुलुभाषियों का एक ऐसा ऐतिहासिक नायक है जो दासता और सामंतवादी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करता है । उसके द्वारा अपने समय के आततायी शासकों के विरुद्ध किया गया संघर्ष, उसे तुलुभाषियों में न केवल सम्मानीय अपितु पूजनीय बना देता है । तुलु लोक कथाओं में इस बात का गुणगान है कि कोटि चेन्नाया का जन्म लोगों को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए हुआ था । वह त्याग की प्रतिमूर्ति और एक ऐसा सिपाही था जिसने अपने लोगों की भलाई के लिए दुनिया का सारा सुख-वैभव त्याग दिया था । यह फिल्म उसी को एक श्रद्धांजलि है ।

KOTTI CHENNAYA

A Tulu Hero's Tale

Tulu/ 130 min/35mm/Colour

Producer and Screenplaywriter: R. Dhanaraj; **Director: Anand P. Raj; Cinematography**: S.N. B. Murthy; **Music:** V. Manohar; **Cast:** Balakrishna Shetty, Neetu, Shekar Kotiyan

He is a historical hero among the Tulu speaking people for his war against slavery and feudalism. For his heroic struggles against the oppressive rulers of his day, Koti Chennaya is held in deep respect and devotion by the Tulus. Tulu folktales say he was born just to bring his people out of the clutches of slavery. He was almost a holy soldier who sacrificed worldly pleasures for the sake of his people. The film is a tribute to this folk hero.

कृष

हिन्दी/185 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता और **निर्देशक** : राकेश रोशन; **पटकथा** : सचिन भौमिक; **छायांकन** : संतोष थुंडियाल; **संगीत** : राजेश रोशन **कलाकार** : रितिक रोशन, नसीरुद्दीन शाह, प्रियंका चोपड़ा और रेखा

कृष्णा को अपने पिता से दैवी शक्ति प्राप्त होती है । उसके माता-पिता दोनों का देहांत हो चुका है । कृष्णा की देखभाल उसकी दादी सोनिया करती हैं । उसे हमेशा यह डर सताता रहता है कि यदि बच्चे की दैवी शक्ति के बारे में किसी को पता चल गया तो बच्चा जीवित नहीं बचेगा । इसलिए वह बच्चे को लेकर पहाड़ पर बसे दूर-दराज के एक गांव में चली जाती है । लेकिन ट्रैकिंग करने वाले उस पहाड़ पर भी पहुंच जाते हैं । इनमें सिंगापुर की एक टीवी पत्रकार भी है ।

वह कृष्णा की अदभुत शक्ति को पहचान लेती है । जब वह वापस सिंगापुर जाती है तो उसे नौकरी से हटाने की तैयारी हो रही होती है । उसे तुरंत एक उपाय सूझता है। वह कृष्णा से संपर्क साधती है और उसे अपने प्यार की दुहाई देते हुए सिंगापुर चले आने को कहती है । वह जानती है कि वह उससे प्यार नहीं करती, फिर भी अपनी नौकरी बचाने के लिए वह कृष्णा की दैवी शक्ति को लोगों के सामने लाना चाहती है ।

KRRISH

Of Man And Superman

Hindi/185 minutes/35 mm/Colour

Director: Rakesh Roshan; **Producer:** **Rakesh Roshan** **Screenplay:** Sachin Bhowmick; **Cinematography:** Santosh Thundiyal; **Music**: Rajesh Roshan; **Cast**: Hrithik Roshan, Naseeruddin Shah, Priyanka Chopra, Rekha

Krishna is a supernaturally gifted baby. But his parents are both dead and his paternal grandmother Sonia is paranoid about the child meeting the same fate if his powers are discovered. So, she migrates to a remote mountain village. The isolation is broken when trekkers land in the valley nearby, one of who is Priya, a television journalist from Singapore.

Krishna's amazing powers become evident to her. Back in Singapore, on the verge of being sacked, she decides to trick him into coming to Singapore—her plan is to display his rare talents and save her job.

Krishna's grandmother grudgingly allows him to go only on the promise that he would not divulge his secret powers.

लगे रहो मुन्नाभाई

हिन्दी/144 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : विधु विनोद चोपड़ा; निर्देशक : राज कुमार हिरानी; पटकथा : अभिजात जोशी, राज कुमार हिरानी और विधु विनोद चोपड़ा; **छायांकन :** सी.के. मुरलीधरन; **संगीत :** शांतनु मोइत्रा **कलाकार:** संजय दत्त, अरशद वारसी और विद्या बालन

आवारा मुन्ना रॉबिनहुड की तर्ज पर एक खुबसूरत रेडियो जॉकी जान्हवी का दिल जीतने के लिए गांधी विद्वान होने का नाटक करता है ।

जान्हवी अपने 'सेकेंड इनिंग्स हाउस' नामक घर में रह रहे वरिष्ठ नागरिकों को गांधी पर भाषण देने के लिए मुन्ना को आमंत्रित करती है । इसके लिए मुन्ना लगातार तीन दिन और तीन रात गांधी के जीवन और दर्शन से संबंधित किताबों को उलटता-पलटता रहता है । इस दरम्यान महात्मा गांधी की छाया उसके सामने आती है और मुन्ना को अपनी सहायता और सलाह देती है । बापू की सहायता से मुन्ना जान्हवी को प्रभावित करने में सफल रहता है । वह अपने स्वयं के लिए और अपने समाज के लिए आशा की किरण बन जाता है । बाद में वह जान्हवी और गांधी जी की छाया की सहायता से एक रेडियो शो शुरू करता है जिसमें वह अपने श्रोताओं को रोजमर्रा की समस्याओं निपटने के लिए गांधीगिरी आजमाने की सलाह देता है ।

LAGE RAHO MUNNABHAI

Fake It To Make It?

Hindi/144 minutes/35 mm/ Colour

Producer Vidhu Vinod Chopra; **Director**: Raj Kumar Hirani **Screenplay:** Abhijat Joshi, Raj Kumar Hirani and Vidhu Vinod Chopra; **Cinematography**: C K Muralidharan; Music: Shantanu Moitra; **Cast**: Sanjay Dutt, Arshad Warsi and Vidya Balan

Lage Raho Munnabhai brings alive the truism that sometimes you can fake it to make it. Munna, a lovable hoodlum in the tradition of Robin Hood, pretends to be a Gandhi scholar to win the heart of a beautiful radio jockey, Jahnavi.

Jahnavi invites Munna to lecture on Mahatma Gandhi to a community of senior citizens who live in her home, called the Second Innings House. In order to prepare for this event, Munna pours over books on Bapu's life and times for three days.

With Bapu's "help", Munna succeeds in impressing Jahnavi and even starts co-hosting a radio-show with her, guiding his audience to use Gandhigiri, a neologism for Gandhism, to solve everyday problems using truth and non-violence.

ओंकारा

हिन्दी/155 मिनट/35 एम एम /रंगीन

निर्माता : कुमार मंगत, केतन मारू तथा नीलम पाठक; **निर्देशन और संगीत** : विशाल भारद्वाज, **पटकथा** : विशाल भारद्वाज, रोबिन भट्ट और अभिषेक चौबे; **छायांकन** : मुफ्ती तसादुक हुसैन; **कलाकार** : अजय देवगन, सैफ अलीखान, करीना कपूर

ओंकारा में भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के एक दूरदराज के गांव की सत्ता की लड़ाई को दिखाया गया है ।

ओंकारा अपराधियों के एक गैंग का सरदार होता है । उसके गैंग में अन्य लोगों के साथ-साथ शातिर दिमाग लंगड़ा और रूआबदार व्यक्तित्व वाला केतु शामिल होता है । ओंकारा केतु को अपना चीफ सिपहसालार नियुक्त करता है । इससे लंगड़ा के तन-बदन में आग लग जाती है और वह केतु को ओंकारा की नजरों से गिराने का षडयंत्र रचता है । वह अपनी पत्नी इंदु की मदद से ओंकारा के कान भरता है और उसे यह समझाने में सफल हो जाता है कि किस तरह उसकी खूबसूरत पत्नी 'डाली' उसके चीफ सिपहसालार केतु के साथ रंगरेलियां मनाती है । इससे ओंकारा का खून खौल उठता है और वह उन दोनों को सजा देने की ठान लेता है । लेकिन जब तक ओंकारा को हकीकत पता चलती है, बहुत देर हो चुकी होती है ।

OMKARA

Othello In Indian Setting

Hindi/155 min/35 mm/ Colour

Producers: Kumar Mangat, Ketan Maroo& Neelam Pathak; **Direction** and **Music:** Vishal Bharadwaj; **Screenplay**: Vishal Bharadwaj, Robin Bhatt and Abhishek Chobey **Cinematography**: Mufti Tassaduq Hussain; **Cast**: Ajay Devgan, Saif Ali Khan & Kareena Kapoor

An adaptation of Othello, *Omkara* is the second time a work of William Shakespeare has come alive on the Hindi cinema screen, the first being Maqbool, adapted from Macbeth by the same director.

Omkara is the leader of a criminal gang that includes the crafty Langda and the dashing Kesu. Smitten by Kesu's appointment as Omkara's chief lieutenant, Langda hatches a plot to bring him down. With the unwitting help of his wife, Indu, Langda slowly manages to poison Omkara's ears that his beautiful wife, Dolly, is romantically linked with Kesu. All hell breaks loose as Omkara decides to take action. By the time Omkara realizes his folly it's too late.

पारुती वीरन

तमिल/150 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : के.ई. ज्ञानवेला राजा;
निर्देशन और पटकथा : अमीर;
छायांकन : रामजी; **संगीत :** युवन शंकर राजा; **कलाकार :** कार्तिक शिव कुमार, प्रियमणि, पोन्नावन्ना, सर्वनन और सुजाता

यह कहानी मदुरै के आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र की पृष्ठभूमि पर आधारित है । इसमें एक गांव पारिथियुर दिखाया गया है जहां पारुती वीरन अपने चाचा सरवानन के साथ रहता है । उसके गांव की एक लड़की मुथझागू की जान खतरे में पड़ जाती है। तब वह बड़ी फुर्ती और दिलेरी से उसको बचा लेता है और तब से पूरा गांव उसे 'हीरो' समझने लगता है। इस घटना के बाद से मुथाझागू उसे प्यार करने लगती है लेकिन पारुती उससे कटा-कटा रहता है । कभी-कभी तो वह काफी तैश में आ जाता है । लेकिन जब वह यह समझ पाता है कि मुथाझागू उसे दिल से चाहती है तो वह उससे शादी करने की सोचता है । लेकिन तभी दोनों परिवारों का आपसी झगड़ा आड़े आ जाता है ।

PARUTHI VEERAN

A Tragic Love Story

Tamil/150 min/35mm/Colour

Producer: K.E. Gnanavela Raja; **Direction and Screenplay:** Ameer; **Cinematography**: Ramji, **Music:** Yuvan Shankar Raja; **Cast:** Karthik Sivakumar, Priyamani, Ponnavanna, Sarvanan and Sujatha

The story is set in a rural area around Madurai. Paruthiveeran lives with his uncle. He is treated as a hero in his village due to his spontaneous and heroic rescue of a young Muthazhagu who then falls in love with him. But he remains unmoved and keeps her at bay. At times he is violent too. When he understands her true love for him and decides to marry her, the feud between the two families comes in the way. Determined as he is to possess her, he warns her against marrying anyone else on the insistence of her parents. What follows is a shocking climax.

पोदोक्खेप

बंगला/ 90 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : नितेश शर्मा; **निर्देशन और पटकथा :** सुमन घोष; **छायांकन :** समीरन दत्ता; **संगीत :** मयुख भौमिक; **कलाकार :** सावित्री चटर्जी, सौमित्र चटर्जी, नंदिता दास और तोता रॉयचौधरी

पोदोक्खेप का तात्पर्य है पहला कदम । यह फिल्म वृद्धावस्था और अकेलापन पर केन्द्रित है । पोडोक्खेप में एक सेवानिवृत्त व्यक्ति शशांक पालित और उसकी युवा बेटी के बीच आपसी संबंधों की खींचतान को दर्शाया गया है ।

पालित एकदम चुप रहने वाले ऐसे इंसान है जो अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं करते। उनकी पुत्री एक आधुनिक विचारों वाली महिला है जो अपने एक सहकर्मी से प्यार करती है । वह अपने पिता को कभी नफरत करती है और कभी उनके प्रति अपने दायित्व बोध से ग्रस्त हो जाती है । कुल मिलाकर वे दोनों अपनी-अपनी दुनिया तक सीमित हैं।

तभी एक छोटी बच्ची तृषा पालित के जीवन में रोशनी बनकर आती है ।

PODOPKKHEP

Growing Up's Tough But So Is Growing Old

Bengali//90 minutes/35 mm/ Colour

Producer: Nitesh Sharma; **Direction** and **Screenplay:** Suman Ghosh; **Cinematography:** Samiran Dutta; **Music:** Mayukh Bhaumik; **Cast:** Sabitri Chatterjee, Soumitra Chatterjee, Nandita Das and Tota Roychowdhury

Podopkkhep, or the first step, deals with the complex theme of old age and loneliness.

Podokkhep is about the constant flux in the relationship between Shashanka Palit, a retired man, and his adult daughter. Palit has to constantly re-negotiate with himself, his daughter, and with the little child Trisha, whose parents, the Sens, move in as neighbours.

Palit is a reticent old man. The daughter is a modern woman and her feelings towards the father vary from plain disgust to a sense of responsibility to a deep and abiding love.

Little Trisha arrives like a ray of bright sunshine in Palit's life.

पूजा पाईं फूलतिए

उड़िया/152 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : पद्मिनी पूती; **निर्देशन और पटकथा :** गदाधर पूती;
छायांकन : जुगल देबाता; **संगीत :** ब्रजेन्द्र नायक; **कलाकार :** अद्याशा मोहापात्रा, नैना दास, आकांक्षा कबि

बारह साल की एक अनाथ लड़की एक ईंट भट्ठे पर अपने दादा के साथ रहती है। वह पढ़ाई-लिखाई और दूसरे कामों में काफी तेज है । भट्ठे का मालिक आगे की पढ़ाई के लिए उसे शहर स्थित अपने घर ले जाता है । यहां उसकी पत्नी पूजा से घर का काम करवाती है और स्कूल नहीं जाने देती । इसी बीच भट्ठा मालिक की बेटी मिकी और पूजा में गहरी दोस्ती हो जाती है ।

इसी बीच मिकी की मां पूजा को घर से बाहर कर देती है क्योंकि उसे नीच जाति पूजा के तौर तरीके पसंद नहीं होते । पूजा को एक डाक्टर परिवार अपना लेता है ।

पूजा के चले जाने से मिकी को काफी सदमा पहुंचता है । एक दिन जब पूजा की याद में रो रही होती है तभी उसकी मां गुस्से में आकर उसकी पिटाई कर देती है । इससे मिकी की आँखों की रोशनी चली जाती है ।

POOJA PAEEN PHOOLATIE

Children : The Original Soul Mates

Oriya/152 min/35mm/Colour

Producer: Padmini Puty; **Direction** and **Screenplay:** Gadadhar Puty; **Cinematography:** Jugal Debata; **Music:** Brajendra Nayak; **Cast:** Adyasha Mohapatra, Naina Dash, Akansha Kabi

Pooja, a parentless, bright 12-year-old living in a brickyard, is taken by the owner to his city house for higher studies but his wife engages Pooja as a domestic hand and does not allow her to go to school. A strong bond develops between her pampered daughter Mickey and Pooja. Soon Pooja is driven out of their house but gets adopted by a doctor's family, and there she goes to school and again excels.

Mickey is however heartbroken at the forced separation. The two tender hearts meet once again but in a very diffrent setting

Pooja, who loves roses, eventually proves that the short bloom of a rose is worth it due to the joy it gives all around.

पुलिजन्मम

मलयालम/92 मिनट/ 35 एमएम/रंगीन

निर्माता : एम.जी. विजय;
निर्देशक : प्रियनंदनन; **पटकथा :** एन. प्रभाकरन; **छायांकन :** के.जी. जायन;
संगीतः कैथाप्रम विश्वनाथन;
कलाकार : सिंधु मेनन, मुरली, विनीता कुमार

प्रकासन एक शिक्षित और आदर्शवादी युवा है जो समाजिक अन्याय और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करता है ।

फिल्म केवल प्रकासन के बारे में ही नहीं है अपितु एक काल्पनिक कथा कारी गुरूक्कल के बारे में भी है । प्रकासन इसको लेकर एक नाटक निर्देशित कर रहा है । प्रकासन और कारी गुरूक्कल के जीवन में काफी समानता है । कारी एक मार्शल आर्टिस्ट है और उसके पास दैवीय शक्तियां भी है । उसे अपने राजा की दिमागी बीमारी दूर करने के लिए जंगल से चीता के पूंछ के बाल लाने होते हैं । इसके लिए उसे जंगल में चीता बनकर जाना पड़ता है । वापस आकर पुनः मनुष्य बनने के लिए उसकी पत्नी को उस पर चावल धुले पानी की बाल्टी उड़ेलनी है और उसे झाड़ू से मारना है ।

लेकिन कारी जब चीता रूप में जंगल से लौटता है, उसकी पत्नी डर जाती है और भाग जाती है । कारी चीता ही बना रहता है और जंगल में चला जाता है ।

PULLIJANMAM

Truth Is Victorious But...

Malayalam/92 min/ 35mm/Colour

Producer: M.G. Vijay; **Director:** Priyanandanan; **Screenplay:** N. Prabhakaran; **Cinematography:** K.G. Jayan; **Music:** Kaithapram Vishwanathan; **Cast:** Sindhu Menon, Murali Vineeth Kumra

Prakasan, an educated and idealistic young man, is deeply committed to his community. Although qualified to be in greener pastures, he prefers to live in a village where he is fighting against social injustice and exploitation. In his battle for truth, he eventually finds himself isolated as his friends, family and the political party break away from him.

The film is not just about Prakasan but a legend called Kari Gurukkal about whom Prakasan is directing a play. Prakasan's reality matches that of the legendary Kari Gurukkal. Kari, a martial artiste, possesses supernatural powers.

The story depicts the degeneration of our times when the upholders of truth find themselves alienated from society.

क्वेस्ट

अंग्रेजी/112 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता - निर्देशकः अमोल पालेकर; **पटकथा और वेशभूषाः** संध्या गोखले; **छायांकनः** देबू देवधर; **संगीतः** आनंद मोदक; **कलाकारः** ऋषि देशपांडे, मृणाल कुलकर्णी, विजय मेहता

साई और आदित्य पति पत्नी हैं । साई एक जानी मानी वकील हैं जबकि उसका पति आदित्य एक पांच सितारा होटल में हेड शेफ है । उन दोनों के एक आठ वर्षीय बेटा निलय भी है । दोनों ही आर्थिक रूप से संपन्न और खुशहाल हैं । लेकिन तभी एक दिन साई को पता चलता है कि उसका पति समलिंगी है और उसके किसी और पुरुष से संबंध हैं । इससे दोनों की जिन्दगी में तूफान आ जाता है और उनकी शादी टूट जाती है ।

QUEST

Elusive Quest

English/112 min/35mm/Colour

Producer and Director: Amol Palekar; **Screenplay and Costume:** Sandhya Gokhale; **Cinematography**: Debu Deodhar **Music:** Anand Modak; **Cast:** Rishi Deshpande, Mrinal Kulkarni and Vijaya Mehta

Luscious green spreads. Countless seasons spent together. Such tender moments cherished by a very happy couple, Sai and Aditya. She is a reputed advocate, he is a head chef in a high profile hotel, their eight-year-old son Nilay, her independent mother, his benevolent father, close friends and colleagues. A picture perfect family!

Everything gets shattered one day. Their life takes a slippery turn after Aditya's confession about his ongoing gay relationship. Torn between her ideological positions and marital faith on one hand, and her devastating personal pain on the other, she decides to leave him. In order to avoid social embarrassment, he chooses to be a recluse. Nilay is oblivious of this turmoil. Days roll on and their quest for a harmonious life is endless.

रात्रिमड़ा

मलयालम/123 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : बी. राकेश; **निर्देशन और पटकथा :** लेनिन राजेन्द्रन, **छायांकन :** एस. कुमार, **संगीत :** रमेश नारायणन; **कलाकार :** विनीत और मीरा जैस्मिन

हरिकृष्णन एक दुर्घटना में अपंग हो जाता है । लेकिन इससे उसकी महत्वकांक्षा पर फर्क नहीं पड़ता और वह अब भी नृत्य निर्देशन के क्षेत्र में हस्ती बनने का सपना देखता है और रात्रिमड़ा नाम के एक प्रोडक्शन पर अपने ट्रूप के साथ काम करता रहता है ।

फिल्म के पहले भाग में यह दिखाया गया है कि किस तरह इंटरनेट के माध्यम से हरिकृष्णन मीरा के साथ प्रेम बढ़ाता है । इंटरनेट पर चैटिंग के माध्यम से मीरा कइ सपने बुनने लगती है ओर उसे अपने दिल की गहराइयों से प्यार करने लगती है ।

लेकिन मीरा और हरिकृष्णन जब आमने-सामने होते हैं तो उसका सपना टूट जाता है । अपंग हरिकृष्णन को देखकर उसके अंतर्मन में एक तूफान सा आ जाता है ।

बहरहाल, व्हील चेयर के सहारे चल फिर सकने वाले हरिकृष्णन के जीवन में असुरक्षा का भाव इतना अधिक बढ़ जाता है कि उन दोनों का वैवाहिक संबंध खतरे में पड़ जाता है ।

RATHRIMAZHA

Human Illusions And Insecurity

Malayalam/123 min/35mm/Colour

Producer: B Rakesh; **Direction** and **Screenplay:** Lenin Rajendran; **Cinematography**: S Kumar **Music:** Ramesh Narayanan; **Cast:** Vineeth & Meera Jasmine

Lenin Rajendran's film *Rathrimazha* is the story of a dancer who becomes paralytic after an accident. However, his ambition survives the accident.

The first part of the film is about Harikrishan's courtship with Meera in the virtual internet world, something which leaves her totally captivated by Harikrishan's elusive personality. But the illusions blossoming in the virtual world collapse when Meera discovers the devastating reality.

The film examines the kaleidoscopic changes in inter-personal relationships. It also takes a close look into the subtle interplay of conflicting emotions and egos that find expression in the finest creative endeavours. It is a process that unleashes base instincts that threaten to tear the fabric of interpersonal relations.

शेवरी

मराठी/104 मिनट/ 35 एमएम/रंगीन

निर्माता : नीना कुलकर्णी;
निर्देशन और पटकथा : गजेन्द्र अहिरे,
कलाकार : नीना कुलकर्णी, मोहन अगाशे और मीता वशिष्ठ

विद्या बर्वे एक तलाकशुदा कामकाजी महिला है जो मुंबई के एक किराए के फ्लैट में एक पुरुष के साथ रहती है । एक रात को विद्या जब घर पहुंचती है तो पाती है कि फ्लैट में ताला लगा है । वह सारी रात सड़क पर गुजारने को मजबूर हो जाती है ।

शेवरी का तात्पर्य है एक आम औरत । विद्या भी एक आम औरत है जिसकी भावनाएं और अपेक्षाएं दूसरी महिलाओं जैसी ही हैं । वह महसूस करती है कि कोई भी रिश्ता चिरस्थायी नहीं होता । समय आने पर हर रिश्ते का अंत हो जाता है । फिर भी अधिकतर लोग किसी न किसी कारण से अपने रिश्तों को खींचते रहते हैं । उसने अपने पति और पुत्र के लिए काफी त्याग किया है लेकिन उसके बेटे का व्यवहार यह साबित कर देता है कि वह भी और मर्दों की तरह ही है ।

SHEVRI

A Woman's Identity Crisis

Marathi/104 min/35mm/Colour

Producer: Neena Kulkarni; **Direction** and **Screenplay:** Gajendra Ahire;
Cast: Neena Kulkarni, Mohan Agashe and Mita Vashist

Vidya Barve is a divorced, working woman sharing a rented flat with a woman in Mumbai. The film deals with a single night when Vidya, locked out of her home, is forced to be on the road. As she ambles along the deserted streets waiting for daybreak, she is frightened, angry, lonely and confused. She keeps recalling her days with the family, the estranged husband, the teenaged son staying with her mother in Nasik, her office and her flat-mate.

She realizes that every relationship comes with an expiry date. Once that happens the relationship stagnates. However most people prolong the relationship, either because they don't have a choice or because they don't have the courage to break free.

ट्रैफिक सिग्नल

हिन्दी/134 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : परसेप्ट पिक्चर कंपनी;
निर्देशक : मधुर भंडारकर;
छायांकन : महेश लिमये;
संगीत : समीर टंडन; **कलाकार :** नीतु चन्द्रा, कोंकणा सेन शर्मा और कुणाल खेमू

हमारे देश में किस तरह संगठित रूप से भीख मांगने का गोरखधंधा चल रहा है, इसी बात को इस फिल्म में दर्शाया गया है। हिजड़े, कोढ़ी, लूले-लंगड़े, नशेड़ी और बच्चे भारत के सर्वाधिक भीड़-भाड़ वाले मुंबई शहर की लाल बत्तियों पर भीख मांगने का धंधा करते हैं।

फिल्म में सिलसिला नाम का एक अनाथ लड़का होता है जो किसी सड़क के किनारे पैदा होता है और वहीं पलता बढ़ता है। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बनती हैं कि सिलसिला उस लालबत्ती पर धमाका करने की साजिश में फंस जाता है।

TRAFFIC SIGNAL

Story Of Urban Underbelly

Hindi/134 min/35mm/Colour

Producer: Percept Picture Company; **Director:** Madhur Bhandarkar; **Cinematography:** Mahesh Limaye; **Music:** Shameer Tandon; **Cast:** Neetu Chandra, Konkona Sen Sharma & Kunal Khemu

Organised beggary in a country that has not been able to organise millions of its workforce? That exactly is the story of *Traffic Signal*. It's about the marginalised: eunuchs, lepers, physically handicapped people, drug addicts and children begging at the traffic signals of India's most congested metropolitan city, Mumbai.

Silsila, a young orphan who was born on the road and took his first step at one such junction, grows up to be its "manager". By a force of circumstances, Silsila however gets drawn into a plan for the destruction of the traffic junction as he carries out his boss's order out of blind loyalty. The junction faces destruction as does Silsila and all the people who depend upon it for livelihood.

वैयिल

तमिल/151 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : एस. शंकर; **निर्देशक** : जी. वसंत बालन; **छायांकन** : मधी; **संगीत** : जी.वी. प्रकाश कुमार; **कलाकार** : पशुपति, भारत, भावना और श्रिया रेड्डी

इस फिल्म का नायक मुरुगेसन है जो अपनी कहानी खुद बयान करता है । वह बताता है कि किस तरह उसके पिता ने तमाम मुसीबतें उठाकर अपने चारों बच्चों, दो लड़कों और दो लड़कियों को पाल पोसकर बड़ा किया । मुरुगेसन अपने छोटे भाई काथिर को अत्यधिक प्यार करता है ।

किशोरावस्था में अन्य लड़कों की भांति मुरुगेसन को भी फिल्मों का अत्यधिक शौक था और अक्सर वह स्कूल से भागकर फिल्म देखने जाता था । एक दिन उसके पिता ने उसे पकड़ लिया और उसकी जमकर धुनाई कर दी । इससे नाराज मुरुगेसन गहने-जेवर और नकदी लेकर घर से भाग गया । आखिरकार 20 साल बाद मुरुगेसन को अपने घर परिवार की याद आती है । वह घर वापस आता है । यहां वह देखता है कि उसका छोटा भाई काथिर एक अच्छी खासी विज्ञापन एजेंसी चला रहा है और काफी संपन्न भी है । अब उसे अपनी हालत पर बहुत अधिक पछतावा होता है कि वह उसका बड़ा भाई होकर भी एकदम आवारा-सा घूमता रहता है ।

VEYIL

Life Is Stranger Than Fiction

Tamil/151 min/35mm/Colour

Producer: S. Shankar; **Director:** G. Vasantha Balan; **Cinematography:** Madhie; **Music:** G.V. Prakash Kumar; **Cast:** Pasupathy, Bharat, Bhavana & Sriya Reddy

The story is told through the protagonist Murugesan whose father had brought up his four children with lot of hardship. He loves his younger brother Katir very much. Murugesan is hooked on films like most other adolescents and often bunks school. One day he is caught by his father and gets a beating. In protest, Murugesan runs away from home, taking money and jewels. Later, he comes into contact with a theatre person in a nearby town and slowly the theatre becomes his home.

Later the theatre is demolished because the owner can no longer sustain it, forcing Murugsen to turn to his family after a gap of 20 years. He returns home but there is more mental turbulence for him there.

वारिस शाह - इश्क दा वारिस

पंजाबी/ 138 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : साईं प्रोडक्शंस;
निर्देशक : मनोज पुंज,
पटकथा : सूरज सनीम;
छायांकन : आर.ए. कृष्णा;
संगीत : जयदेव कुमार; **कलाकार :** जूही चावला, दिव्या दत्ता और गुरदास मान

सैयद वारिस शाह एक पंजाबी सूफी कवि थे । उन्होंने हीर और उसकी प्रेमिका रांझा की परंपरागत लोक कथा के आधार पर हीर रांझा नामक काव्य की रचना की है और इस रचना ने उन्हें काव्य जगत में अमर बना दिया है । हीर प्राचीन पंजाबी साहित्य की अतिमहत्वपूर्ण कृति है । वारिस शाह कसूर के पीर मखदूम के शि-य थे । उनके माता-पिता का देहांत बाल्यकाल में ही हो गया था । इसके बाद वह कसूर में अपने गुरु के साथ रहने लगे । यहां अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, वह मल्काहंस आ गए । यहां वह एक ऐतिहासिक मस्जिद के निकट एक कमरे में रहने लगे ।

वारिसशाह, गांव के मुखिया की बेटी भागपरी को प्यार करते थे और यह फिल्म उसी के बारे में है ।

WARIS SHAH—ISHQ DA WARIS

Love, Life And Immortality

Punjabi/138 minutes/35 mm/Colour

Producer: Sai Productions; **Director:** Manoj Punj; **Screenplay:** Suraj Sanim; **Cinematography:** R.A. Krishnaa; **Music:** Jaidev Kumar; **Cast:** Juhi Chawla, Divya Dutta & Gurdas Maan

Syed Waris Shah was a Punjabi sufi poet, best-known for his seminal work Heer Ranjha.

Waris Shah was a disciple of Peer Makhdum of Kasur. He was in love with the village headman's daughter, Bhagpari, and the film is about his unrequitted love. There is all-out opposition to the romance and the duo is literally tested by fire to prove that their love is not carnal. The local arbiter asks them to walk on burning coal; if they get blisters, they have bitten the forbidden fruit and if not they are pure. Both pass the test and Baghpari gets married to Inayat. Meanwhile, Sabbo, who is obsessed with Waris, fails to woo him and burns his most celebrated work, Heer.

यात्रा

हिन्दी/125 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : विपिन कुमार वोहरा; **निर्देशन, पटकथा और छायांकन :** गौतम घोष; **संगीत :** गौतम घोष और खय्याम; **कलाकार :** रेखा, नाना पाटेकर और दीप्ति नवल

एक जाने माने लेखक दशरथ जोगलेकर एक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त करने के लिए दिल्ली जा रहे हैं । यात्रा के दौरान वह एक युवा फिल्म निर्माता, जो उनके लेख का कायल है, से मिलते हैं । इस मुलाकात से दशरथ की विगत की यादें ताजा हो उठती हैं । दोनों बीते दिनों की बातें करते-करते दशरथ की एक मशहूर किताब 'जनाजा' के पात्रों पर चर्चा करने लगते हैं । 'जनाजा' एक मुजरा गायिका लाजवंती की वास्तविक कहानी पर आधारित पुस्तक है ।

बाद में एक दिन दशरथ उसी गली में पहुंच जाते हैं जहां लाजवंती रहती है । लेकिन अब न तो वह गली और न ही लाजवंती, पहले जैसी रही है । अब वह लज्जोबाई से लीसा हो गई है । शास्त्रीय गायक के बजाय अब वह 'पॉप' गा रही है । लेकिन दशरथ की खातिर वह कुछ पुराने गाने गुनगनाती है ।

YATRA

Blending Fact and Fiction

Hindi/125 minutes/35 mm/Colour

Producer: Bipin Kumar Vohra; **Direction, Screenplay** and **Cinematography:** Goutam Ghosh; **Music:** Goutam Ghose and Khayyam; **Cast:** Rekha, Nana Patekar & Deepti Naval

Dasrath Joglekar, a celebrated writer, travels to Delhi to receive a prestigious literary award. During the journey he meets a young filmmaker who is an ardent fan of his writing. The encounter brings back memories from Dasrath's past.

Fact and fiction merge to create a new character and new work for Dasrath. He receives the award but he is torn between the last story and the new one shaping up in his head. The dilemma drives him to disappear from the hotel. His family and friends are traumatised by his disappearance.

Yatra is the story of the personal and creative journey of a writer and filmmaker.

कथासार : Synopses :
गैर कथाचित्र Non-Feature Films

अन्दियुम

मलयालम/ 15 मिनट/35 मिमी/रंगीन

निर्माता : एन दिनेश राज कुमार;
निर्देशक : जैकब वर्गीस

यह कहानी ग्रामीण केरल के एक ऐसे 54 वर्षीय जल्लाद के बारे में है जिसे अपने ही कस्बे से बहिष्कृत कर दिया गया है और जो उन अनगिनत लोगों के शाप से ग्रस्त है जिनके संबंधियों को उसने फांसी पर चढाया है । अंततः वह अपराध बोध और पश्चताप से ग्रस्त होकर अपने प्राण त्याग देता है ।

शुरूआत में जल्लाद को परंपरागत केरल कथकली नृत्य को देखते हुए दर्शाया जाता है । कथकली नर्तकों के चेहरे भूत जैसे दिखायी देते हैं और वे बार-बार जल्लाद के चेहरे पर भय और अपराध का भाव ले आते हैं । अगले कुछ दृश्यों में जल्लाद के जेल मे प्रवेश करते और वहां उस आदमी के एक वृद्ध संबंधी से मिलते दिखाया जाता है जिसे वह फांसी पर लटकाने वाला है । वृद्ध उसे भला बुरा कहता है । जेल अधीक्षक जल्लाद को याद दिलाता है कि कल उसे अमुक व्यक्ति को फांसी पर चढ़ाना है ।

इस स्थिति में जल्लाद के अंदर क्या भाव पैदा होते हैं, उसके अंतर्मन में क्या कुछ चल रहा होता है, इस बात को इस फिल्म में चित्रित किया गया है ।

ANDHIYUM

Malayalam/15 min/35mm/Colour

Producer: N. Dinesh Raj Kumar;
Director: Jacob Verghese

The story revolves around a 54-year-old hangman in rural Kerala treated as an outlaw in his own town and cursed by innumerable relatives of the people he hanged. He finally dies under the weight of guilt. The film begins with the hangman watching a traditional Kerala Kathakali dance program. The entire film is interspersed with repeated appearances of these dancers as apparitions, who haunt the hangman. Scenes of his home and 'workplace' are captured vividly.

बिशर ब्लूज़

बंगला/79 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता और **निर्देशक**: अमिताभ चक्रवर्ती; **संपादक** : अमिताभ चक्रवर्ती और अमित देबनाथ;
ऑडियोग्राफर : पार्थ बर्मन

यह बंगाल के फकीरों पर आधारित एक फिल्म है जिसमें यह दिखाया गया है कि किस तरह वहां के फकीर आज भी कट्टर संहितावाद के अनुयायी हैं और अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में संगीत और आध्यात्मिकता में लीन रहते हैं । बिशार इस्लाम धर्म की एक शाखा है जिसके अधिकतर अनुयायी निम्न जाति से होते हैं और वे शरीयत को बहुत अधिक अहमियत नहीं देते । बंगाल में बिशार समुदाय के लोग बौद्ध, तांत्रिक और वैष्णव परंपराओं पर अमल करते रहे हैं और इतिहास ऐसे तथ्यों से भरा पड़ा है । यह फिल्म धर्मनिरपेक्षता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर बहस को आगे बढ़ाती है ।

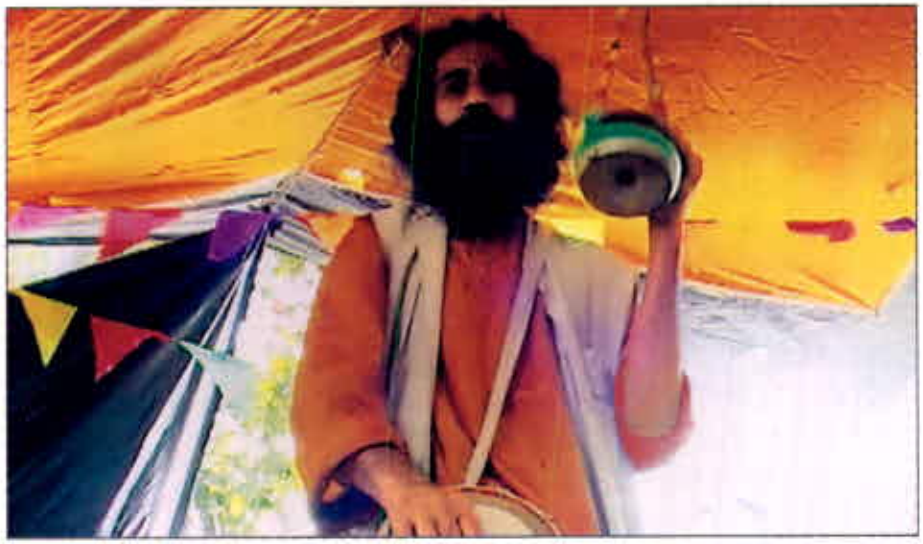

BISHAR BLUES

Bengali/79 min/Video/Colour

Producer and **Director:** Amitabh Chakraborty; **Editor:** Amitabh Chakraborty and Amit Debnath; **Audiographer:** Partha Barman

It is a film on the fakirs of Bengal, examining their music and their deep spirituality as a way of living and reconciling a radical syncretism. Practiced largely by the poor and lower caste Muslims, its history in Bengal is replete with examples of assimilation of religions. The music has strains of Buddhist, Tantric and Vaishnavite notes and practices. The film shows the face of Islam largely unknown to the world.

चिल्ड्रन ऑफ नोमैड्स

हिन्दी/9 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : लियो आर्ट कम्युनिकेशन्स;
निर्देशक : मीनाक्षी और विनय राय

इस फिल्म की प्रमुख पात्र एक छह वर्षीय लड़की श्रुति है । वह देखती है कि उसकी जीवन शैली और बेघर बार बच्चों की जीवन शैली में कितना अधिक अंतर है । यह अंतर कम करना ही अब उसके जीवन का मिशन बन जाता है । वंचित वर्ग के इन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने का एक बहुत ही साधारण उपाय ढूंढ निकालती है ।

CHILDREN OF NOMADS

Hindi/9 min/35 mm/Colour

Producer: Leoart Communications;
Director: Meenakshi and Vinay Rai

A stark contrast between her own and nomadic children's lifestyles observed by a six-year-old Shruti gives her a mission in life. She discovers a simple solution to bring cheer and smiles to the faces of deprived children.

एक आदेश-ए कमाण्ड फ़ार छोटी

हिन्दी/ 34 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता : भारतीय बालचित्र समिति
निर्देशन एवं पटकथा : रमेश आशेर

यह फिल्म पश्चिम राजस्थान की उन दो जातियों - विश्नोई तथा बागड़ी के बारे में है जो आपस में अत्यधिक वैर भाव रखती हैं । विश्नोई खेती करने वाले लोग हैं और पर्यावरण संरक्षण, विशेष रूप से हिरनों का संरक्षण, वे अपना धर्म समझते हैं । इसके विपरीत बागड़ी एक शिकारी जाति है और हिरनों का शिकार उनकी रोजी-रोटी है ।

फिल्म में दिखाया गया है कि एक बारह वर्षीय विश्नोई लड़की गायें चराकर अपना दिन गुजारती है । एक दिन वह एक बागड़ी को देख लेती है जो किसी हिरन का शिकार करने वाला है । पहले तो वह डर जाती है फिर उसकी हिम्मत बंधती है और वह किसी जानवर को बचाना अपना धर्म समझती है । वह बागड़ी शिकारी से झगड़ने लगती है और हिरन को बचा लेती है ।

इसके बाद छोटी और उसके परिवार वालों को महसूस होता है कि विश्नोई और बागड़ी दोनों ही अपनी-अपनी जगह सही है । वस्तुतः धर्म का मूलभाव एक अच्छा इंसान होना है ।

EK AADESH – A COMMAND FOR CHHOTI

Hindi/34 min/35mm/Colour

Producer: Children's Film Society, India;
Direction and Screenplay: Ramesh Asher

Bishnois and Bagarias, two communities from the arid region of Western Rajasthan, are age-old enemies. Bishnois are farmers for whom conservation of environment and deer in particular is religion. On the other hand, Bagarias are hunters for whom the deer is a source of livelihood. One day, Chhoti, a 12-year-old Bishnoi shepherd girl, spots a Bagaria about to shoot a deer, she comes to the animal's rescue by lunging at the hunter. After the rescue Chhoti and her family realise that the battle between the two communities is a battle between two just causes, and the essence of all religions is humanity.

फिलेरियासिस

अंग्रेजी/35 एमएम/10 मिनट/रंगीन

निर्माता - फिल्म प्रभाग; **निर्देशक** : एम एलांगो

इस फिल्म में फिलेरियासिस आमतौर पर जिसे हाथीपांव की बीमारी कहा जाता है, उसके कारणों, रोकथाम और प्रबंधन संबंधी जानकारी दी गई है ।

FILARASIS

English/35 mm/10 min/Colour

Producer : Films Division; **Director :** M Elango

The film deals with causes, prevention and management of the disease, Filarasis, commonly known as Elephantiasis.

गुरु लाइमायुम थम्बालंगौबी देवी

मणिपुरी/25मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता : अरिबम श्याम शर्मा एवं प्रसार भारती (डी डी के, इंफाल) **निर्देशक :** अरिबम श्याम शर्मा

नागमपाल पाओनम लेकाई की गुरु लाइमायुम थम्बालंगौबी देवी शास्त्रीय मणिपुरी नृत्य के कुछेक जीवित महान गुरुओं में से एक हैं । मणिपुरी नृत्य की 'सोलो डांसर' के रूप में उन्होंने भारत और विदेश में अपनी नृत्य कला का प्रदर्शन किया है । शास्त्रीय नृत्य और रंगमंच के क्षेत्र में कई पुरस्कार प्राप्त करने वाली देवी को, पहली मणिपुरी फिल्म में नायिका की भूमिका निभाने का गौरव प्राप्त है । शास्त्रीय मणिपुरी नृत्य के विद्यमान रूपों के आधार पर 'सोलो' नृत्य का सृजन करने और उसकी शुरूआत करने संबंधी प्रयासों और उपलब्धियों के लिए उनका नाम मणिपुरी संस्कृति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे लिखा जाएगा ।

GURU LAIMAYUM THAMBALNGOUBI DEVI

Manipuri/25 min/Video/Colour

Producer: Aribam Syam Sharma and Prasar Bharati (DDK, Imphal); **Director:** Aribam Syam Sharma

Guru Laimayum Thambalngoubi Devi' of Nagamapal Paonam Leikai is one of the few great living gurus of classical Manipuri dance. She has given umpteen solo performances throughout the world. Recipient of many awards in classical dance and theatre, she is also recognized as the first Manipuri film heroine. In fact, her name is etched in the history of Manipuri culture. The icon continues to do what she is best at: teaching and reaching out to the world through dance.

जात्रा जीवन, जीवन यात्रा

अंग्रेजी/50 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता :कैलाश भूयन **निर्देशक** :कपिलास भूयन

यह दूसरी शताब्दी ईसापूर्व की उड़ीसा की एक प्राचीन लोक नाट्यकला पर आधारित फिल्म है । कलाकारों द्वारा यह किसी रंगमंच पर नहीं, बल्कि मुक्ताकाश में प्रदर्शित की जाती है और यह एक जगह से शुरू होकर आगे बढ़ती हुई अंततः उसी स्थल पर खत्म होती है जहां से आरंभ हुई थी । इसलिए इस नाट्यकला को जात्रा नाम दिया गया है ।

यद्यपि गत 130 वर्षों में इस नाट्यकला में काफी सुधार हुआ है, तथापि 1980 के दशक में इस नाट्यकला में काफी धन लगाकर इसे एकदम जीवंत बना दिया गया है । अब यह भारत की दूसरी लोक कलाओं से कहीं बढ़कर है । अब जात्रा एक तरह से उद्योग का रूप ले चुकी है । इसका वार्षिक कारोबार लगभग 1500 मिलियन रूपये है और इसमें निम्न वर्ग के लगभग 20 हजार लोग काम करते हैं । इस तरह जात्रा हजारों ग्रामीण लोगों के रोजी-रोटी का साधन बन चुकी है ।

JATRA JEEVAN JEEVAN YATRA

English/50 min/Video/Colour

Producer: Kailash Bhuyan; **Director:** Kapilas Bhuyan

An ancient form of folk theater of Orissa dating back to 2nd century B.C., is peripatetic in nature and performed in open air. Though the medium was revived during last 130 years, Jatra, unlike other languishing folk mediums in India, sprung back to life in the late 1980s with the infusion of huge capital. Now Jatra has become a mega industry with an annual turnover of nearly 1500 million Indian rupees. It employs 20 thousand rural young, including women, keeping them from migrating to urban slums. Employee conditions might still be less than fair but Jatra as an art form and source of livelihood for rural folk is alive and kicking.

जैविक खेती

हिन्दी/24 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता :एग्रो इंडिया **निर्देशक** :मृणालिनी भोंसले

यह एक शिक्षाप्रद वृत्तचित्र है जिसमें यह दिखाया गया है कि किसानों द्वारा अत्यधिक उवरकों और कीटनाशकों के उपयोग के क्या दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं । साथ ही इसमें जैविक खेती के विविध रूपों और लाभों के बारे में जानकारी दी गयी है । इसमें बताया गया है कि किस तरह गत 38 वर्षों में अर्थात् 1960 से 1998 तक भारत में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग 68 गुना बढ़ा है जब खाद्यान्न उत्पादन में केवल चार प्रतिशत वृद्धि हुई है । यह फिल्म उन किसानों के लिए सबक है जो ऐसे रासायनिक उर्वरकों पर अपना पैसा बर्बाद करते हैं जिनसे उत्पादकता तो कम होने के साथ-साथ फसल की कीटाणु रोधक क्षमता भी कम होती है ।

JAVIK KHETI

Hindi/24 min/Video/Colour

Producer: Agro India; **Director:** Mrinalini Bhosale

The educative documentary targeted at farmers depicts the result of excessive use of chemical fertilizers and pesticides on crops, and the forms and advantages of organic farming. During the 38 years period from 1960 to 1998 the use of chemical fertilizers in India increased by 68 times, while agricultural production only went up four times. The film is an eye-opener for farmers wasting money on chemicals that also reduce crop immunity to pests and diseases.

कल्पवृक्ष

अंग्रेजी/24 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता :माईक पांडे **निर्देशक** :नीना सुब्रमणि

भारत में जड़ी-बूटियों और औषधीय पेड़-पौधों के विकास के साथ-साथ इस फिल्म में यह भी दिखाया गया है कि इन जड़ी बूटियां और पेड़-पौधे को किस तरह जनजातीय समाज अपनी बीमारी में इस्तेमाल करता था । अविकसित देशों की लगभग 80 प्रतिशत जनता अब भी अपने यहां की परंपरागत जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल करती है । लेकिन वर्तमान में जिस गति से इनके इस्तेमाल का प्रचलन बढ़ता जा रहा है उससे कई दूसरी समस्याएं खड़ी हो गयी हैं । हिमालय की कुछ पादप प्रजातियां तो लुप्त होने की कगार पर हैं । हालांकि यह सच है कि हिमालय की लंबी श्रृंखला विश्व में जैव विविधता के मामले में सर्वाधिक संपन्न है ।

KALPAVARIKSHA

English/24 min/Video/colour

Producer: Mike Pandey; **Director:** Nina Subramani

The film traces the evolution of medicinal herbs and plants in India and how they are an integral part of tribal societies' health care regimes. About 80 percent of the developing world still relies on its traditional curative herbs.But as the fad for herbal cures catches on, some Himalayan plant species face the threat of extinction. India is one of the richest bio-diversity spots in the world, especially the long range Himalayas.

लामा डांसेस ऑफ सिक्किम

अंग्रेजी/60 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता :पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र
निर्देशक :मानस भौमिक

यह फिल्म पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम के बौद्ध मुखौटा वाले नृत्यों पर आधारित है । इसमें वहां के तीन प्रमुख नृत्यों, जिन्हें 'चाम्स' कहा जाता है, को दिखाया गया है । ये तीनों नृत्य हैं - पंगल्हाबसोल, गुटोर और गुरु थामर । ये तीनों नृत्य एक तरह की प्रार्थना कहे जा सकते हैं । इनमें यह दिखाया गया है कि किस तरह बौद्ध भिक्षु प्रेतात्माओं की प्रार्थना कर उन्हें बौद्ध धर्म का रक्षक बना देते हैं ।

इसका फिल्मांकन पहाड़ियों पर स्थित बौद्ध मठों के खूबसूरत दृश्यों के साथ बड़े ही नीरव वातावरण में किया गया है । गुरु थामर मुखौटा नृत्य में जो मुखौटा है वह 12 फीट लम्बा और 65 किलो वजनी है ।

LAMA DANCES OF SIKKIM

English/60 min/Video/Colour

Producer: Eastern Zonal Cultural Centre;
Director: Manash Bhowmick

The documentary depicts the essence of Buddhist masked dances from the small Himalayan state of Sikkim in northeastern India. Through three main dances or Chaams called Pang Lhabsol, Gutor and Guru Thamar, the film shows how Buddhist monks pray for vanquishing evil forces and turning them into protectors of the peaceful essence of Buddhism. The public gets to watch these esoteric prayers in the monasteries in the form of dances. Set amidst ethereally beautiful hilltops, the colourful dances have elaborate dress and movement codes. In Guru Thamar, the mask is 12 feet tall and weighs 65 kilograms.

मेरे देश की धरती

हिन्दी/58 मिनट/वीडियो/रंगीन

1970 के दशक की भारत की हरित क्रांति को केन्द्र में रखते हुए इस फिल्म में मौजूदा समय में किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं में अत्यधिक वृद्धि और उससे उत्पन्न राष्ट्रीय संकट पर प्रकाश डाला गया है । इससे भी अधिक चिंताजनक बात उस हरित क्रांति के परिणामों को लेकर है जिसने कीटनाशक दवाईयों और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग अत्यधिक बढ़ा दिया है और जिसके कारण पूरी भोजन श्रृंखला विषाक्त हो गयी है । यह फिल्म दूसरी हरित क्रांति की तैयारी में लगे नियोजनकर्त्ताओं के लिए एक बड़ी चेतावनी है ।

MERE DESH KI DHARTI

Hindi/Video/58 minutes/Colour

Producer: Rajiv Mehrotra, Public Service Broadcasting Trust; **Director:** Sumit Khanna

The film takes a close look at India's Green Revolution of the 1970s and relates it to the present day when farmer suicides in the country have acquired an alarming proportion and present a national crisis. However, even more alarming is the fallout of the Green Revolution during which indiscriminate and rampant use of pesticides and chemical fertilizers almost poisoned the food chain. The film serves as a stiff warning to the planners of the second such revolution.

मिनुक्कू

मलयालम/60 मिनट/35 एम एम/रंगीन

निर्माता: सिनेमैटोग्राफिक, केरल
निर्देशक : एम आर राजन

मिनुक्कू एम.आर. राजन की ऐसी पांचवीं और अद्यतन फिल्म है जिसने उन्हें राष्ट्रीय स्तर की पहचान दी है। उनकी कुछ अन्य उल्लेखनीय फिल्में हैं - टी.पी. गोपालन पर आधारित 'नाटक पथ' और कीझपदम कुमारन नायर पर आधारित 'नोट्टम'। मिनुक्कू कथकली उस्ताद कोटक्कल सिवरामन के जीवन पर आधारित है।

सिवरामन की जन्मस्थली कारालमन्ना में फिल्मायी गयी यह फिल्म कथकली और सिनेमा का अद्भुत मेल है। एक घंटे के इस वृत्त चित्र में एक ऐसे अभिनेता की खूबियों के बारे में बताया गया है जो लिंग भेद से कहीं ऊपर उठ चुका है और जिसने गत पांच दशकों के दौरान कथकली में महिला पात्रों को अजर-अमर बना दिया है।

MINUKKU

Malayalam/60 min/35 mm/Colour

Producer: Cinematographic Kerala;
Director: M R Rajan

Based on Kathakali maestro Kottakkal Sivaraman, shot in Karalmanna, the native place of Sivaraman, Minukku is a rare mix of Kathakali and cinema. The one-hour documentary narrates the virtuosity of an actor who transcends gender barriers; an actor who has immortalised female characters in Kathakali over the past five decades.

नोकपोकलीबा

अंग्रेजी/10 मिनट/35एम एम/रंगीन

निर्माता : भारतीय बाल चित्र समिति
निर्देशन, पटकथा तथा **एनीमेशन** : मेरेन इम्चेन

यह नागालैंड की लोक कथा पर आधारित फिल्म है । इसमें नोकपोकलीबा नाम का एक जादूगर होता है जो एक ऐसे दुष्ट और धोखेबाज व्यापारी से स्थानीय किसानों को मुक्ति दिलाता है जो उन्हें जादू की मदद से ठगता था । नोकपोकलीबा अपने जादू की ताकत से दुष्ट व्यापारी के जादू को विफल कर देता है ।

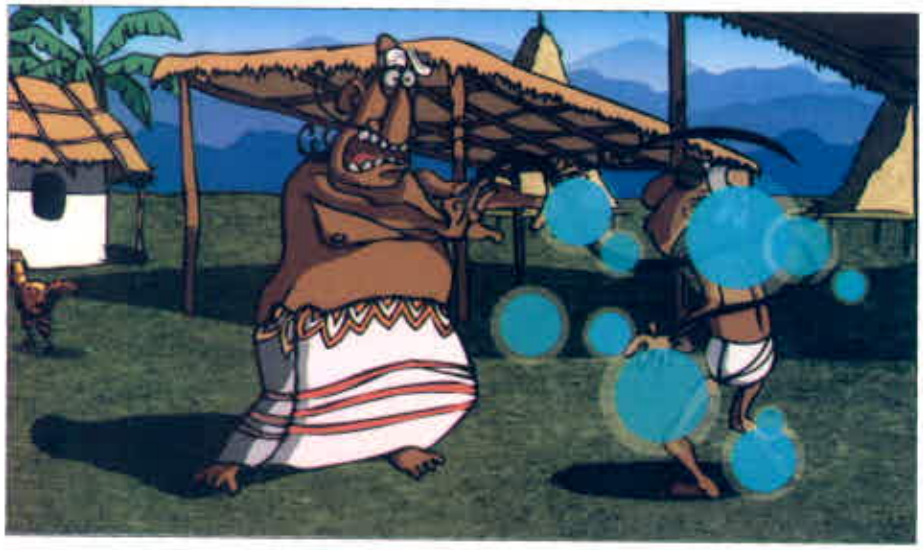

NOKPOKLIBA

English/35 mm/ 10 Min.

Direction, Screenplay and Animation : Meren Imchen; **Producer :** Children's Film Society, India

The film is dedicated to the people of Nagaland. This film is based on a folk tale from Bagaland. It's the story about Nokpokliba, a magician, who brings justice to his people through his magic. There was once an evil merchant who cheated the Naga hill people of their cotton. He would trade his cows in exchange for their cotton. But the cow he used to trade was actually his own son, who was always transformed, by use of magic, when the farmers came to trade. So when the farmers returned home with the cow, it would turn into different animals and run away. They finally go to Nokpokliba for help. He help the farmers get their cows back by countering the merchant's magic with his own.

राग ऑफ रिवर नर्मदा

अंग्रेजी/वीडियो/12 मिनट /रंगीन

निर्देशक : राजेन्द्र जांग्ले;
निर्माता : मध्यप्रदेश माध्यम;
संगीत : उमाकांत और रमाकांत गुंडेचा

आस्था, आशा और सुंदरता की प्रतीक नर्मदा नदी सदा से ही कला और संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मकता का स्रोत रही है । इस फिल्म में नर्मदा नदी के उद्गम स्थल-अमरकंटक से लेकर गंतव्य स्थल अर्थात भरुच तक विविध और दुर्लभ भावावेगों को दर्शाया गया है । इसके विविध भावावेग अर्थात एकदम शांत उद्गम स्थल, चपल और नीचे को बहता जाता प्रवाह, नदी का शांति और क्रोध वाला भावावेग और इसके किनारों पर पनपता जीवन यह सब कुछ इस फिल्म में दिखाया गया है । यह फिल्म ध्रुपद के माध्यम से नर्मदा नदी को एक श्रद्धांजलि है ।

RAGA OF RIVER NARMADA

English/Video/12 min/Colour

Director : Rajendra Janglay; **Producer**: Madhya Pradesh Madhyam; **Music** : Umakant & Ramakant Gundecha

A river of faith, hope and beatury, the Narmada has been a source of creative pursuits in art and culture.The film captures the rare moods of river Narmada from its origin Amarkantak to the final destination Bharuch. Its myriad moods—the silent origin, swift and cascading flows, its calm and anger, and life along its banks are all there in the film. The film is a tribute to the Narmada offered through Dhrupad, the oldest and spiritual form of classical music that originates in sacred syllable Om, the source of creation. *The Raga of River Narmada* is essentially a celebration of this sacred river.

Recently, this film has won Indian Critics Award at 10th Mumbai International Film Festival 2008.

रॉनदेवू विद् टाइम

मराठी/वीडियो/13 मिनट /रंगीन

निर्देशक : राजेन्द्र जांग्ले,
निर्माता : मध्यप्रदेश माध्यम,
छायांकन : राजेन्द्र जांग्ले, संजयविजयवर्गीय

मध्यप्रदेश मानवता के आगे बढ़ने का साक्षी रहा है । इस धरती पर इतिहास धारा की लहरों ने अपने अनगिनत निशान छोड़े हैं । मानवता संचेतना की कुछ झलक अभी भी भीमबेटका की पूर्व ऐतिहासिक गुफाओं में देखने को मिलती हैं । खजुराहों में पत्थर की दीवारों पर बनी मूर्तियां भारतीय सोच की ऐसी अभिव्यक्ति हैं जो लोगों के हतप्रभ कर देती हैं । पर ऐसा नहीं कि मध्यप्रदेश केवल विगत की यादों को ही समेटे हुए है । यहां के जनजातीय जीवन की सशक्त और जीवंत उपस्थिति और तरह-तरह की लोक परंपराएं मध्यप्रदेश की समृद्धता और विविधता का अनुभव कराती है । प्रदेश की भौगोलिक स्थिति में भी यही विविधता दिखाई देती है । इसके घने आच्छादित वन, कलकल ध्वनि के साथ बहती नदियां और शानदार पठार हमें मंत्रमुग्ध कर देते हैं । इस फिल्म में मध्य प्रदेश के इतिहास, संस्कृति, हस्तकला और प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन किया गया है ।

RENDEZVOUS WITH TIME

Marathi/Video/13 min/Colour

Director : Rajendra Janglay; **Producer :** Madhya Pradesh Madhyam; **Cinematography** : Rajendra Janglay and Sanjay Vijavergiya

Madhya Pradesh has been witness to the march of history of humanity. Tides of historical currents have left innumerable marks on the land. First glimmers of human consciousness still throb in the pre-historic caves of Bhimbetka and the epitome of Indian thought expressed in stones of Khajuraho takes one's breath away. But this is not a land only of frozen memories. The vibrant and living presence of tribal life and colorful folk tradition give Madhya Pradesh a very different feel. Diversity is the defining principle of being here, which is also reflected in its geography. Deep woods cast a spell on the visitor. So can the murmuring rivers and sprawling plateaus. The sounds, colors and smells of the state are vivid and wonderful. This film depicts the history, culture, craft and the rich flora and fauna of Madhya Pradesh.

स्पेशल चिल्ड्रेन

अंग्रेजी/20 मिनट /35 एमएम/रंगीन

निर्माता : कुलदीप सिन्हा, फिल्म प्रभाग

निर्देशक : सुरेश मेनन

इस फिल्म में विकलांग बच्चों को प्यार और प्रोत्साहन देने, न कि उनके प्रति दयाभाव दर्शाने संबंधी आवश्यकता पर बल दिया गया है । फिल्म का यही संदेश है कि हम सब अपनी जिम्मेदारी समझे कि इन बच्चों की देखभाल के लिए हमें बदलाव लाने पड़ेंगे ।

SPECIAL CHILDREN

English/20 min/35mm/Colour

Director: Suresh Menon; **Producer:** Kuldip Sinha, Films Division

The film conveys a message about the need to relate to special children with love and encouragement, not pity and self-conscious help. The onus, says the film, is on all of us to become special people in order to reach out to special children.